www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार ...

पत्र नहीं; मित्र

RNI No. - MPHIN/2018/76121

देशबन्धु

वर्ष – 7 I अंक – 317 I नर्मदापुरम, शनिवार 22 फरवरी 2025 I पृष्ठ–8 I मूल्य – 2.00 रुपए

नपा ने दिखाया किराया बढ़ाने का साहस, व्यापारियों का तीखा विरोध आया सामने पृष्ठ 2

- केरल में जीवन शिक्षा की पहल
- ट्रम्प के सामने घुटने न टेके भारत

पृष्ठ 4

- तेज आवाज में देर रात तक बज रहे 3 डीजे पुलिस ने जब्त किए

पृष्ठ 6

महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों की नीलामी करना सरकार का लक्ष्य : दुबे पृष्ठ 8

मेधावी विद्यार्थियों को स्कूटी के बाद मिले लैपटॉप, मुख्यमंत्री बोले-

विद्यार्थियों को लैपटॉप से उज्जवल भविष्य की संभावनाएं सशक्त होंगी

- प्रत्येक विद्यार्थी 25-25 हजार की राशि अंतरित की
- 89 हजार से अधिक विद्यार्थियों को सिंगल क्लिक से भेजे 224 करोड़

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जैसे परिवार में सदस्यों का सभी संसाधनों पर अधिकार होता है, उसी प्रकार राज्य सरकार के सभी संसाधनों पर समाज के कमजोर से कमजोर तबके का अधिकार है। मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप प्रदान करने से उनकी प्रतिभा निखरेगी, जिससे प्रदेश के उज्जवल भविष्य की संभावनाएं अधिक सशक्त होंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश के 89 हजार 710 मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप लेने के लिए 224 करोड़ की राशि अंतरित करने के लिए प्रशासन अकादमी में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने सिंगल क्लिक से विद्यार्थियों के खातों में राशि अंतरित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विद्यार्थियों से कहा कि उन्हें उपलब्ध कराई जा रही 25-25 हजार रूपए राशि का उपयोग लैपटॉप क्रय में ही किया जाए। विद्यार्थी अपनी पसंद के अनुसार, अपनी इच्छानुसार स्थान से लैपटॉप लें और लैपटॉप खरीदने की रसीद अपनी शाला में आवश्यक रूप से जमा कराएं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पौध भेंट कर उनका स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विद्यार्थियों से संवाद किया तथा अपने उद्बोधन के माध्यम से उन्हें प्रोत्साहित भी किया। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री उदय प्रताप सिंह, खेल एवं युवा कल्याण मंत्रीविश्वास सारंग, भोपाल के प्रभारी तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री चैतन्य कुार काश्यप, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा गौर, भोपाल महापौर श्रीमती मालती राय, विधायक रामेश्वर शर्मा, रवीन्द्र यती सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारी, विद्यार्थी और अभिभावक उपस्थित थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी को समान रूप से सभी व्यवस्थाओं के लिए अधिकार देकर और प्रतिभाओं को निखार कर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जाता था।

भोपाल समिट : जर्मनी भी करेगा सहभागिता

कॉन्सुल जनरल फेबिग सहित व्यापार प्रतिनिधि शामिल होंगे

भोपाल, देशबन्धु। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट भोपाल में जर्मनी पार्टनर कंट्री के रूप में सहभागिता करेगा। 24 एवं 25 फरवरी 2025 को भोपाल में आयोजित समिट में कॉन्सुल जनरल श्री अचिम फेबिग सहित इंडो-जर्मन चैंबर ऑफ कॉमर्स और जर्मन इंडियन इनोवेशन कॉरिडोर के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने म्यूनिख, जर्मनी के दौरे में वहाँ के सीआईआई एवं जर्मन इंडियन इनोवेशन कॉरिडोर-सेंट्रल इंडिया के समन्वय से जर्मन निवेशकों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित किया था। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में जर्मन पैवेलियन स्थापित किया जाएगा। इसमें इंडो-जर्मन चैंबर ऑफ कॉमर्स के तत्वावधान में भारत-जर्मनी सहयोग के अवसरों का प्रदर्शन किया जाएगा। इसमें मध्यप्रदेश सरकार और इंडो-जर्मन चैंबर ऑफ कॉमर्स एवं जीआईआईसी-सीआई के बीच एक एमओयू (समझौता ज्ञापन) हस्ताक्षरित किया जाएगा। यह समझौता मध्यप्रदेश में सतत और दीर्घकालिक निवेश को बढ़ावा देने के लिए होगा, जिसमें जर्मन कंपनियाँ विभिन्न क्षेत्रों में विकास कार्यों में भागीदारी करेंगी।

मध्यप्रदेश में रासायनिक, फार्मा और हार्डवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में पहले से कई जर्मन कंपनियाँ कार्यरत हैं। अब सूचना प्रौद्योगिकी, ग्लोबल स्किल डेवलपमेंट, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, डेयरी फार्मिंग, फूड प्रोसेसिंग, साइंस एंड टेक्नोलॉजी, डीप टेक्नोलॉजी और अक्षय ऊर्जा के क्षेत्रों में भी जर्मन कंपनियाँ निवेश करने की इच्छुक हैं। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में जर्मन पैवेलियन के माध्यम से ग्रीन एनर्जी, शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और कौशल विकास की सामाजिक-आर्थिक परियोजनाओं को भी प्रदर्शित किया जाएगा। ये परियोजनाएँ जर्मन संगठन जीआईजेड द्वारा वित्त पोषित हैं और मध्यप्रदेश में एनआईसीटी इंदौर, महिला एवं बाल विकास विभाग और कृषि विभाग के सहयोग से क्रियान्वित की जा रही हैं।

एकनाथ शिंदे ने दिखाए तेवर, कहा-

मुझे हल्के में मत लेना

- 2022 में हल्के में लिया था, मैंने सरकार बदल दी
- पहले भी मुझे धमकियां मिलीं लेकिन मैं डरा नहीं

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार को कहा, 'मुझे हल्के में मत लीजिए, जिन्होंने मुझे हल्के में लिया है, उनसे मैं पहले ही कह चुका हूं कि मैं सामान्य पार्टी कार्यकर्ता हूं, लेकिन मैं बाला साहेब का कार्यकर्ता हूं और सभी को मेरी इस बात को समझ लेना चाहिए।' शिंदे का यह बयान उनको जान से मारने की धमकी पर आया है। 20 फरवरी को मेल के जरिए शिंदे की कार में बम विस्फोट करने की धमकी दी गई।

मंत्रालय और जेजे मार्ग पुलिस थाने को भी धमकी भरा मेल भेजा गया था। मुंबई पुलिस ने धमकी के इस मामले में बुलढाणा से दो लोगों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के नाम मंगेश अच्युतराव वायल (35) और अभय गजानन शिंगणे (22) हैं। दोनों बुलढाणा के देउलगांव माही गांव के रहने वाले हैं। उन्होंने कहा- जब आपने (विपक्ष) 2022 में हल्के में लिया, तो घोड़ा पलट गया और मैंने सरकार बदल दी। हम आम लोगों की इच्छाओं की सरकार लाए। विधानसभा में अपने पहले भाषण में मैंने देवेंद्र फडणवीस से कहा था कि 200 से ज्यादा सीटें मिलेंगी और हमें 232 सीटें मिलीं। इसलिए मुझे हल्के में मत लीजिए, जो लोग इस संकेत को समझना चाहते हैं, वे इसे समझ लें, और मैं अपना काम करता रहूंगा।

सार-समाचार

किसान सम्मान निधि का सोमवार को वितरण करेंगे मोदी : शिवराज

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को कहा कि बिहार के भागलपुर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को किसान सम्मान निधि की 19 वीं किस्त जारी करके 22 हजार करोड़ रुपए की राशि का वितरण करेंगे। श्री चौहान ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुए बताया कि भागलपुर में 24 फरवरी को देशव्यापी किसान सम्मान समारोह आयोजित होगा। प्रधानमंत्री मुख्य अतिथि होंगे।

सोनिया गांधी को अस्पताल से मिली छुट्टी

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष तथा पार्टी की राज्यसभा सांसद सोनिया गांधी को एक दिन तक डॉक्टरों की देख रेख में रखने के बाद शुक्रवार को यहां गंगाराम अस्पताल से छुट्टी मिल गई। श्रीमती गांधी को गुरुवार सुबह पेट दर्द के बाद यहां सर गंगा राम अस्पताल से नियमित चेकिंग के ले जाया गया जहां पेट से जुड़ी समस्या के कारण उन्हें भर्ती कराया गया। पार्टी सूत्रों के सनुसार श्रीमती गांधी की कल सुबह नियमित जांच की गई, लेकिन पेट में मामूली संक्रमण होने के कारण डॉक्टरों ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कर दिया और आज सुबह छुट्टी दे दी गई।

संभल हिंसा के आरोपियों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल

संभल, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के संभल में 24 नवंबर 2024 को शाही जामा मस्जिद में सर्वे के दौरान भड़की हिंसा के मामले में पुलिस ने चार्जशीट दाखिल कर दी है। इसमें आरोपियों के खिलाफ पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों पर जानलेवा हमले के आरोप लगाए गए हैं।

बिना नीट यूजी पास किए विदेश से नहीं कर सकते एमबीबीएस : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, देशबन्धु। बिना नीट यूजी परीक्षा पास किए स्टूडेंट्स विदेश से एमबीबीएस की पढ़ाई नहीं कर सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने विदेश से मेडिकल कोर्स करने के लिए नीट यूजी योग्यता की वैधता बरकरार रखी है। अब विदेश से मेडिकल की पढ़ाई करने के लिए इच्छुक स्टूडेंट्स को विदेशी मेडिकल संस्थानों में एडमिशन लेने के लिए नीट यूजी परीक्षा पास करनी होगी।

सुप्रीम कोर्ट ने मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया के उस नियम को बरकरार रखा, जिसके तहत विदेशी संस्थानों में मेडिकल यूजी पाठ्यक्रम करने

योग्यता नियमों को पूरा करना अनिवार्य

के लिए छात्रों के लिए राष्ट्रीय पात्रता-सह-प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य कर दिया गया है। 2018 में पेश किया गया यह नियम यह सुनिश्चित करता है कि विदेश में चिकित्सा की पढ़ाई कर रहे भारतीय छात्र को भारत में चिकित्सा का अभ्यास करने के लिए आवश्यक मानकों को अनिवार्य रूप से पूरा करना होगा। कोर्ट ने फैसले में कहा कि यह नियम निष्पक्ष, पारदर्शी है और किसी भी वैधानिक प्रावधान के साथ टकराव नहीं करता है। नीट यूजी पास करने की आवश्यकता स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियम, 1997 में निर्धारित योग्यता नियमों को पूरा करने के अतिरिक्त है। यह फैसला सुप्रीम कोर्ट में इस संबंध में दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए जस्टिस बी आर गवई और के विनोद चंद्रन की पीठ ने दिए। पीठ ने कहा कि हमें नियमों में हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं दिखता। सर्वोच्च न्यायालय ने एक बार के उपाय के रूप में छूट देने से भी इनकार कर दिया।

उदित राज को फोन पर मिली सबक सिखाने की धमकी

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता और पूर्व सांसद उदित राज को फोन पर लगातार धमकियां मिल रही हैं। पिछले तीन-चार दिनों में बीस से अधिक फोन कर उन्हें अपशब्द कहा जा रहा है और उन्हें सबक सिखाने की धमकी दी जा रही है। उदित राज का आरोप है कि उन्हें यह धमकी बहुजन समाज पार्टी नेता मायावती और आकाश के उकसाने पर उनकी पार्टी के समर्थकों के द्वारा दी जा रही हैं। उन्होंने इसके बाबत दिल्ली में नॉर्थ एवेन्यू थाने को सूचित भी किया है।

दरअसल, यह पूरा प्रकरण 16 फरवरी को उदित राज के द्वारा लखनऊ में एक प्रेस कांफ्रेंस करने के बाद शुरु हुआ है। इस प्रेस कांफ्रेंस में एक विशेष संदर्भ में उन्होंने मायावती को बहुजन समाज आंदोलन का गला घोंटने वाला करार दिया और एक प्रतीक के तौर पर बहुजन समर्थकों से मायावती का साथ छोड़ने की बात कही। लेकिन आरोप है कि उनके द्वारा कही गई बातों को गलत संदर्भ में पेश किया गया जिससे बसपा समर्थक उनसे नाराज हो गए और अब उन्हें धमकी दे रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया है कि बसपा ने उनका व्यक्तिगत मोबाइल नंबर सोशल मीडिया पर जारी कर दिया, जिससे लोग उन्हें फोन कर उनसे अभद्र भाषा में बात कर रहे हैं, लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए कि यह लड़ाई किसी से व्यक्तिगत नहीं है। यह बहुजन विचारधारा को आगे बढ़ाने की बात है और इसके लिए सबको साथ आकर काम करना चाहिए।

भारत-पाकिस्तान के बीच हुई फ्लैग मीटिंग

संघर्ष विराम समझौते पर कायम रहने पर बनी सहमति

जम्मू, एजेंसी। भारत और पाकिस्तान ने हाल ही में नियंत्रण रेखा पर हुई गोलीबारी की घटनाओं पर चर्चा के लिए जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर शुक्रवार को फ्लैग मीटिंग की।

ब्रिगेडियर स्तर की फ्लैग मीटिंग जिले के चकन दा बाग स्थित नियंत्रण रेखा क्रॉसिंग प्वाइंट पर हुई। अधिकारियों के मुताबिक एलओसी पर हाल में हुई गोलीबारी और एक आईईडी विस्फोट की घटनाओं के मद्देनजर तनाव कम करने के लिए फ्लैग मीटिंग आयोजित की गई थी। आईईडी विस्फोट में एक कैप्टन समेत दो जवानों की मौत हुई थी। अधिकारियों ने बताया, दोनों पक्षों ने माना कि सीमाओं पर शांति और सौहार्द बनाए रखना जरूरी है। बैठक करीब 75 मिनट तक चली और सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई। बैठक के दौरान दोनों पक्षों ने सीमाओं पर शांति के व्यापक हित में संघर्ष विराम समझौते का सम्मान करने पर सहमति जताई। भारत और पाकिस्तान की सेनाओं ने 2021 में संघर्ष विराम की घोषणा की थी। इस संघर्ष विराम समझौते के कारण, नियंत्रण रेखा पर तनाव काफी कम हद तक कम हो गया। हालांकि पिछले दिनों कुछ चिंताजनक घटनाएं हुईं। 11 फरवरी को नियंत्रण रेखा के अखनूर सेक्टर में दो भारतीय सेना के जवानों की शहादत के अलावा पुंछ और राजौरी जिलों में नियंत्रण रेखा के पार पाकिस्तान की ओर से की गई गोलीबारी में दो अन्य जवान घायल हो गए थे।

दिल्ली विधानसभा का सत्र 24 से

नई दिल्ली, देशबन्धु। दिल्ली विधानसभा का पहला सत्र सोमवार से शुरू होगा जिसमें विधायकों शपथ के साथ ही कैग की रिपोर्ट को भी सदन पेश होने की संभावना है।

जानकारी के अनुसार दिल्ली सरकार ने 24 फरवरी से विधानसभा सत्र बुलाया है। यह सत्र तीन दिनों के लिए 24, 25 और 27 फरवरी का होगा । उल्लेखनीय है कि कैबिनेट की पहली बैठक में सरकार ने एक तरफ आयुष्मान योजना को दिल्ली में लागू करने का निर्णय लिया है तो दूसरी तरफ कैग की लंबित पड़ी 14 रिपोर्ट को भी विधानसभा की पहली बैठक में ही पेश करने की बात कही है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कल कहा था, आयुष्मान योजना को हमने न सिर्फ दिल्ली में लागू करने का निर्णय लिया है बल्कि इसके खिलाफ पिछली सरकार ने अदालत में जो याचिकाएं दाखिल की थीं, उन्हें वापस लेने के लिए भी अपनी तरफ से कार्रवाई शुरू कर दी है, ताकि किसी भी प्रकार की अड़चन ना आए।

वाराणसी और कच्छ में सड़क दुर्घटनाएं

11 लोगों की मौत

वाराणसी/कच्छ, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के वाराणसी और गुजरात के कच्छ में हुई सड़क दुर्घटनाओं में 11 लोगों की मौत हो गई। वाराणसी मिर्जामुराद हाईवे पर शुक्रवार सुबह हुए एक सड़क हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई। वहीं कच्छ में बस और ट्रक की टक्कर में 6 लोगों की जान चली गई। वाराणसी के अतिरिक्त आयुक्त एस. चन्नप्पा ने बताया कि नौ लोग घायल हैं, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

एस. चन्नप्पा ने मीडिया को बताया कि एक गाड़ी में 15 लोग सवार थे, जिसकी ट्रक से भीषण टक्कर हो गई। इस हादसे में पांच लोगों की मौत हुई है और नौ अन्य घायल हुए हैं। उन्होंने कहा, सभी श्रद्धालु कर्नाटक से आए थे। इस हादसे की जानकारी उनके परिवार वालों को दे दी गई है। साथ ही सभी घायलों का इलाज चल रहा है। जानकारी के अनुसार, क्रूजर जीप में सवार होकर श्रद्धालु प्रयागराज महाकुंभ जा रहे थे। इसी दौरान जीप हाईवे पर खड़े ट्रक से टकरा गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि जीप के परखच्चे उड़ गए। हादसे की जानकारी मिलने के बाद पुलिस की टीम और अधिकारी मौके पर पहुंचे। पुलिस के अनुसार, जीप की रफ्तार काफी तेज थी। ऐसी संभावना है कि जीप के चालक को झपकी आ गई होगी, जिसकी वजह से ट्रक से जीप टकरा गई। हादसे के बाद चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। उन्होंने पुलिस के साथ श्रद्धालुओं को जीप से निकालने की कोशिश की, लेकिन वे असफल रहे। इसके बाद, क्रेन की मदद से ट्रक और जीप को अलग किया गया।

महाकुंभ में स्नान करती महिलाओं का वीडियो बनाने वाले 3 गिरफ्तार

लातूर/प्रयागराज, एजेंसी। महाकुंभ में स्नान कर रही महिलाओं के वीडियो कथित तौर पर रिकॉर्ड किए जाने और डार्क वेब पर बेचे जाने के मामले में पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। बड़ा कदम उठाते हुए पुलिस ने उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र से तीन लोगों को पकड़ा है। दो आरोपियों को महाराष्ट्र के लातूर से गिरफ्तार किया गया, जबकि तीसरे को यूपी से गिरफ्तार किया गया। साथ ही, मामले में अंतरराष्ट्रीय हैकर्स से संबंध भी सामने आए हैं। गुजरात पुलिस के अनुसार जिले का संदिग्ध रोमानिया और अटलांटा में स्थित विदेशी हैकर्स के संपर्क में था। उसकी पहचान प्रणव तेली के रूप में हुई है।

कांग्रेस ने किया बड़ा दावा

आरएसएस-भाजपा को विदेशी एजेंसियों से मिलती है मदद

कांग्रेस यूएसएड फंडिंग पर श्वेतपत्र की कर चुकी मांग

नई दिल्ली, देशबन्धु। कांग्रेस पार्टी ने शुक्रवार को दावा किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) देश में लोकतंत्र को अस्थिर करने और संवैधानिक संस्थाओं को ध्वस्त करने के लिए विदेशी एजेंसियों से गुप्त सहायता ले रहे हैं और इसके सबूत उसके पास हैं।

पार्टी ने कहा है कि मोदी सरकार अमेरिका की सरकारी एजेंसी यूएसएड द्वारा भारत के चुनावों को प्रभावित करने के लिए धन देने के मामले को लेकर इस समय जो प्रचार कर रही है, वह वास्तव में असली मुद्दों को भटकाने की उसकी कोशिश है, क्योंकि खुद सत्ता पक्ष से जुड़े लोग प्रदेश की एजेंसियों से सहायता लेते रहे हैं।

कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने यहां पार्टी मुख्यालय पर संवाददाता सम्मेलन में कहा, कांग्रेस पहले ही भारत में यूएसएड फंडिंग पर श्वेतपत्र की मांग कर चुकी है, यह स्पष्ट कर दें कि हम वैश्विक भागीदारी विकास एजेंसियों, यूएसएड जैसी सहायता तंत्रों को बेईमान नहीं मानते। श्री खेड़ा ने कहा कि राष्ट्रपति ट्रम्प ने वहां उद्यमी एलन मस्क के नेतृत्व में गठित प्रशासनिक दक्षता विभाग (डीओईजी) की सिफारिश पर यूएसएड द्वारा भारत में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के नाम पर दी जाने वाली 2.1 करोड़ डॉलर (करीब 170 करोड़ रुपये) की सहायता रद्द कर दी है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने ही सबसे पहले 'डीप स्टेट' की कहानी शुरू की और यूएसएड को बदनाम करना शुरू किया था।

कांग्रेस प्रवक्ता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पिछली अमेरिका यात्रा का जिक्र करते हुये कहा कि जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने यहां आयातित सामानों पर 'जवाबी शुल्क' लगाने और ब्रिक्स समूह को खत्म करने की बात कर रहे थे तो श्री मोदी मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने कहा, इस तरह हमारे प्रधानमंत्री अमेरिकी राष्ट्रपति की धमकी सुनते रहे और चुपचाप स्वदेश वापस आ गए और अब मोदी सरकार कह रही है कि उसे अस्थिर करने के लिये अमेरिका से धन लिया गया है।

> मोदी सरकार यूएसएड द्वारा भारत के चुनावों को प्रभावित करने के लिए धन देने के मामले को लेकर इस समय जो प्रचार कर रही है, वह वास्तव में असली मुद्दों को भटकाने की उसकी कोशिश है : **पवन खेड़ा**, कांग्रेस प्रवक्ता

कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि एक हफ्ते से यह कहानी चलायी जा रही है कि यूएसएड ने मोदी सरकार को अस्थिर करने के लिए यह धन दिया था। उन्होंने इस तरह प्रचार को शर्मनाक बताते हुऐ सवाल किया कि अमेरिका से धन 2012 में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के कार्यकाल में आया था, तो 2014 के चुनाव में भाजपा क्या उसी धन से जीती थी? उन्होंने कहा, हम यूएसएड या फंडिंग एजेंसी के खिलाफ नहीं हैं। देश में फंडिंग के लिए कानून हैं जिनके तहत भाजपा से जुड़े एनजीओ भी फंड लेते हैं लेकिन जानबूझकर सिर्फ कांग्रेस का नाम लेना गलत है। कांग्रेस प्रवक्ता ने कहा कि जब श्रीमती स्मृति ईरानी (भाजपा नेता) यूएसएड की ब्रांड एंबेसडर थीं और सिलेंडर लेकर सड़कों पर प्रदर्शन करती थीं तो क्या वह काम यूएसएड करवा रहा था। उन्होंने आरोप लगाया कि अमेरिकी संगठन फोर्ड फाउंडेशन के अनुदान से लाभान्वित संगठनों में आरएसएस भी शामिल था।

कांग्रेस का अपने दुष्कर्मों पर पर्दा डालने का प्रयास

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने तथाकथित फैक्ट चेकरों और कांग्रेस द्वारा अमेरिका के यूएसएड एड को भारत के बजाय बांग्लादेश भेजे जाने का प्रचार किए जाने की निंदा करते हुए शुक्रवार को कहा कि कांग्रेस अपने दुष्कर्मों पर पर्दा डालने की कोशिश कर रही है। भाजपा के प्रवक्ता गौरव भाटिया ने यहां पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कांग्रेस और संसद में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के देश विरोधी बयानों और कार्यों को सबूतों के साथ पेश करते हुए प्रश्न उठाए।

चुनाव फंडिंग पर बोला विदेश मंत्रालय

यूएसएड वाली बात बहुत परेशान करने वाली

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में चुनावों के लिए अमेरिकी एजेंसी यूएसएड की फंडिंग का मामला गंभीर मोड़ ले रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दावे के बाद अब भारतीय विदेश मंत्रालय ने कहा है कि इसकी जांच की जाएगी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्त रणधीर जायसवाल ने इसे बहुत चिंताजनक बताते हुए कहा कि यूएसऐड के साथ जिन मंत्रालयों ने काम किया है, वो सभी इस मामले की पड़ताल कर रहे हैं। विदेश मंत्रालय की यह प्रतिक्रिया अमेरिकी राष्ट्रपति के इस दावे पर आई है कि बाइडेन प्रशासन ने भारत के चुनावों में दखल देकर किसी और की सरकार बनवाने की कोशिश की थी। ट्रंप ने एक कार्यक्रम में कहा, यह बात भारत सरकार को बतानी होगी।

भारत-चीन संबंधों में अच्छी खासी प्रगति : जयशंकर

नई दिल्ली, एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने जोहान्सबर्ग में चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ मुलाकात की और कहा कि दोनों देशों के बीच राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और विदेश सचिव स्तर पर हुई वार्ता से द्विपक्षीय संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। विदेश मंत्री ने जोहान्सबर्ग में जी 20 विदेश मंत्रियों की बैठक में वांग यी की मौजूदगी में अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि मौजूदा बैठक और अन्य बैठकों ने हमारे संबंधों के कठिन दौर में भी हमें बातचीत का अवसर प्रदान किया है।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

मुरम का अवैध परिवहन करते ट्रैक्टर ट्राली जब्त

इटारसी, देशबन्धु। पथरोटा थाना क्षेत्र में मुरम के अवैध खनन की सूचना मिलने पर एसडीएम टी प्रतीक राव ने छापामार कार्रवाई कर मौके से एक ट्रैक्टर ट्राली जब्त की। पथरोटा थाना क्षेत्र आने वाले नागपुर कलॉ निवासी एक व्यक्ति अपने रसूख के बल पर नियमों को ताक में रखकर मुरम का अवैध उत्खनन कर रहा था। लम्बे समय से चल रहे मुरम के अवैध कारोबार की सूचना मिलने पर एसडीएम टी प्रतीक राव ने दलबल के साथ छापामार कार्रवाई कर मौके से एक ट्रैक्टर ट्राली जब्त की। मामले में खनिज विभाग को सूचना दे दी गई है। ज्ञात रहे कि उक्त व्यक्ति लम्बे समय से मुरम का अवैध खनन कर सप्लाई कर रहा था।

एसडीएम ने टोचन प्रतियोगिता पर लगायी रोक

इटारसी, देशबन्धु। ग्रामीण क्षेत्रों में चल रही टोचन प्रतियोगिता से होने वाले नुकसान को देखते हुए एसडीएम ने आदेश जारी कर इस प्रकार की प्रतियोगिताओं पर पूर्णत: रोक लगा दी।

ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े स्तर पर टोचन प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा था। जिसमें दो ट्रैक्टरों में विपरीत दिशा में रस्सी बांधकर उन्हें खींचा जाता है। गत दिनों इस प्रकार की प्रतियोगिता घाटली गांव में आयोजित की गई थी। इस प्रतियोगिता से हादसे का खतरा बना रहता हैं। जिसे लेकर भारतीय किसान संघ के रजत दुबे ने एसडीएम को ज्ञापन देकर इस प्रकार की प्रतियोगिता पर रोक लगाने की मांग की थी। शुक्रवार को एसडीम टी प्रतीक राव ने आदेश जारी कर अनुभाग क्षेत्र के सभी ग्रामों को शहरी क्षेत्रों में टोचन प्रतियोगिता पर रोक लगाई है। मामले में एसडीम ने बताया कि अगर कोई प्रतियोगिता का आयोजन करता हे तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

ट्रक ने मारी टक्कर, बाईक सवार घायल

पिपरिया, देशबन्धु। नगर के मंगलवारा ओव्हर ब्रिज के पास एक धान से भरे ट्रक ने बाईक सवार को टक्कर मार दी। बाईक पिछले पहियों की चपेट में आ गई। जिससे बाईक सवार राकेश पिता ओमप्रकाश 29 वर्ष घायल हो गया। जिसे अस्पताल उपचार के लिए भेज गया। जहां से घायल को जिला अस्पताल रेफर किया गया। पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ कार्यवाही की है।

मप्र शिक्षक संघ के चुनाव कल

इटारसी, देशबन्धु। मप्र शिक्षक संघ जिला इकाई का निर्वाचन 23 फरवरी को होगा। शासकीय एसएनजी उमा विद्यालय नर्मदापुरम में संपन्न होगा। मप्र शिक्षक संघ के निर्वाचन संपन्न कराने के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी दिलीप गीते (बैतूल) एवं जिला पर्यवेक्षक केके गौर (भोपाल) की उपस्थिति में निर्वाचन होगा। मप्र शिक्षक संघ जिला इकाई के सभी पदों का निर्वाचन जिसमें अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष एक-एक पदों पर, उपाध्यक्ष एवं सह सचिव के 6 -6 पदों पर एवं शेष 10 पदों पर कार्यकारिणी का निर्वाचन होना है, जिला कार्यकारिणी में कुल 25 पद होंगे। जिला संयोजक संजय गौर एवं जिला सहसंयोजक कोमल सिंह कुर्मी ने बताया कि शिक्षक संघ को चाहने वाले सभी संरक्षक, नगर ब्लाक तहसील की सभी कार्यकारिणी के मतदाता शामिल होंगे।

खटामा पुलिया के पास जंगली जानवर ने किया बैल का शिकार

इटारसी, देशबन्धु। तिलक सिंदूर रोड के पास खटामा पुलिया के पास बीती रात एक जंगली जानवर ने बैल का शिकार किया है। वन सुरक्षा समिति खटमा के अध्यक्ष विनोद वारीबा ने बताया कि यहां तेंदुआ या बाघ जैसे जंगली जानवर का मूवमेंट है। कुछ दिनों बाद तिलक सिंदूर में मेला लगने वाला है, ऐसे में

श्रद्धालुओं को सतर्कता रखना होगा। बैल के शिकार की सूचना मिलने पर वन सुरक्षा समिति खटामा तिलक सिंदूर क्षेत्र अध्यक्ष विनोद वारिवा ने बताया बैल की मौके पर मौत हो गई। वीट गार्ड विनोद यादव, सरपंच डोरीलाल लाल चीचाम के साथ वे भी मौके पर पहुंचे थे। वन विभाग ने पंचनामा तैयार किया है। एसडीओ मानसिंह मरावी ने बताया बाघ को कीरतपुर वन क्षेत्र में देखा गया है। ग्रामवासियों से सावधानी रखना होगा, रात के समय कोई भी व्यक्ति जंगल में ना घूमे, गांव कोटवार से मुनानी करायी जाए, ताकि लोग सुरक्षित रह सकें।

सिवनी मालवा में युवा संगम रोजगार एवं स्वरोजगार मेला 5 को

नर्मदापुरम, देशबन्धु। मध्य प्रदेश शासन के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग, तकनीकी शिक्षा, कौशल विकास विभाग एवं रोजगार विभाग के निर्देशानुसार नर्मदापुरम जिले में युवा संगम रोजगार एवं स्वरोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। यह मेला 5 मार्च 2025 को शासकीय कुसुम स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिवनी मालवा में आयोजित होगा। इस आयोजन का संपूर्ण प्रभार अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) सिवनी मालवा श्रीमती सरोज परिहार को सौंपा गया है।

नपा ने दिखाया किराया बढ़ाने का साहस, व्यापारियों का तीखा विरोध आया सामने

इटारसी, देशबन्धु। नगरपालिका का साधारण व्यापक सम्मेलन 27 फरवरी को होगा। इसमें जहां शहर को भिक्षावृत्ति से मुक्त बनाने और भिक्षावृत्ति करने वालों के पुनर्वास और उत्थान का प्रस्ताव है तो वहीं नगर पालिका की स्वामित्व की दुकानों के वर्ष 2025-26 से किराया वृद्धि का प्रस्ताव भी है। ऐसे में व्यापारियों ने दुकान किराया वृद्धि का विरोध प्रारंभ कर दिया है। व्यापारियों के समर्थन में कांग्रेस भी आगे आयी है।

कांग्रेस प्रवक्ता अनिल रैकवार के अनुसार किराए जिला कांग्रेस कमेटी का मानना है कि किराया वृद्धि का यह प्रस्ताव जन विरोधी है। कांग्रेस जिलाध्यक्ष शिवाकांत गुड्डन पांडेय ने कहा कि व्यापारियों की हालत पहले से ही खराब है, नगर पालिका परिषद इटारसी अगर व्यापारियों का किराया वृद्धि करती है, तो उनकी और भी हालत खराब होगी। कांग्रेस पार्टी व्यापारियों के हित में इस प्रस्ताव का विरोध करती है।

कांग्रेस के ही एक संगठन सेवादल यंग बिग्रेड के प्रदेश अध्यक्ष गजानन तिवारी का कहना है कि भाजपा सरकार बड़े उद्योगपति का कर्जा माफ कर रही है और छोटे व्यापारियों का किराया भाजपा की नगर पालिका किराया बढ़ा रही है। हम व्यापारियों के साथ खड़े हैं, हर हाल में उनकी हर लड़ाई हम लड़ेंगे नगर पालिका के खिलाफ। सेवादल यंग ब्रिगेड का हर कार्यकर्ता कांग्रेस जनों के साथ मिलकर पूरी ताकत के साथ नगरपालिका के इस किराए वृद्धि के फैसले का विरोध करेगा।

इधर इटारसी व्यापार महासंगठन दुकान किराया वृद्धि न हो इसे लेकर क्षेत्रीय विधायक डॉ. सीतासरन शर्मा एवं नगर पालिका अध्यक्ष पंकज चौरे से समय लेकर उनके निवास पर पहुंचकर ज्ञापन सौंपेगा। सभी व्यापारी विधायक एवं नपाध्यक्ष से किरया ना बढ़ाए जाने की मांग करेंगे।

क्यों बढ़ा रहे किराया

मप्र शासन की मंशा है कि नगर पालिकाएं आत्मनिर्भर हों। पिछले दिनों नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने भी कहा था कि जनप्रतिनिधि साहस दिखाएं। मप्र शासन ने संपत्ति अंतरण नियम 2016 के अंतर्गत निर्देश दिये हैं कि गाइड लाइन अनुसार संपत्ति का 2 प्रतिशत साल किराया लेना है। नगर पालिकाएं यदि अपनी आय बढ़ाने के लिए ऐसे कदम नहीं उठाएगी तो उनका ग्रांट रोक दिया जा रहा है।

इनका कहना है...

नगर पालिका की आय बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश शासन की मंशा के अनुसार यह प्रस्ताव लाए हैं। सभी से बातचीत करके इसका समाधान निकालने के प्रयास किये जा रहे हैं।

- पंकज चौरे,
अध्यक्ष नगर पालिका परिषद इटारसी

विधायक ने किया तिलक सिंदूर मेला क्षेत्र का निरीक्षण

अधिकारियों को दिए जरूरी दिशा निर्देश

इटारसी, देशबन्धु। विधायक सिवनी मालवा प्रेमशंकर वर्मा ने अधिकारियों के साथ महाशिवरात्रि पर आयोजित होने वाले तिलक सिंदूर मेला क्षेत्र का निरीक्षण किया। मेले की तैयारी का जायजा लेते समय विधायक ने भक्तों के आने जाने सहित साफ-सफाई, पार्किंग व्यवस्था, बिजली व्यवस्था सहित सभी व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मेला क्षेत्र के निरीक्षण के दौरान तिलक सिंदूर

विकास समिति भट्टी एवं अन्य समिति ने विधायक के साथ बैठक में हिस्सा लिया ।

विधायक प्रेमशंकर वर्मा ने बताया कि महाशिवरात्रि पर्व पर तिलक सिंदूर मेले में लाखों की संख्या में श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ के दर्शन के लिए आते हैं। व्यवस्था के लिए अधिकारियों के साथ बैठक ली गई है। श्रद्धालुओं की संख्या के हिसाब से उचित व्यवस्था के लिए जरूरी दिशा-निर्देश दिए हैं। जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी सहित भाजपा नेता राजेश वर्मा मुन्ना भट्टी, विवेक साध, हरि मेहतो, सुनील चौधरी, अर्चना मेहतो, ब्रजकिशोर पटेल, सुनील नागले, डोरीलाल चीचाम, हरि यादव, मस्तान सिंह राजपूत, राजस्व विभाग से तहसीलदार शंकर सिंह रघुवंशी, वन विभाग से रेंजर महेंद्र गौर, पथरोटा थाना प्रभारी संजीव पवार, पीडब्ल्यूडी से केसी बीलिया, संतोष मीना सहित क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

नर्मदापुरम और बैतूल के मध्य खेला जा रहा फाइनल मुकाबला

नर्मदापुरम, देशबन्धु। संभाग क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में आयोजित सीनियर वर्ग का फाइनल मुकाबला नर्मदापुरम और बैतूल के बीच खेला जा रहा है।

मानसेवी सचिव अनुराग मिश्रा ने बताया कि फाइनल मैच में नर्मदापुरम ने बैतूल पर पहले दिन शानदार बढ़त बना ली है। टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए बैतूल की पारी महज 105 रनों पर सिमट गई। बैतूल की ओर से

सर्वाधिक आलोक गोस्वामी ने 35 रनों का योगदान दिया। नर्मदापुरम की ओर से गौरव दशोरे ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 6 विकेट हासिल किए। पहली पारी में नर्मदापुरम के यश दुबे 50 और राहुल चंद्रोल 53 रन नॉट आउट की मदद से दिन का खेल खत्म होने तक 200 रन 5 विकेट पर बना लिए हैं। मैच के दौरान ग्राउंड पर सिलेक्शन कमेटी के संजय नाफड़े मौजूद रहे। मैच में अंपायर की भूमिका हरीश हनोतिया, उत्तम रघुवंशी एवं स्कोरर की भूमिका मनोहर बिलथरिया ने निभाई।

श्रीरामजी बाबा मेले में प्रतिदिन हो रहे हैं रंगारंग कार्यक्रम

देश के ख्यातनाम कवि रविवार को देंगे मेला मंच पर प्रस्तुतियां

नर्मदापुरम, देशबन्धु। नगरपालिका परिषद नर्मदापुरम द्वारा आयोजित संत शिरोमणी श्रीरामजी बाबा मेले में प्रतिदिन रंगारंग और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन नपाध्यक्ष नीतू महेंद्र यादव, राजस्व सभापति निर्मला हंस राय के मार्गदर्शन में एवं मुख्य नगरपालिका अधिकारी हेमेश्वरी पटले के निर्देशन में किया जा रहा है।

मेला प्रभारी योगेश सोनी ने बताया कि 23 फरवरी को एनएमवी कॉलेज ग्राउंड में बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता होगी तो वहीं शाम को मेला मंच पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन आयोजित होगा। श्री सोनी ने बताया कि प्रतिदिन मेले स्थल पर सफाई कराई जा रही है। ग्राउंड पर पानी का छिड़काव कर धूल को नियंत्रित किया जा रहा है। शनिवार को मेला मंच पर आर्केस्ट्रा नाइट का आयोजन किया गया जिसमें सारेगामा फेम इंडियन आइडिल वैशाली रैकवार अपनी प्रस्तुति देंगी।

मेला व्यवस्थापक गौरव वर्मा ने रविवार 23 फरवरी को मेला मंच पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश के ख्यातिनाम कवि प्रस्तुति देंगे। मेले में आमंत्रित कवि अजातशत्रु उदयपुर, प्रताप फौजदार इंडियाज लाफ्टर चैलेंज विनर दिल्ली, कवियत्री डॉ भुवन मोहिनी टीवी सेलेब्रेटी इंदौर, दिनेश देशी घी हास्य धमाका फेम शुजालपुर, कवियत्री डॉ शुभम त्यागी, मेरठ, देवेंद्र आग, इटावा और रोहित झन्नाट, इंदौर अपनी प्रस्तुति देंगे। गुरुवार देर रात क मेला मंच से अक्षता सिंह ने भजनों की शानदार प्रस्तुति देकर सभी को अपनी ओर आकर्षित किया। वहीं भक्ति गीतों पर उपस्थित श्रोतागणों ने जयकारे लगाए।

मेला मंच पर आगामी कार्यक्रम

22 फरवरी - आर्केस्ट्रा नाईट सारेगामा फेम वैशाली रैकवार
23 फरवरी - अखिल भारतीय कवि सम्मेलन।
24 फरवरी - सदाबहार गीत संध्या।

प्रतियोगिताओं का विवरण

23 फरवरी को बैलगाड़ी दौड़ प्रतियोगिता, शासकीय नर्मदा महाविद्यालय नर्मदापुरम।

एडव्होकेट अमेंडमेंट बिल 2025 के विरोध में वकीलों ने दिया एसडीएम को ज्ञापन

इटारसी, देशबन्धु। नगर के अधिवक्ताओं ने आज न्यायालयीन काम नहीं किया। उन्होंने एडवोकेट अमेंडमेंट बिल 2025 का विरोध करते हुए एसडीएम को एक ज्ञापन भी दिया है।

ज्ञापन में अधिवक्ताओं ने कहा कि एडव्होकेट अमेंडमेंट बिल 2025 एक्ट (प्रपोज ड्राफ्ट) की पारा 15-ए एवं अन्य सशासन जो कि वकीलों के मौलिक अधिकारों व स्वतंत्रता का हनन करते हैं, ऐसे किये जाने वाले अमेंडमेंट बिल से पूरे देश में वकील प्रभावित एवं आक्रोशित हैं ऐसा प्रपोस्ड ड्राफ्ट काला कानून की श्रेणी में आने वाला कानून है जिससे अधिवक्ताओं की स्वतंत्र निष्पक्ष एवं निर्भीक वकालत पर कुठाराघात करता है। इस बिल का पूरे देश व मध्यप्रदेश में भिन्न-भिन्न अधिवक्ता संघों एवं उच्च न्यायालय अधिक्ता संघ ने भी इसका पुरजोर विरोध किया है। इसी क्रम में अधिवक्ता संघ इटारसी ने आज अपने-अपने कार्य से विलग रहने का निर्णय सर्व सम्मति से लिया था। अधिवक्ताओं ने ज्ञापन में इस बिल को अव्यवहारिक एवं अधिवक्ताओं की स्वतंत्र निष्पक्ष एवं निर्भीक वकालात पर कुठाराघात करने को लेकर एडवोकेट अमेंडमेंट बिल 2025 एक्ट (प्रपा ड्राफ्ट) को लागू नहीं करने की मांग की है, साथ ही चेतावनी दी है कि यदि बिल को लागू किया जाता है तो अधिवक्ता पूरे देश में आन्दोलन करने के लिए बाध्य होंगे।

ग्राम बांदरी में स्कूल के मैदान में मंगल भवन बनाने का विरोध

इटारसी, देशबन्धु। बांदरी हाई स्कूल मंगल भवन बनने के लिए काफी दिनों से विवाद चल रहा है। आदिवासी नेता विनोद वारिवा ने बताया कि बांदरी स्कूल में जगह बहुत काम है। यदि यहां मंगल भवन बन जायेगा तो छात्र छात्राओं के खेलकूद के लिए जगह बहुत कम बचेगी।

ग्रामीणों ने स्कूल के मैदान में मंगल भवन का विरोध किया है। ग्रामीणों का कहना है कि अनुविभागीय दंडाधिकारी के कहने के बावजूद स्कूल परिसर में मंगल भवन बनाने का काम प्रारंभ कर दिया है। ग्रामीणों की अपने बच्चों की पढ़ाई की चिंता को दरकिनार कर आज से भवन का निर्माण कार्य आरंभ कर दिया है, जबकि पालकों के अनुरोध पर अनुविभागीय अधिकारी ने वहां निरीक्षण के

उपरांत ही निर्माण करने की बात संबंधित को कह चुके हैं।

आदिवासी नेता विनोद वारिवा ने कहा कि स्कूल में आदिवासी गरीब बच्चों की संख्या बहुत अधिक है,अन्य लोगों के बच्चे प्रायवेट स्कूल में जाते हैं, जबकि गरीब बच्चों के माता-पिता के पास पैसा नहीं होता। ऐसे माता-पिता शासकीय स्कूल में बच्चों को भेजते हं। उन्होंने एसडीएम से निवेदन किया है कि शासकीय स्कूल की जगह को छोड़कर अन्य शासकीय जगह पर मंगल भवन बनाया जाये।

पारसनाथ मंदिर में स्थापित होंगे आचार्य विद्यासागर के चरण कमल

इटारसी, देशबन्धु। आचार्य गुरूवर विद्यासागर महाराज के 108 चरण कमल पूरे देश में स्थापित किए जा रहे हैं। यह चरण कमल अष्टधातु से निर्मित हैं। 110 किलो धातु से इनका निर्माण हुआ है, जिसे आचार्य श्री के समाधि स्थल डोंगरगढ़, छत्तीसगढ़ में विधि विधान के साथ संकलित कर भारतवर्ष में अलग-अलग स्थान पर स्थापना हेतु भेजा जा रहा है।

यह चरण कमल श्री पारस नाथ दिगंबर जैन मंदिर में भी स्थापित होने जा रहे हैं। श्री पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर प्रवक्ता दीपक जैन ने बताया की जैन आचार्य संत शिरोमणि गुरूवर 108 विद्यासागर महाराज के श्री चरण कमल का आगमन हो चुका है। आचार्य श्री के चरण कमल की शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ रविवार सुबह 9 बजे श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर दूसरी लाइन से प्रारंभ होकर, शहर के प्रमुख मार्ग, जय स्तंभ, द्वारकाधीश मंदिर, छोटा सराफा, 9 वीं लाइन, 11 वीं लाइन से तारन तरण मार्ग होते हुए पारसनाथ दिगंबर जैन मंदिर पहुंचेगी। संतचरणों के दर्शन एवं आरती करने का सौभाग्य शोभायात्रा के दौरान प्राप्त होगा। समाज ने सभी से शोभायात्रा के स्वागत, अगवानी और पूजन करने की अपील की है।

घायल बुजुर्ग ने कहा पुलिस ने मारा

पिपरिया, देशबन्धु। महाशिवरात्रि मेले के चलते पचमढ़ी चौरागढ़ मंदिर के पास एक दिव्यांग बुजुर्ग को पीटने का मामला सामने आया है। घायल बुजुर्ग को पिपरिया शासकीय अस्पताल लाया गया।

बुजुर्ग का कहना है कि पुलिस ने डंडे से उसे पीटा है। शुक्रवार दोपहर 108 एम्बुलेंस से एक घायल दिव्यांग बुजुर्ग को शासकीय अस्पताल गंभीर हालत में लाया गया, जो बोलने की स्थिति में नहीं था। बुजुर्ग के सिर पर चोट लगी थी। होश में आने के बाद बुजुर्ग ने अपना नाम राधेश्याम (60 वर्ष) निवासी सांगाखेड़ा बताया। घटना को लेकर घायल राधेश्याम ने कहा कि रोजी-रोटी के लिए भिक्षा मांगता हूं। आज पचमढ़ी में चौरागढ़ के पास दो दुकानदारों में झगड़ा हो रहा था। मैंने झगड़ा ना करने को कहा, तभी एक पुलिसवाला (बिना वर्दी) ने मुझे डंडे से पीटा, सिर- कमर में मारा। हालांकि, इस घटना पीटने वाला कौन था? पुलिस जवान या कोई आपराधिक तत्व ये जांच का विषय है। लेकिन, एक गरीब दिव्यांग बुजुर्ग को पीटना मानवता को शर्मसार करना है। अस्पताल चिकित्सक का कहना है कि बुजर्ग के सिर में अंदरुनी चोट है। उसे जिला अस्पताल रेफर किया जाएगा।

शाहपुर में महिला ने पुलिस पर लगाया आरोप

बैतूल, देशबन्धु। शाहपुर में रहने वाली महिला प्रियंका गुप्ता ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके परिवार को जान का खतरा है, लेकिन पुलिस द्वारा आरोपियों को संरक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 28 अक्टूबर को शाहपुर थाने में नीतू गुप्ता, शक्ति गुप्ता, जानवी गुप्ता और अंजेय गुप्ता के खिलाफ धारा 294, 323, 458, 506, 34 भादवि के तहत मामला दर्ज किया गया था। लेकिन अब पुलिस ने धारा बदलकर आरोपियों को थाने से ही जमानत दे दी।

प्रियंका गुप्ता ने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 181 पर शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि रिपोर्ट दर्ज होने के बावजूद पुलिस आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय उन्हें राहत दे रही है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने उनके केस में धारा 458 को बदलकर 457 कर दिया, जिससे आरोपियों को जमानत मिलने में आसानी हो गई। उन्होंने कहा कि यदि कोई महिला राजनीति के बल पर कानून को प्रभावित कर सकती है, तो उनकी और उनके पति तथा बच्चों की सुरक्षा का क्या होगा? प्रियंका का कहना है कि पुलिस की इस कार्रवाई से उन्हें लगातार डर बना हुआ है। उन्होंने बताया कि आरोपियों की मंशा उनके परिवार को नुकसान पहुंचाने की है और यदि समय रहते सख्त कार्रवाई नहीं हुई, तो उनका परिवार किसी अप्रिय घटना का शिकार हो सकता है। शिकायतकर्ता ने अधिकारियों से अपील की है कि नीतू गुप्ता, शक्ति गुप्ता, जानवी गुप्ता और अंजेय गुप्ता के खिलाफ सख्त कानूनी कदम उठाए जाएं, ताकि उनका भय समाप्त हो सके और उन्हें न्याय मिल सके। प्रियंका गुप्ता का कहना है कि जब उन्हें जनता की रक्षक पुलिस से ही सहायता नहीं मिल पा रही तो वे किस से सहायता की उम्मीद रखें।

शिव विवाह महोत्सव में भीमाशंकर का मंडप आज

बैतूल। थाना महाकाल चौक कोठी बाजार स्थित शिवालय में शिव विवाह महोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। भक्तों के लिए विशेष आयोजन किए जा रहे हैं। शुक्रवार शाम केदारनाथ की खणमिट्टी का भव्य आयोजन किया गया। अब 22 फरवरी को सुबह 11 बजे भीमाशंकर का मंडप तैयार होगा। महोत्सव के अंतर्गत 26 फरवरी को भव्य शिव बारात निकाली जाएगी, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल होंगे।

शिव विवाह महोत्सव में शुक्रवार को केदारनाथ की पवित्र खणमिट्टी पूजन कर भगवान शिव के प्रति अपनी भक्ति प्रकट की। शिवालय को भव्य रूप से सजाया गया और भक्तों ने शिव मंत्रों के जाप के साथ पूरे विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। शिव विवाह महोत्सव का मुख्य आकर्षण 26 फरवरी को शिव बारात का भव्य आयोजन होगा। इस आयोजन को लेकर भक्तों में जबरदस्त उत्साह है।

महोत्सव को सफल बनाने के लिए मंडप प्रभारी नीता वराठे, व्यवस्थापक अक्षय तातेड, निक्की राजपूत, गज्जू दत्ता, अमन सोनकपुरिया और चंदन गिरी समेत पूरी समिति दिन-रात व्यवस्थाओं में जुटी हुई है। भक्तों के लिए विशेष प्रबंध किए गए हैं, जिससे वे पूरे विधि-विधान से शिव महोत्सव का आनंद उठा सकें। श्रद्धालु बड़ी संख्या में शिवालय पहुंच रहे हैं और भगवान शिव के विवाह उत्सव का आनंद ले रहे हैं।

शंकर राय पुन: बने श्रमजीवी पत्रकार संघ के ब्लाक अध्यक्ष

भैंसदेही, देशबन्धु। मप्र श्रमजीवी पत्रकार संघ के बैतूल जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह द्वारा भैंसदेही क्षेत्र के सक्रिय पत्रकार शंकर राय बंगाली को पुन:भैंसदेही ब्लाक अध्यक्ष नियुक्त किया है। जिला अध्यक्ष ने उनसे अपेक्षा की है कि उनके नेतृत्व में संघ नई ऊंचाईयों को छुएगा। जल्द से जल्द ब्लाक कार्यकारिणी की घोषणा करें, जिसमें ब्लाक के सक्रिय और ऊर्जावान पत्रकारों को शामिल करें। शंकर राय को मप्र श्रमजीवी पत्रकार संघ भैंसदेही का ब्लाक अध्यक्ष बनने पर नगर परिषद अध्यक्ष मनीष सोलंकी, पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष अनिल सिंह ठाकुर, पूर्व भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रदीप सिंह किलेदार, राजा सावरकर, गोलू राठौर, बंटी आर्य स्वदेश सरकार,अंशुल राठौर, राजेंद्र धुले, गाजनन अस्वार, गणेश राय, दिलीप घोरे, कमलेश कांवड़कर, मनीष राठौर, अमीन काबरा, मोहित राठौर, राहुल छात्रपाल, शोयब विंघानी, सोनू राठौर, सचिन बेले, ललीत छात्रपाल, दिनेश मालवीय, संतोष पाल, रवि वशनकर, उमेश सोनी, अमन दरवाई, मनीष पटैया, नरेश मोहरे, संतोष राठौर, अंकित महाराज ने बधाई दी है।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

ग्लोबल इन्वेस्टर सबमिट 24 फरवरी एवं 25 फरवरी को भोपाल में

नर्मदापुरम, देशबन्धु। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 24 एवं 25 फरवरी को ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2025 का राज्य स्तरीय आयोजन किया जाएगा। इस दौरान प्रदेशभर में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न औद्योगिक इकाइयों का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया जाएगा।

इसी क्रम में नर्मदापुरम जिले के औद्योगिक क्षेत्र कीरतपुर एवं पिपरिया स्थित फूड पार्क की इकाइयों का भी वर्चुअल लोकार्पण एवं शिलान्यास किया जाएगा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर भारत सरकार के गृह मंत्री श्री अमित शाह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे और औद्योगिक विकास की इन परियोजनाओं का वर्चुअल माध्यम से उद्घाटन करेंगे।

ग्लोबल इन्वेस्टर समिट 2025 राज्य में निवेश को प्रोत्साहित करने और औद्योगिक क्षेत्रों को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस आयोजन के माध्यम से स्थानीय उद्यमियों को भी नए अवसर मिलेंगे, जिससे क्षेत्र में रोजगार सृजन और आर्थिक विकास को गति मिलेगी।

कलेक्टर ने अनुकंपा के लिए हितग्राहियों को वितरित किए नियुक्ति पत्र

नर्मदापुरम, देशबन्धु। कलेक्टर सोनिया मीना ने शुक्रवार को शासकीय सेवा में रहते हुए दिवंगत हो चुके शासकीय सेवकों के आश्रितों को योग्यता अनुसार अनुकंपा नियुक्ति पत्र वितरित किये। प्राप्त जानकारी अनुसार शासकीय एसएनजी उ.मा.वि.,

नर्मदापुरम की माध्यमिक शिक्षक श्रीमती रेशमा मसीह के शासकीय सेवा में रहते हुए निधन के उपरांत उनके आश्रित पुत्र अभिषेक मसीह को जिला राजस्व स्थापना के अंतर्गत सहायक ग्रेड-3 के रिक्त पद पर अनुकंपा नियुक्ति प्रदान की गई है। उन्हें आगामी आदेश तक सामान्य निर्वाचन शाखा, नर्मदापुरम में पदस्थ किया गया है। इसी प्रकार, शासकीय माध्यमिक विद्यालय सनखेड़ा, विकासखंड केसला के भृत्य स्वर्गीय लालता प्रसाद यादव के निधन के पश्चात उनके आश्रित पुत्र हरि नारायण यादव को जनजातीय कार्य विभाग के शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तवा नगर, विकासखंड केसला में भृत्य के रिक्त पद पर नियुक्त किया गया है।

जिला ई-गवर्नेंस प्रबंधक को मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्त

नर्मदापुरम, देशबन्धु। मध्यप्रदेश शासन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के निर्देशानुसार जिला ई-गवर्नेंस प्रबंधक (छ्वद्गत्तरू) को मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी के रूप में जिला स्तर पर नियुक्त किया गया है। राज्य शासन के निर्देशों के अनुपालन में कलेक्टर सोनिया मीना ने जिला ई-गवर्नेंस प्रबंधक (छ्वद्गत्तरू) को मुख्य सूचना सुरक्षा अधिकारी (छ्वद्धस्ह्र) के रूप में अपनी जिम्मेदारियों का प्रभावी रूप से निर्वहन करने के लिए निर्देशित किया। साथ ही, उन्हें रजिस्ट्रेशन पोर्टल पर शीघ्र पंजीकरण प्रक्रिया पूर्ण करने तथा आगे की आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने के लिए भी निर्देश जारी किये गये हैं।।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना के दस वर्ष पूर्ण होनें पर हुए जागरुकता कार्यक्रम

नर्मदापुरम, देशबन्धु। बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना संचालन के दस वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर शुक्रवार को जिला कार्यक्रम अधिकारी ललित कुमार डेहरिया और सहायक संचालक व्ही पी गौर के मार्गदर्शन में वन स्टाप सेन्टर के द्वारा ग्रामीण स्वरोजगार

संस्थान नर्मदापुरम में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में वन स्टाप सेन्टर प्रशासक प्रतिभा बाजपेयी के द्वारा 181 महिला हेल्पलाइन, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, वन स्टाप सेंटर की योजनाओं की जानकारी, महावारी स्वच्छता की जानकारी ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली बालिकाओं और महिलाओं को दी गई। कार्यक्रम में लीड डिस्ट्रिक्ट मैनेजर आरडी बघेला ने आर सेटी की योजनाओं की जानकारी दी। परामर्शदात्री भागवती विष्ठ ने साइबर काइम की जानकारी दी। समन्वयक रश्मि गुप्ता ने आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम में वन स्टाप सेन्टर की केसवर्कर शिखा वर्मा, आर सेटी समन्वयक खूशबू पराशर, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षिका दामिनी उपस्थित रही।

डीजीआरओ को शिकायत दर्ज कराए

भोपाल, देशबन्धु। राष्टीय खादय सुरक्षा अधिनियम अंतर्गत बाह्य शिकायत निवारण तंत्र जिला शिकायत निवारण अधिकारी डीजीआरओ को शिकायत दर्ज कराने के प्रावधान है। प्रावधान अनुसार आम नागरिक सीएम हेल्पलाइन 181 पर कॉल करके अथवा ऑनलाईन भी डीजीआरओ को शिकायत दर्ज करा सकते है। आम नागरिकों द्वारा सीएम हेल्पलाइन 181 पर डीजीआरओ से संबंधित 4 श्रेणी की शिकायतें दर्ज कराई जा सकती है।

महाशिवरात्री मेला: 80 हजार से अधिक भक्तों ने किये महादेव के दर्शन

भगवान भोलेनाथ की भक्ति में लीन हुए श्रद्धालु

नर्मदापुरम, देशबन्धु। शिवरात्रि मेले के पांचवें दिन श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। दुर्गम रास्तों से गुजरते हुए चौरागढ़ दर्शन के लिए हजारों श्रद्धालु भोलेनाथ के जयकारों के साथ आगे बढ़ रहे हैं। अब तक 80 हजार से अधिक श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ दर्शन कर चुके हैं, और शनिवार से मेला समाप्ति तक भीड़ के और बढ़ने की संभावना है। भीड़ के बेहतर प्रबंधन के लिए तथा श्रद्धालुओं को सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाये जाने के लिए प्रशासनिक अधिकारी प्रतिपल मेले में नजर बनाये हुए हैं साथ ही निरंतर रूप से निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया जा रहा है।

मेले में महादेव से चौरागढ़ तक लगभग 250 दुकानें सजी हैं, जहां चाय, नाश्ता, पूजा सामग्री, टिकली, बिंदी, चूड़ी, भोजन आदि की बिक्री जोरों पर है। श्रद्धालु इन दुकानों से अपनी जरूरतों की वस्तुओं की खरीदारी भी कर रहे है। कई लोगो को इस दौरान रोजगार भी प्राप्त हुआ है। पूरे दिन श्रद्धालु चौरागढ़ मंदिर की चढ़ाई व दर्शन करते रहे एवं यह सिलसिला रात भर भी ऐसे ही चलता रहा।

महादेव मेला समिति की सचिव श्रीमती अनीशा श्रीवास्तव ने अस्थाई बस स्टैंड एवं बाजार क्षेत्र का निरीक्षण कर दुकानदारों की समस्याओं का मौके पर ही निराकरण किया। साथ ही, उन्होंने संबंधित अधिकारियों को प्रकाश, सफाई एवं अन्य व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिए। अतिरिक्त दंडाधिकारी डी.के. सिंह और श्रीमती अनीशा श्रीवास्तव ने केंट क्षेत्र में स्थित साडा धर्मशाला का निरीक्षण किया, जहां 500 से अधिक श्रद्धालु ठहरे हुए हैं। उन्होंने सीईओ साडा को पानी, शौचालय और प्रकाश की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

बिछड़े बच्चों एवं श्रद्धालुओं को परिजनों से मिलवाया- मेले के दौरान प्रशासन द्वारा बबलू जाटव, रामकुमार, रीना निकोले, मोरेश्वर हुड्डा और रूपाली को उनके परिजनों से मिलवाया गया, जो भीड़ के कारण अलग हो गए थे। प्रशासनिक कर्मचारियों की तत्परता से सभी को सुरक्षित उनके परिवारों से मिलाया गया। इसी प्रकार चंचल साहू उम्र 9 वर्ष निवासी साडरी जिला छिंदवाड़ा अपनी मम्मी और परिवार से बिछड़ गई थी जिसकी वायरलेस से सूचना प्राप्त हुई बच्ची को उसकी मां रीना साहू और परिवार को पुलिस द्वारा जांच पड़ताल बाद सुपुर्द की गई। जिया उईके पिता पुरुषोत्तम उईके अपने पिता से बिछड़ गई थी जिसे डीपी प्वाइंट पर पुलिस द्वारा छानबीन कर पिता पुरुषोत्तम को सुपुर्द किया गया।

लापरवाही पर 9 कर्मचारियों को नोटिस- मेले के दौरान अपनी ड्यूटी से अनुपस्थित पाए गए 9 कर्मचारियों पर अतिरिक्त दंडाधिकारी नर्मदापुरम द्वारा कार्यवाही कर कारण बताओ नोटिस जारी किए गए हैं। महाशिवरात्रि मेले के लिए प्रशासन द्वारा व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित किया जा रहा हैं, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

कलेक्टर ने की एमपीआरआरडीए की निर्माणाधीन सड़कों की समीक्षा

नर्मदापुरम, देशबन्धु। कलेक्टर सोनिया मीना ने जिले में मध्यप्रदेश ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण (एमपीआरआरडीए) द्वारा निर्माणाधीन सड़कों की समीक्षा बैठक ली। बैठक में विभिन्न मार्गों के निर्माण कार्य की प्रगति पर चर्चा की गई।

बैठक के दौरान आरी से बुधनी वाया बीकोर, बाबई सिरवाड़ से चीचलीकल रैपुरा, वंशीखेरी फुरतला सेंदरवाड़ा से चौराहेट, (मोहगांव) से डोलरिया खुर्द वाया महेन्द्रवाड़ी, एस.एच.-22 से बारंगी कटियाखापा, सोहागपुर गुंदरई से चौरगांव रोड, तिनसरी से पचलावरा और पचलावरा से सरी किशोर तक के निर्माणाधीन मार्गों की समीक्षा की गई। समीक्षा बैठक में कलेक्टर ने रिची से लुचगांव, लुचगांव से रामगढ़ तक उन्नयन के लिए हैवी ट्रैफिक अंतर्गत मार्गों की प्रगति की भी समीक्षा की। पीएमजीएसवाई भाग 3 के प्रगतिरत सेतुओ की वर्तमान स्थिति की जानकारी का भी कलेक्टर द्वारा सूक्ष्मता से अवलोकन किया गया।

कलेक्टर सोनिया मीना ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मेंटेनेंस योग्य सड़कों के प्रस्ताव जल्द से जल्द तैयार कर विभाग को भेजे जाएं, ताकि शीघ्र स्वीकृति प्राप्त हो सके। इसके अलावा, कलेक्टर ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (क्क्वत्सस्ङ्घ) फेज-4 के लिए सर्वे कार्य जल्द पूरा करने और यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि कोई भी ग्राम इस योजना के अंतर्गत सर्वे से वंचित न रहे। बैठक में नर्मदा परिक्रमा पथ के निर्माण कार्य पर भी चर्चा की गई, जो ताल नगरी से खोकसर तक नई पद्धति से तैयार किया जा रहा है। बैठक में एमपीआरआरडीए के महाप्रबंधक मनोज कुमार चौधरी, सहायक प्रबंधक राजेश उइके और कैलाश जोठे उपस्थित रहे।

जिला स्तर पर रा.से.यो. के राज्य स्तरीय शिविर के लिए चयन

हरदा, देशबन्धु। राज्य स्तरीय शिविर का आयोजन आगामी 2 मार्च से 8 मार्च को अवधेश प्रताप सिंह विश्विद्यालय रीवा के संगठन व्यवस्था में ग्राम नगर पालिका परिसर अमरकंटक में आयोजित किया जा रहा है। हरदा डिग्री कॉलेज में जिला स्तर पर राष्टीय सेवा योजना के राज्य स्तरीय नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर में सहभागिता करने के लिए स्वयं सेवकों का चयन किया गया।

जिला स्तर पर चयन प्रक्रिया समिति में रा.से.यो. जिला संगठक सत्येन्द्र सिंह परिहार हरदा डिग्री कॉलेज, कार्यक्रम अधिकारी डॉ सोनिका बघेल शासकीय आदर्श महाविद्यालय,सुश्री हर्षा जायसवाल, दिनेश मेहरा एल.बी.एस. महाविद्यालय, तपिश सोलंकी आदर्श महाविद्यालय हरदा उपस्थित थे। चयन समिति के द्वारा स्वयं सेविका रेशमा मालवीय शासकीय प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय हरदा, रानी चौहान हरदा डिग्री कॉलेज, धन्वंतरि एल. बी. एस. कॉलेज, और छात्र स्वयंसेवक अमित मवासे शासकीय आदर्श महाविद्यालय हरदा, विशाल देवड़ा प्राइवेट आदर्श महाविद्यालय हरदा, देवेन्द्र ढाका हरदा डिग्री कॉलेज प्रतीक्षा सूची में प्रीतम सेठे शासकीय प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय हरदा, श्रीकिशन बामने शासकीय महाविद्यालय टिमरनी आदित्य एल बी एस महाविद्यालय हरदा प्रीति ककोडिया शासकीय आदर्श महाविद्यालय हरदा गौरी मल्हारे प्राइवेट आदर्श महाविद्यालय हरदा का चयन किया गया। चयनित सभी रा.से.यो. स्वयं सेवक राज्य स्तर पर हरदा जिले का प्रतिनिधत्व करेंगे। जिला स्तर पर चयनित सभी स्वयंसेवकों को हरदा डिग्री कॉलेज के डायरेक्टर डॉ गिरीश सिंहल, डॉ अभिलाषा सिंहल,उपप्राचार्य गणेश श्रीवास्तव एवम समस्त स्टाफ ने बधाई दी।

विद्यार्थियों में स्किल डेवलपमेंट के लिए कराया व्यावसायिक शैक्षिक भ्रमण

विद्यार्थियों ने विशेषज्ञों से ली व्यवसाय की जानकारी

हरदा, देशबन्धु। राष्टीय शिक्षा नीति के अंतर्गत राज्य शिक्षा केंद्र के निर्देशानुसार माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा अंतर्गत एक्सपोजर विजिट, व्यावसायिक शिक्षा भ्रमण एवं स्किल डेवलपमेंट को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विशेषज्ञों के व्याख्यान संवाद कार्यक्रम का आयोजन क्लस्टर की माध्यमिक शालाओं में किया जाना है इसके अंतर्गत क्लस्टर जन शिक्षा केंद्र हंडिया में माध्यमिक शालाओं के विद्यार्थियों को व्यावसायिक शैक्षिक भ्रमण कराया गया।

जनशिक्षक अनूप शर्मा ने बताया कि इस दौरान माध्यमिक शाला कांकड़दा, चिराखान, सालिया खेड़ी, जोगा कला, कुसिया,हीरापुर के विद्यार्थी सम्मिलित हुए। विद्यार्थियों ने शैक्षिक भ्रमण अंतर्गत आजीविका समूह से भेंट वार्ता की। समूह द्वारा किए जा रहे लघु उद्योग, अगरबत्ती, साबुन, बांस से निर्मित सामग्री की पूरी प्रक्रिया समझी, इसी के साथ जल संयंत्र का भ्रमण कर फिल्टर प्रक्रिया समझी। पीएमश्री विद्यालय का भ्रमण कर वहां सुविधाओं को जाना।वहीं विद्यार्थियों को भमोरी बैराज डैम का भ्रमण भी कराया गया। एक्सपर्ट विजिट अंतर्गत पीएमश्री विद्यालय हंडिया माध्यमिक शाला खेड़ी नीमा में विशेषज्ञ व्याख्यान एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया।इस दौरान अणिमा पाराशर द्वारा स्किल डेवलपमेंट में चित्रकला पर प्रशिक्षण एवं व्याख्यान दिया गया।वहीं विभिन्न प्रकार की चित्र कलाओं एवं उपयोग सामग्री पर विस्तृत व्याख्यान देते हुए अंकों के माध्यम से चित्रकला समझाई गई।इस दौरान लीना शर्मा द्वारा बुटीक फैशन डिजाइनिंग एवं कट निर्माण प्रक्रिया समझाइए गई।कार्यक्रम में योगेश शर्मा ने भी व्यवसाय चयन पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर संस्था प्रमुख जी आर चौरसिया ,संचिता व्यास, लक्ष्मी नारायण डूडी, पर्वत सिंह सिसोदिया, ओमप्रकाश धनगर, शरीफ खान, तनुज सेन, मोहन व्यास, अरविंद जायसवाल, जन शिक्षक अनूप शर्मा, रामविलास कर्मा उपस्थित रहे।इस कार्यक्रम में सात माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

मुख्यमंत्री की पहल का दिखने लगा है असर

रीजनल इंडस्ट्रीज कॉनक्लेव में शामिल 8 निवेशकों ने शुरु किए उद्योग

हरदा, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर पिछले दिनों प्रदेश के सभी मुख्यालयों पर रीजनल इंडस्ट्रीज कॉनक्लेव आयोजित कर निवेशकों को आमंत्रित किया गया। इसी क्रम में नर्मदापुरम में गत 7 दिसम्बर को रीजनल इंडस्ट्रीज कॉनक्लेव आयोजित की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की इस पहल के सकारात्मक परिणाम अब दिखने लगे है।

कलेक्टर आदित्य सिंह ने बताया कि नर्मदापुरम की रीजनल इंडस्ट्रीज कॉनक्लेव में हरदा जिले के जो निवेश प्रस्ताव शामिल हुए थे, उनमें से 8 निवेशकों ने अपने प्रस्तावित उद्योग प्रारंभ कर दिये हैं। उन्होने बताया कि इन 8 निवेशकों द्वारा स्थापित उद्योगों मे 22.78 करोड़ रूपये का निवेश किया गया है तथा इन उद्योगों में 137 व्यक्तियों को रोजगार मिला है। जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र के महाप्रबन्धक सचिन रोमड़े ने बताया कि हरदा जिले के जिन 8 निवेशकों ने अपने उद्योग शुरू कर दिये है, उनमें विनायक श्री इण्डस्ट्रीज के प्रो. दीपक उपाध्याय द्वारा 2.30 करोड़ की लागत से दाल मिल उद्योग स्थापित किया, जिसमें 15 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। इसी प्रकार गंगोत्री बिल्डकॉन के प्रो. प्रशांत पटेल द्वारा 38.89 लाख की लागत से फ्लाय ऐश ब्रिक्स उद्योग स्थापित कर 9 व्यक्तियों को रोजगार दिया जा रहा है। इसके अलावा माँ गौमती गायत्री इंडस्ट्रीज ग्राम नगावामाल द्वारा 2 मेगा वाट ग्रिड कनेक्टेड सोलर पॉवर जनरेटिंग फेसिलिटी में 9.46 करोड़ का निवेश कर 15 व्यक्तियों तथा व्हाईट फ्रेश फूड प्रोडक्टस के प्रो. हिमांशु मौर्य द्वारा 3.29 करोड़ का निवेश कर इकाई का विस्तार कर पनीर, दही घी, मावा आदि का निर्माण किया जा रहा है, जिसमे 18 व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। सोमेश इंडस्ट्रीज के नीलेश मित्तल ने कॉटन सीड ऑइल उद्योग में 80 लाख का निवेश कर 8 लोगों को रोजगार दिया है। इसी तरह नवल सिंह बघेल ने 50 लाख रूपये माइनिंग सेक्टर में निवेश कर 5 लोगों को रोजगार दिया है। हर्ष गोयल ने राईस मेन्यूफेक्चरिंग प्लांट की स्थापना पर 4.95 करोड़ रूपये का निवेश कर 50 लोगों को रोजगार दिया है। ज्योति केटल फीड प्लांट तजपुरा में उदयसिंह तोमर ने 1.09 करोड़ रूपये निवेश कर 17 लोगों को रोजगार से लगाया है।

ई-ऑफिस प्रशिक्षण आयोजित

नर्मदापुरम, देशबन्धु। डिजिटल प्रशासन और पेपरलेस गवर्नेंस की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के तहत, आज ई-ऑफिस प्रशिक्षण सत्र का आयोजन ई-दक्ष केंद्र, नर्मदापुरम में प्रात: 11:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक सफलतापूर्वक किया गया।

ई-ऑफिस तकनीकी सहायता समूह और मास्टर ट्रेनर्स के गठन के आधिकारिक निर्देशों के अनुरूप, यह प्रशिक्षण ई-ऑफिस प्रणाली के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण सत्र एक सतत प्रक्रिया का पहला चरण था, जिसके अंतर्गत समस्त शासकीय विभागों में ई-ऑफिस प्रणाली को सुचारू रूप से लागू करने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। प्रशिक्षण सत्र का संचालन मनीष गुणवान और संदीप चौरसिया द्वारा किया गया, जिसमें विभिन्न विभागों के अधिकारियों और कर्मियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान ई-ऑफिस प्रशिक्षण डेमो पोर्टल पर लाइव हैंड्स-ऑन डेमो दिया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने आवक-जावक निर्माण, फाइल निर्माण, ड्राफ्ट तैयार करने और फाइल मूवमेंट की प्रक्रिया को वास्तविक वातावरण में सीखा और अभ्यास किया। इस व्यावहारिक प्रशिक्षण से अधिकारियों को प्रणाली को सुचारू रूप से संचालित करने का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त हुआ।

निरोगी काया अभियान शुरु, 31 मार्च तक चलेगा

भोपाल, देशबन्धु। असंचारी रोगों की जांच के लिए निरोगी काया अभियान की शुरुआत गुरुवार से की गई। 31 मार्च तक चलने वाले इस विशेष अभियान में 30 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज जांच की जाएगी तथा पीड़ित पाए जाने पर निश्शुल्क उपचार दिया जाएगा।

अभियान के पहले दिन मिशन संचालक राष्टीय स्वास्थ्य मिशन श्रीमती सलोनी सिडाना, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रभाकर तिवारी, उप संचालक असंचारी रोग नियंत्रण कार्यक्रम डॉ. आशीष सक्सेना, उप संचालक शहरी स्वास्थ्य डॉ. मनीष सिंह सहित अन्य अधिकारियों ने विभिन्न स्वास्थ्य संस्थानों में पहुंचकर अभियान में दी जा रही सेवाओं की जानकारी ली। श्रीमती सिडाना ने प्रियदर्शनी मुख्यमंत्री संजीवनी केंद्र में हितग्राहियों से बात कर अभियान के तहत दी जा रही सेवाओं की जानकारी ली। साथ ही आशा कार्यकर्ताओं से समुदाय स्तर पर दी जा रही एन सी डी सेवाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी ली। मिशन संचालक ने निर्देश दिए कि अभियान हेतु लक्षित शत - प्रतिशत नागरिकों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित की जाए। डॉ. तिवारी द्वारा स्वास्थ्य संस्थाओं में की जा रही जांच की मॉनिटरिंग की गई। उप संचालक असंचारी रोग नियंत्रण कार्यक्रम डॉ.आशीष सक्सेना द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र रातीबड़, उपसंचालक शहरी स्वास्थ्य डॉ. मनीष सिंह द्वारा मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक राहुल नगर, जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्रीमती अनिता दुगाया और सहायक प्रबंधक श्रीमती अर्पिता सिंह द्वारा मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक चाँदबड़ में पहुंचकर अभियान में दी जा रही सेवाओं की समीक्षा की।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. तिवारी ने बताया कि अभियान के तहत असंचारी रोग जांच के लिए आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, मुख्यमंत्री संजीवनी क्लीनिक पर जांच शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। मैदानी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा अभियान की जानकारी देकर लोगों की जांच करवाई जा रही है। हितग्राहियों की जांच और उपचार की रिपोर्ट एनसीडी पोर्टल में दर्ज की जा रही है। रोगों की पहचान होने पर त्वरित रूप से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, सिविल अस्पतालों अथवा जिला चिकित्सालय में उपचार प्रारंभ किया जाएगा।

नए मरीजों की पहचान के लिए आशा कार्यकर्ताओं द्वारा घर-घर जाकर सीबैक फॉर्म में जानकारी इकट्ठे की जा रही है। सीबैक फॉर्म से प्राप्त जानकारी के आधार पर असंचारी रोग जांच एवं पंजीयन किया जाएगा।

नवविवाहिता ने फांसी लगाई, मौत

12 दिन बाद थी शादी की वर्षगांठ

मां बोली- दहेज के लिए प्रताड़ित करता था दामाद

भोपाल, देशबन्धु। छोला मंदिर इलाके में रहने वाली नवविवाहिता ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। पुलिस को मृतका के पास से कोई पत्र नहीं मिला है। इसके चलते खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। लेकिन मृतका की मां ने दामाद की प्रताड़ना से तंग आकर बेटी द्वारा खुदकुशी करने के आरोप लगाए हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार काजल गुप्ता गोली गुप्ता उम्र 20 वर्ष शंकर नगर उड़िया बस्ती छोला की रहने वाली थी। वह गृहिणी थी और उसका पति ऑटो चालक है। 4 मार्च 2024 को उसकी शादी हुई थी। 12 दिन बाद उसकी शादी की पहली वर्षगांठ आने वाली थी। लेकिन इसके पहले ही उसने बीती रात फांसी लगा ली। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए पहुंचाया। वहीं गुरुवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। पुलिस का कहना है कि घटना स्थल से कोई पत्र नहीं मिलने और मृतका के मायके वालों के बयान नहीं होने से खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो सकता है। फिलहाल मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। उधर गुरुवार सुबह पोस्टमार्टम के दौरान मौजून मृतका की मां नीतू गुप्ता ने बताया कि शादी के बाद से ही दामाद बेटी को परेशान करता था। उस पर मायके से अलग-अलग सामान दिलाने का दबाव बनाता था। पिछले दिनों उसे एक मोबाइल फोन दिलाया था, अब गाड़ी की मांग करने लगा था। इसी बात को लेकर बेटी को प्रताड़ित करता था। बुधवार दोपहर को बेटी का फोन आया था। तब उसने दामाद द्वारा आए दिन बदसलूकी करने और मायके से पैसा लाने का दबाव बनाने की बात कही थी। वहीं रात को दामाद का फोन आया, उसने बताया कि काजल कुछ बोल नहीं रही है। उसकी तबीयत बहुत खराब है, लेकिन जब अस्पताल पहुंचे तो बेटी के शव को देखा और पता चला कि उसने फांसी लगाई है।

बंद कमरे में मिली महिला की लाश

भोपाल, देशबन्धु। लांबाखेड़ा में बंद कमरे में महिला की लाश मिली है। बताया गाय है कि महिला शादी के एक साल बाद ही पति से अलग हो चुकी थी और भोपाल में अकेली रहकर समूह लोन दिलाने का काम करती थी। वहीं, पुलिस मामले को खुदकुशी का केस मानकर चल रही है। मामले की जांच शुरू कर दी गई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार आरती कुशवाह पुत्री मूलचंद कुशवाह उम्र 24 वर्ष मूल रूप से विदिशा के कड़ैया खेड़ा गांव की रहनी वाली थी। 2020 में उसकी शादी हुई थी, लेकिन एक साल बाद ही पति से अलग हो गई थी। इसके बाद से ही परिवार से अलग ईटखेड़ी के लांबाखेड़ा में किराए से रह रही थी। बुधवार को दिन भर कार्यालय वाले उसे फोन करते रहे। उसने फोन नहीं उठाया तो उसके परिजनों को इस बात की जानकारी दी गई। सूचना के बाद भोपाल में रहने वाले उसके जीजा ने लांबाखेड़ा में स्थित उसके कमरे पर पहुंचकर देखा। यहां उसके कमरे का दरवाजा बंद था। काफी आवाजें देने पर भी दरवाजा नहीं खुला, तब दरवाजा को तोड़कर अंदर प्रवेश किया। यहां जमीन पर आरती का शव मिला। इसके बाद में पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस की शुरुआती जांच में जहर खाकर खुदकुश की बात सामने आई है। पुलिस को कमरे से संदिग्ध जहरीला पदार्थ भी मिला है। हालांकि परिजनों ने पुलिस को खुदकुशी के लिए कोई ठोस वजह नहीं बताई है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

अभिमत

इससे यह भी सीखा जा सकता है कि जो उत्पाद लघु व कुटीर स्तर पर गांव कस्बे में बन सकते हैं, उन्हें स्थानीय स्तर पर ही बनाना चाहिए, तभी आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। इससे गांवों में रोजगार बढ़ेंगे व गांववासियों में छिपी हुई रचनात्मकता और प्रतिभा को आगे आने का अवसर मिलेगा। इस पहल में महिलाओं को जोड़ा जाना बहुत ही महत्वपूर्ण है। पारंपरिक रूप से भी कृषि, पोषण, दस्तकारी में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

केरल में जीवन शिक्षा की पहल

नवाचार

■ बाबा मायाराम

केरल के पालक्कड़ जिले के शोरनूर में एक ऐसा प्रशिक्षण केन्द्र है, जहां न केवल युवा प्राकृतिक खेती, बुनाई, मिट्टी के बर्तन और शिल्प का हुनर सीख रहे हैं,बल्कि इससे सम्मानजनक आजीविका भी हासिल कर रहे हैं और आत्मनिर्भर बन रहे हैं। आज इस अनूठी पहल की कहानी बताना चाहूंगा, जिससे शिक्षा को समग्रता से समझा जा सके। सिर्फ अल्पकालीन उद्देश्य ही नहीं, बल्कि उसे जीवन में कैसे अपनाया जा सके, यह समझा जा सके।

शोरनूर से 4 किलोमीटर दूर फार्मर शेयर नामक केन्द्र स्थित है। कुछ समय पहले मुझे यहां जाने और इसे देखने-समझने का मौका मिला। उसी अनुभव को यहां साझा कर रहा हूं। केरल को प्रकृति से भरपूर राज्य माना जाता है। इसके बारे में सुनते रहे हैं, पर देखने का मौका कुछ समय पूर्व मिला।

सुबह से शाम तक यहां की दैनंदिन गतिविधियां और प्रकृति के कई रूप देखने को मिले। टेंट में विश्राम के दौरान कीट-पतंगों की फरफराहट, पेड़ों के बीच शांति व एकान्त, सुबह पक्षियों की चहचहाहट, गिलहरियों की उछल-कूद, हवा की सरसराहट, शाम को बारिश, साफ वातावरण, पेड़ों की पत्तियों की चमक और परिसर के मनोरम दृश्य से मेरा साक्षात्कार हुआ।

परिसर में आवाजाही, रसोई कक्ष में दक्षिण भारतीय भोजन की खुशबू, हथकरघे की खट-पट, चाक पर मिट्टी को आकार देती कारीगर महिलाएं, पेड़ों की कटाई-छंटाई, पौधों की निंदाई-गुड़ाई, लाइब्रेरी में अध्ययन, यहां कुछ ऐसी ही गतिविधियां दिनचर्चा की हिस्सा थीं।

चारों ओर हरियाली से घिरा फार्मर शेयर का घर, बहुत ही साधारण चीजों से बना है। इसमें बेकार समझी जाने वाली चीजों का उपयोग किया गया है। जैसे साइकिल के रिम, लकड़ी के टुकड़े, स्टील की फ्रेम, जंगली बीज इत्यादि। दीवारों के पलस्तर में नीम की पत्तियां व तीखी गंधवाली पत्तियां मिला दी गई हैं, जिससे कीट नियंत्रण में मदद मिलती है।

इसके संस्थापक अम्ब्रोज़ कूलियत ने बतलाया कि वर्ष 2017 में इस केन्द्र की शुरूआत की गई। सबसे पहले मित्रों के साथ मिलकर एक ट्रस्ट बनाया गया, फिर 10 एकड़ ज़मीन पट्टे पर ली और प्राकृतिक खेती की शुरूआत की। धीरे-धीरे इसका विस्तार होते गया। अब यहां हथकरघे से कपड़े बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना और हस्तशिल्प की इकाईयां संचालित की जा रही हैं।

वे आगे बताते हैं कि केन्द्र की सोच गांधी के ग्राम स्वराज के विचारों से प्रभावित है। उनका मानना है कि प्रत्येक गांव और इलाके को स्वशासन, आजीविका और संसाधनों के उत्पादन व वितरण में आत्मनिर्भर होना चाहिए। यह केन्द्र इसी की एक छोटी पहल है।

इसके पूर्व उन्होंने जीविकोपार्जन के लिए कई तरह के काम किए। स्कूली पढ़ाई के बाद उन्होंने निर्माण मिस्त्री का काम किया। स्वाश्रय आंदोलन से जुड़े, जिसके तहत भोजन, रोजगार, स्वास्थ्य और खेती का प्रशिक्षण दिया, कोच्चि में जैविक उत्पादों से बने भोजन का रेस्तरां खोला। इन सब कामों से वे खुश थे, और उनकी इनमें दिलचस्पी भी थी। लेकिन वे आत्मनिर्भर और टिकाऊ समुदाय का मॉडल बनाना चाहते थे,इसलिए फार्मर शेयर की शुरूआत की।

उन्होंने बताया कि फार्मर शेयर में हम एक ऐसी संस्कृति विकसित करना चाहते हैं,जहां संसाधनों का उपयोग इस तरह से किया जाए जिससे पर्यावरण व प्रकृति का नुकसान न हो। और लालच की बजाय जरूरत के आधार पर संसाधनों का उपभोग हो। इसका उद्देश्य स्थानीय लोगों को ऐसे श्रम आधारित कामों से आजीविका उपलब्ध कराना भी है,जिन कामों से उन्हें संतुष्टि व सम्मान मिले।

यहां मुख्य रूप से पर्माकल्चर पद्धति से फूलों की खेती की जाती है। शंखपुष्पी और हिबिस्कस की खेती करते हैं। यहां एक साथ कोई खेत भी नहीं है, जहां भी जगह होती है, वहीं पौधों को उगाया व रोपा जाता है। यहां आलू, कद्दू, भिंडी, बैंगन, सेमी इत्यादि सब्जियां भी होती हैं। इनमें किसी भी प्रकार का रासायनिक खाद व कीटनाशक का उपयोग नहीं किया जाता। गोबर खाद का इस्तेमाल किया जाता है। खेती और पशुपालन एक दूसरे के पूरक हैं। यहां 7 मवेशी हैं, जिसमें गाय भी शामिल हैं।

यहां कई तरह के खाद्य उत्पाद बनाए जाते हैं और बेचे जाते हैं। सूखे केले को शहद के साथ डुबाया जाता और फिर सुखाकर बिक्री की जाती है। इसी प्रकार, अचार, शहद, ताड़ का गुड़, जैम, शरबत पाउडर इत्यादि भी बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। यहां शंखपुष्पी और तुलसी जैसे औषधि पौधे भी हैं।

वे आगे बताते हैं कि हमने हस्तशिल्प पर जोर दिया है। यहां खादी भंडार के सहयोग से 3 हथकरघा स्थापित किए गए हैं, जहां हाथ से बुने सूत से हथकरघा से कपड़ा तैयार किया जाता है। उनकी प्राकृतिक रंगों से रंगाई होती है। यहां बच्चों के अभ्यास के लिए छोटा हथकरघा भी है।

वे बताते हैं कि प्राकृतिक रंगों का उत्पादन और उपयोग पर्यावरण के अनुकूल है, इससे किसी भी प्रकार मानव शरीर को नुकसान नहीं पहुंचता। जबकि सिंथेटिक रंग पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। यह प्राकृतिक रंग पेड़ों की छाल, जामुन,फल, पत्तियों और फूलों से बनाए जाते हैं,फिर इनसे कपड़े रंगे जाते हैं।

हथकरघा इकाई में नजदीक गांव की 3 महिलाएं काम करती हैं। ये सभी तीनों घरेलू महिलाएं हैं, जिन्होंने पहले बाहर काम नहीं किया है। एक महिला प्रतिदिन करीब 2 मीटर कपड़ा तैयार कर लेती है। इस कपड़े को केन्द्र खरीद लेता है और फिर बेचता है। इस कपड़े से शर्ट, सलवार, फ्राक, बैग सभी कुछ बनाए जाते हैं।

यहां कार्यरत महिलाओं ने बताया कि 'पहले मिट्टी के बर्तन बनाने का काम कभी नहीं किया, लेकिन यहां प्रशिक्षण लेकर अब कर रही हैं। इससे उनकी आजीविका अच्छे से चलती है और खुशी भी होती हैं।'

इसके अलावा, एक इकाई कागज बनाने, साबुन बनाने और पुस्तक डिज़ाइनिंग पर शुरूआती शोध कर रही है। हस्तनिर्मित कागज़ बनाते हैं और बेकार कागज और केले के रेशे से लेबल और पैकेजिंग का काम करते हैं।

अम्ब्रोज़ कूलियत विचार व सिद्धांत के प्रति दृढ़ हैं। उन्होंने उनके बच्चों को स्कूल नहीं भेजा। उनका मानना है कि सच्ची शिक्षा जीवन भर के लिए कौशल हासिल करके हो सकती। वह कहते हैं कि आज की शिक्षा पहले के बने बनाए ढांचों में ढलना सिखाती है। उनके दोनों बेटे अमल और अखिल इस पूरे काम में सहयोगी हैं। बड़े बेटे अमल डिज़ाइनर हैं और छोटे बेटे अखिल मिट्टी के बर्तन वाली इकाई के प्रमुख हैं। अम्ब्रोज की पत्नी मिनी अम्ब्रोज़ ने भी इस पूरी पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कुल मिलाकर, यह कहा जा सकता है कि इस केन्द्र ने लुप्त होते शिल्प को पुनर्जीवित करके और हाशिये पर रहनेवाले समुदायों का समर्थन करके एक उम्मीद जगाई है। प्राकृतिक खेती में मिट्टी-पानी का संरक्षण करके जितनी ज़रूरत है, उतना ही उत्पादन किया। इसमें भी खाद्य चक्र को जहरीले पदार्थों से मुक्त रखा है, यह भी बड़ी सीख है।

इससे यह भी सीखा जा सकता है कि जो उत्पाद लघु व कुटीर स्तर पर गांव कस्बे में बन सकते हैं, उन्हें स्थानीय स्तर पर ही बनाना चाहिए, तभी आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। इससे गांवों में रोजगार बढ़ेंगे व गांववासियों में छिपी हुई रचनात्मकता और प्रतिभा को आगे आने का अवसर मिलेगा।

इस पहल में महिलाओं को जोड़ा जाना बहुत ही महत्वपूर्ण है। पारंपरिक रूप से भी कृषि, पोषण, दस्तकारी में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यदि गांव में रहते हुए भी परिवार अपनी सभी जरूरतें पूरी करने में सक्षम होते हैं तो गांव के दीर्घकालीन विकास व पर्यावरण की रक्षा के लिए यह एक मिसाल है।

संस्थापक अम्ब्रोज़ कूलियत ने बतलाया कि वर्ष 2017 में इस केन्द्र की शुरूआत की गई। सबसे पहले मित्रों के साथ मिलकर एक ट्रस्ट बनाया गया, फिर 10 एकड़ज़मीन पट्टे पर ली और प्राकृतिक खेती की शुरूआत की। धीरे-धीरे इसका विस्तार होते गया। अब यहां हथकरघे से कपड़े बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना और हस्तशिल्प की इकाईयां संचालित की जा रही हैं।

बीता सप्ताह

15 फरवरी
- पीएम नरेन्द्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की मुलाकात हुई। तब्बुर राणा का प्रत्यर्पण का ऐलान ट्रंप ने किया।
- रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने मुंबई के न्यू इंडिया को ऑपरेटिव्ह बैंक पर प्रतिबंध लगा दिया।
- वियतनाम में मलेरिया के मामले में 48प्रांतों को मलेरिया मुक्त घोषित किया गया।
- पाकिस्तान के बल्लेबाज बाबर आजम 6000 वन डे रन बनाने वाले संयुक्त रूप से तेज गेंदबाज बने।

16 फरवरी
- दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल के शीशमहल बंगले की जांच के आदेश केन्द्रीय सतर्कता आयोग ने दिए।
- गायक व संगीत निर्देशक प्रतुल मुखोपाध्याय का कोलकोता में निधन हो गया।
- निकाय चुनाव छत्तीसगढ़ में भाजपा की प्रचंड जीत हुई।
- प्रयागराज महाकुंभ जा रहे कोरबा के 10 श्रद्धालुओं की सड़क हादसे में मौत हो गई।

17 फरवरी
- छत्तीसगढ़ में पंचायत चुनाव के पहले चरण के लिए 33 जिलों में वोट डाले गए।
- अमेरिका से निर्वासित 116 भारतीय प्रवासियों का दूसरा जत्था अमृतसर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा।
- दिल्ली रेलवे स्टेशन में भगदड़ से मरने वालों की संख्या 18 हुई।

0 फास्टैग का नया नियम आज से देशभर में लागू हुआ।

18 फरवरी
- चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को भारत का मुख्य चुनाव आयुक्त नियुक्त किया गया है।
- मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार आज 18 फरवरी को सेवानिवृत्त हो गए।
- छत्तीसगढ़ में ग्राम सरकार चुनने पहले चरण का 17 को मतदान हुआ जिसका परिणाम आज 18 को आया।
- दिल्ली एनसीआर में भूकंप के झटके लगी। रिएक्टर स्केल में तीव्रता 4.0 मापी गई।

19 फरवरी
- राहुल गांधी ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार की नियुक्ति पर असहमति व्यक्त की।
- नए कानून के तहत छत्तीसगढ़ प्रदेश में अब 24 घंटे खुली रहेगी दुकानें।
- भारत के प्रमुख फैशन और लाइफस्टाइल प्लेटफार्म में से एक मित्रा ने अपने कार्पोरेट ऑफिस में एक पिकलबॉल कोटे लांच किया।
- झारखंड राज्य में गुटखा और पान मसाले पर लगा पूर्ण प्रतिबंध।
- दिल्ली भाजपा विधायक दल की बैठक में रेखा गुप्ता को नई मुख्यमंत्री घोषित किया गया।

20 फरवरी
- रेखा गुप्ता ने दिल्ली की मुख्यमंत्री पद की शपथ ली।
- छत्तीसगढ़ में पंचायत चुनाव के द्वितीय चरण का 43 विकासखंडों में मतदान हुआ।
- नए चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने अपना पदभार संभाला।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने कहा कि पाकिस्तान आतंकवाद का वैश्विक केन्द्र बन गया है।

21 फरवरी
- हाईकोर्ट न्यायाधीश के खिलाफ भ्रष्ट्राचार मामले में सुप्रीम कोट्र ने लोकपाल के उस आदेश पर रोक लगा दी जिसमें कहा गया था कि भ्रष्ट्राचार शिकायत के मामले में जांच उसके (लोकपाल) के अधिकार क्षेत्र में आता है।
- झारखंड के एकेडमिक काउंसिल (जैक) ने 10वीं बोर्ड के विज्ञान और हिंदी के पेपर लीक की पुष्टि होने पर दोनों विषयों की परीक्षा रद्द कर दी।
- छग के बलौदाबाजार में हिंसा आगजनी मामले में जेल में बंद भिलाई से कांग्रेस विधायक देवेन्द्र यादव को सुप्रीम कोर्ट ने जमानत दे दी।
- असम में कांग्रेस सांसद रकीबुल हुसैन पर अज्ञात बदमाशों ने हमला कर दिया।

फडणवीस-शिंदे के बीच बढ़ती दरार से महायुति की स्थिरता पर सवाल

■ सुशील कुट्टी

किसी को यह समझने में मुश्किल नहीं होनी चाहिए कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उनके द्वारा विस्थापित पूर्व मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के बीच दरार बढ़ती जा रही है। फडणवीस अभी महाराष्ट्र के वर्तमान उपमुख्यमंत्री भी हैं और वह मुख्यमंत्रियों के खिलाफ जाने के लिए हमेशा तैयार ही रहते हैं जैसा कि उन्होंने उद्धव बालासाहेब ठाकरे जैसे नेता के मुख्यमंत्रित्व काल में किया था। क्या यह एक बेतुकी बात होगी, जो मूल मुद्दे से भटकती है, कि मुंबई शहर में सब कुछ ठीक नहीं है, जहां जल्द ही निकाय चुनाव होने वाले हैं। मुख्यमंत्री फडणवीस और उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को अपनी कमर कस लेनी चाहिए। मीडिया ऐसा दिखा रहा है जैसे शिंदे खलनायक हैं और फडणवीस एक चमकता हुआ योद्धा। शिंदे को 'हमारे बीच 'ठंडा ठंडा, कूल कूल' रिश्ता है' जैसे बेतुके बयान देने के लिए मजबूर किया जा रहा है, जैसे कि यह कोला का विज्ञापन हो!

सच तो यह है कि शिंदे द्वारा किसी भी दरार से इनकार करना उन 'अफवाहों' के खिलाफ है कि महायुति आंतरिक कलह की चपेट में है और सत्ता परिवर्तन की जरूरत है। फिर किसी तुलना से बचने के लिए, शिंदे ने कहा कि अगर उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री नहीं बनना चाहते, तो आज शिवसेना एक इकाई होती। पुरानी यादें उपमुख्यमंत्री को मार रही हैं और मुख्यमंत्री में इतनी हिम्मत नहीं है कि वे अपने डिप्टी को पीछे हटने के लिए कह सकें। ऐसा कुछ तो उन्हें विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत के समय करना चाहिए था।

सभी फ़ैसले सर्वसम्मति से लिए जाते हैं, जो आधुनिक समय की समकालीन राजनीति में बोला जाने वाला सबसे बड़ा झूठ है। उदाहरण के लिए, यह भ्रामक बयान कि भाजपा विधायकों ने बैठक की और रेखा गुप्ता को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाने का फ़ैसला लिया! दिल्ली के मुख्यमंत्री को पदभार ग्रहण करते ही जो एक बड़ा फ़ैसला लेना चाहिए था, वह पहले ही छीन लिया गया था, यानी `यमुना की सफ़ाई' मिशन।

मौजूदा दरार के लिए किसे दोषी ठहराया जाना चाहिए? भाजपा के शीर्ष पर तंबू फैलाये ऑक्टोपस को? वह व्यक्ति जिसका नाम नहीं लिया जा सकता या जिसे बेबाक मज़ाक का निशाना नहीं बनाया जा सकता? वह व्यक्ति जिसे महाराष्ट्र की जीत की तरह दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा की जीत का श्रेय लेने के लिए चुना गया था? महाराष्ट्र में सरकार बनाने के लिए भाजपा को शिंदे सेना की ज़रूरत नहीं थी और पहले तो उपमुख्यमंत्री की ज़रूरत ही नहीं थी, दो की तो बात ही छोड़िए! मुख्यमंत्री फडणवीस समेत हर कोई जानता है कि भाजपा में कौन फ़ैसला लेता है, किसे फैसला लेने की इजाज़त है। यह भी हर कोई जानता है कि एक व्यक्ति वाली भाजपा नेतृत्व में तानाशाही की प्रवृत्ति है।

सभी फ़ैसले सर्वसम्मति से लिए जाते हैं, जो आधुनिक समय की समकालीन राजनीति में बोला जाने वाला सबसे बड़ा झूठ है। उदाहरण के लिए, यह भ्रामक बयान कि भाजपा विधायकों ने बैठक की और रेखा गुप्ता को दिल्ली का मुख्यमंत्री बनाने का फ़ैसला लिया! दिल्ली के मुख्यमंत्री को पदभार ग्रहण करते ही जो एक बड़ा फ़ैसला लेना चाहिए था, वह पहले ही छीन लिया गया था, यानी 'यमुना की सफ़ाई' मिशन, जिसे दिल्ली के उपराज्यपाल ने 'रेखा गुप्ता' के लॉन्च से ठीक पहले लॉन्च किया था- मुख्यमंत्री गुप्ता अब झाग उड़ते हुए देख सकती हैं! यमुना नदी तट पर विकास कार्य में यमुना को साबरमती नदी तट के बराबर खड़ा करने की क्षमता है, जहां प्रधानमंत्री मोदी ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को झूले पर घुमाया था, जिसे शी आज भी अच्छी तरह याद रखेंगे।

यह उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के बीच दरार से ध्यान हटाने के लिए नहीं है, जो कि कोई बड़ी घटना नहीं थी, अगर फडणवीस आलाकमान के दबाव में आकर शिंदे सेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार गुट के साथ सत्ता साझा करने के लिए सहमत नहीं होते।

फिर शिंदे भाजपा के पिछलग्गू की तरह व्यवहार भी नहीं कर रहे हैं। उपमुख्यमंत्री अपनी खुद की यात्रा की योजना बनाने में व्यस्त हैं। शिंदे सेना के सांसदों, शिंदे सेना के विधायकों और शिंदे सेना पार्टी के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर शिंदे अपनी सेना की रणनीति तैयार कर रहे हैं।

शिंदे ने भाजपा नेतृत्व की किताब से सीख लेते हुए एक समानांतर व्यवस्था स्थापित की है, जिसका उदाहरण मंत्रालय में एक चिकित्सा सहायता प्रकोष्ठ है, जो शिंदे की पहल है, जो आम तौर पर 'लोगों की मदद करने' के लिए है। इस पर कौन आपत्ति करेगा?

'उपमुख्यमंत्री का चिकित्सा सहायता प्रकोष्ठ पहले भी स्थापित किया गया था। यह मुख्यमंत्री के चिकित्सा राहत कोष प्रकोष्ठ के साथ समन्वय करेगा और गरीब और जरूरतमंद मरीजों की मदद करेगा। इसलिए काम का दोहराव नहीं है। केवल एक सीएम वार-रूम है। अब भी प्रमुख परियोजनाओं को वार रूम से आगे बढ़ाया जायेगा।'

क्या यही है, फडणवीस और शिंदे के बीच तथाकथित दरार? इसमें छिपे हुए तत्व होने चाहिए। शायद शिंदे नहीं चाहते कि उनके समर्थक उद्धव बालासाहेब ठाकरे की सेना में वापस चले जायें या, क्या इसका संबंध आगामी मुंबई नगर निगम चुनावों से है। यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि जब मुंबई में नगर निगम चुनावों की बात आती है तो शिवसेना (यूबीटी) को शिंदे सेना पर बढ़त हासिल है, जो देश की वित्तीय राजधानी में वर्षों से शिवसेना के वर्चस्व पर निर्भर करता है। शिंदे ने अपने समर्थकों को यह बात बताई और उनसे कहा कि वे शिवसेना-यूबीटी को एक और शिकस्त देने के लिए तैयार रहें, जैसा कि उन्होंने 2024 के विधानसभा चुनावों में किया था।

मंगलवार को शिंदे ने पार्टी कार्यकर्ताओं से आगामी निकाय चुनावों की तैयारी करने और शिवसेना-यूबीटी को हराने के लिए कहा, जैसा कि उन्होंने 2024 के चुनावों में किया था, जिसके बारे में शिंदे ने दावा किया था कि इसने शिवसेना-यूबीटी को 'एक बड़ा झटका' दिया है। शिंदे का मानना है कि निकाय चुनावों में उद्धव ठाकरे की सेना को हराने से बालासाहेब ठाकरे द्वारा स्थापित सेना और भी टूट जायेगी तथा शिंदे सेना का विस्तार होगा।

शिंदे कहते हैं कि उनकी शिवसेना को 'विस्तार करना चाहिए' और निकाय चुनाव शिवसेना-यूबीटी के लिए मृत्यु-घंटी बजा देंगे। संक्षेप में, उपमुख्यमंत्री शिंदे के पास शिवसेना के अपने गुट के लिए बड़ी योजनाएं हैं और वे 'कार्य करने वाले' हैं। स्वाभाविक रूप से, भाजपा एकनाथ शिंदे से सावधान है और बृहन्मुंबई नगर निगम चुनाव एक परीक्षा है, जिसमें शिंदे और उद्धव बालासाहेब ठाकरे दोनों ही जीत के लिए लड़ रहे हैं।

इस मामले में मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस सबसे अलग हैं, जो विधानसभा चुनाव के बाद सबसे आगे थे,जब एक पूर्ण हिंदुत्व-आधारित रणनीति ने उन्हें बड़ा बहुमत दिलाया था। लेकिन एक व्यक्ति के नेतृत्व में 'सबका साथ, सबका विकास' की वापसी के साथ, 'बटेंगे तो कटेंगे' अब चलन में नहीं है। मुख्यमंत्री फडणवीस ने अपनी सख्त छवि खो दी है, जबकि शिंदे खुद को 'प्रतिस्थापन' के रूप में पेश कर रहे हैं।

शिंदे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ तुलना करने की कोशिश की, उन्होंने कहा, 'हम विकास का विरोध करने वालों के खिलाफ लड़ाई में हैं', लगभग ऐसा ही जैसे मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस मोदी और मोदी के मार्की 'विकसित भारत' के बीच खड़े हों। इस बीच, मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस शिंदे के सामने अपनी धार खो रहे हैं, जिन्हें 'सुपर चीफ मिनिस्टर' को जवाब देने की ज़रूरत नहीं है।

ट्रम्प के सामने घुटने न टेके भारत

दुनिया को फिर से ठीक-ठाक करने के अपने बेतुके प्रोजेक्ट को अंजाम देने में व्यस्त अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मुलाकात की है। इस तरह ट्रम्प के राष्ट्रपति पद संभालने के बाद मिलने वाले कुछ नेताओं में मोदी शामिल हैं। न्यूयॉर्क टाइम्स ने इस मुलाकात पर कहा- ' यह स्पष्ट हो गया कि मोदी ट्रम्प को खुश करने वाले नवीनतम नेता थे।'

आत्ममुग्ध, अहंकारी, यहां तक कि आत्मकेंद्रित के रूप में वर्णित एक शक्तिशाली विश्व नेता को खुश करने में सिद्धांत रूप में कुछ भी गलत नहीं है। तो भी खुश करने की यह कोशिश उन स्थितियों और नीतियों के अति उत्साही समर्थन से अलग है जिन्होंने दुनिया भर में कई सवाल एवं चिंताएं खड़ी की हैं। भारत ने ट्रम्प की प्रशंसा एक प्रेरक नेता के रूप में की लेकिन यह सब कहीं न कहीं अलग क्षेत्र में चला गया जब 'विस्किट भारत' (विकसित भारत) का विचार 'मेगा' (एमएजीए 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' का मतलब- 'अमेरिका को फिर से महान बनाओ') की राजनीति की भाषा में बदल गया।

मोदी ने इसे इस तरह व्यक्त किया- 'अगर मैं अमेरिका की भाषा में कहूं तो विकसित भारत का मतलब है 'मेक इंडिया ग्रेट अगेन' यानी 'मिगा'- एमआईजीए। जब संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत एक साथ काम करते हैं यानी 'मेगा जब 'मिगा' से जुड़कर काम करेगा तो समृद्धि के लिए 'मेगा' साझेदारी बनती है तथा यह मेगा भावना हमारे लक्ष्यों को नया पैमाना एवं दायरा देती है।'

जगदीश रत्तनानी

यदि राष्ट्र के पास एक ऐसी विदेश नीति हो जिस पर सभी दल सहमत हों, उसे अपना सकें और राजनीतिक विभाजनों से परे भारतीय आम सहमति के रूप में पेश कर सकें तो मोदी और भारत को इसमें मदद मिलेगी । इसके लिए भाजपा को कांग्रेस एवं अपने पक्ष के अन्य दलों की जरूरत है जो ट्रम्प के सामने मजबूत, स्पष्ट और विशिष्ट मांगों का एक सेट रखें।

यह अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा इस तथ्य के बावजूद आई कि मोदी के साथ बैठक से कुछ घंटे पहले ही ट्रम्प ने बिना किसी हिचकिचाहट के पारस्परिक टैरिफ की घोषणा की जिसका स्पष्ट रूप से भारत पर असर पड़ेगा। ट्रम्प ने वास्तव में मोदी के साथ अपनी टिप्पणी में टैरिफ को रेखांकित करते हुए भारत को 'दुनिया में सबसे अधिक टैरिफ वाला देश' कहा और कहा कि 'भारत जो भी शुल्क लेगा, हम उससे वसूलेंगे।' यह विशेष रूप से आश्चर्यजनक नहीं है। यह हमेशा स्पष्ट था कि ट्रम्प अपने नियमों के अनुसार खेलेंगे और जैसा उन्होंने अन्य देशों के साथ किया है, वे भारत को दबाव में डालेंगे। उनके कुछ तरीके उनकी पुस्तक 'आर्ट ऑफ द डील' में बताए गए सरल विचारों पर आधारित हैं- एक अहंकारी रियल एस्टेट डेवलपर की मैनुअल जिसे अन्य क्षेत्रों और स्वयं जीवन में लागू करने के लिए बनाया गया है। 1997 में आई इस पुरानी किताब के अध्याय- 2 को 2005 में एक बड़े बाजार संस्करण में पुन: प्रकाशित किया गया जिसका शीर्षक है 'ट्रम्प कार्ड्स: द एलिमेंट्स ऑफ द डील'। किताब इस प्रकार शुरू होती है- 'सौदा करने का मेरा तरीका काफी सरल व सीधा है। मैं बहुत ऊंचा लक्ष्य रखता हूं और फिर मैं बस जो चाहता हूं उसे पाने के लिए जोर लगाता रहता हूं। कभी-कभी मैं जितना चाहता हूं उससे कम पर समझौता कर लेता हूं लेकिन ज्यादातर मामलों में मुझे फिर भी वही मिलता है जो मैं चाहता हूं।'

अमेरिकी विदेश नीति हमेशा अमेरिकी हितों के बारे में रही है जो अल्पकालिक और एक साधन द्वारा चिह्नित है, जिसमें खुलेपन, लोकतंत्र या शांति के सिद्धांतों के कई खोखले दावे हैं। अब मुखौटा गिर गया है, मूल्यों का ढकोसला खत्म हो गया है और ताकत का नंगा खेल शुरू हो गया है। आगे बढ़ने की उम्मीद करते हुए भारत को इस साझेदारी को ध्यान से नेविगेट करने की आवश्यकता होगी और इसलिए भारत को पूछने व रेडलाइन तथा गैर-परक्राम्य की अपनी सूची के साथ तैयार रहना होगा। संक्षेप में कहें तो ट्रम्प के खेलने के तरीके का उपयोग ट्रम्प के खिलाफ ही करना होगा।

यदि राष्ट्र के पास एक ऐसी विदेश नीति हो जिस पर सभी दल सहमत हों, उसे अपना सकें और राजनीतिक विभाजनों से परे भारतीय आम सहमति के रूप में पेश कर सकें तो मोदी और भारत को इसमें मदद मिलेगी । इसके लिए भाजपा को कांग्रेस एवं अपने पक्ष के अन्य दलों की जरूरत है जो ट्रम्प के सामने मजबूत, स्पष्ट और विशिष्ट मांगों का एक सेट रखें बजाय इसके कि वे दूसरे पक्ष की हर मांग के आगे झुक जाएं।

लेकिन विदेशी मामलों में भी राजनीतिक कटुता आ गई है। नौकरशाह से विदेश मंत्री बने एस. जयशंकर ने विपक्षी नेताओं के खिलाफ व्यक्तिगत रूप से कटाक्ष करके इसमें कुछ इज़ाफा किया है जो जाहिर तौर पर द्विदलीय समर्थन की कीमत पर भाजपा तथा प्रधानमंत्री के साथ उनकी स्थिति को सुरक्षित करता है। ट्रम्प प्रशासन द्वारा अमेरिका में अनधिकृत भारतीयों को निर्वासित करने की प्रक्रिया शुरू करने के तरीके की औपचारिक और सार्वजनिक रूप से निंदा करने के लिए इस तरह की कटुता के बिना भी सर्वदलीय आम सहमति बनाना मुश्किल नहीं होना चाहिए था।

निर्वासन आदेशों के तहत भारतीय नागरिकों को भेजने के लिए सैन्य विमान का उपयोग और अमेरिकी एजेंसियों द्वारा एक वीडियो में जंजीरों में बंधे भारतीय नागरिकों का वीडियो विधिवत प्रचारित करने का कृत्य अनुचित तथा भारतीय नागरिकों के सम्मान और अधिकारों की कीमत पर भारत की नकारात्मक छवि दिखाने की कोशिश करता है। यह चौंकाने वाली बात है कि भारतीयों के साथ भी वैसा ही व्यवहार किया जा रहा है जैसा वेनेजुएला के कुछ गिरोह के सदस्यों के साथ हो रहा है और जिन्हें 'बेहद खतरनाक व आपराधिक अवैध एलियंस' कहा जाता है तथा जिन्हें क्यूबा में अमेरिका संचालित कुख्यात ग्वांतानामो बे जेल शिविरों में भेज दिया गया है।

भारतीयों के साथ ऐसा व्यवहार करने के लिए भारत को अमेरिका की निंदा करनी चाहिए। प्रधानमंत्री ने इस पर खुलकर बात न करने का फैसला किया। हालांकि उन्होंने बताया कि गरीब लोगों को गुमराह कर अपने जाल में फंसाने वाले और सीमाओं के पार अवैध रूप से लोगों की तस्करी में मदद करने वाले गिरोहों पर अंकुश लगाया जाना चाहिए। यह सही स्थिति है। लेकिन अगला तार्किक कदम यह होगा कि अमेरिका से कहा जाए कि वह बिना दस्तावेज वाले भारतीयों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार न करें या वापस भेजते समय उन्हें बेड़ियों में न डालें।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ और भारतीय विदेश मंत्री को पहले यह कहते हुए उद्धृत किया गया था कि स्तरीय 'यह अमेरिका के लिए सामान्य प्रक्रिया है।' उन्होंने कहा कि निर्वासितों को हटाने के लिए विमानों के उपयोग संबंधी 'आईसीई (अमेरिका के आव्रजन और ग्राहक प्रवर्तन) की मानक संचालन प्रक्रिया 2012 से प्रभावी है। यह बयान तकलीफ में पड़े लोगों की कैसे मदद कर सकता है? आम भारतीयों के साथ हुए इस व्यवहार पर क्या 'विश्व गुरु' राष्ट्र के विदेश मंत्री जयशंकर को शर्म नहीं आती?

अमेरिका से अगर 20 हजार भारतीयों में से सभी को वापस भेजा जाना है तो नियोजित निर्वासन के लिए लगातार उड़ानों की आवश्यकता होगी। यह संख्या बढ़ भी सकती है क्योंकि अमेरिकी आव्रजन विभाग के छापे जारी हैं। जो लोग पकड़े जाते हैं, उन्हें वकीलों, चिकित्सा सहायता और अन्य सभी सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए और इन सुविधाओं के बिना हिरासत में रखने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उनमें से किसी को भी जंजीरों में जकड़ कर वापस भेजने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

यहां उन अन्य मुद्दों की बात नहीं हो रही है जिन पर ट्रम्प आगे बढ़ना जारी रखेंगे। दोनों देशों की टीमों के बीच ऊर्जा सौदों और रक्षा आपूर्ति के बारे में चर्चा जारी है। अमेरिका के साथ भारत एक सीमा तक ही खेल खेल सकता है। भारत किस सीमा तक झुक सकता है यह बताने के लिए एक स्पष्ट रेखा खींचनी जरूरी है। ट्रम्प को खुश करने के लिए भारत को झुकना नहीं चाहिए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। सिंडीकेट: द बिलियन प्रेस)

खेल जगत

कोकीन स्मगलर बना राडजा निंगगोलन, चढ़ा पुलिस के हत्थे

नई दिल्ली। बेल्जियम के पूर्व अंतरराष्ट्रीय राडजा निंगगोलन को गिरफ्तार किया गया है. ब्रुसेल्स पब्लिक प्रोसिक्यूटर आफिस ने कहा कि साउथ अमेरिका से यूरोप में कोकीन की तस्करी की व्यापक जांच के तहत इस खिलाड़ी को दबोचा गया। ब्रुसेल्स फेडरल पुलिस ने सोमवार सुबह मुख्य रूप से एंटवर्प प्रांत और ब्रुसेल्स के आसपास तीस स्थानों पर तलाशी ली, जिसमें 2.7 किलो (लगभग 6 पाउंड) कोकीन के साथ-साथ नकदी और बड़ी संख्या में लग्जरी आइटम जब्त किए गए। 36 वर्षीय निंगगोलन ने बेल्जियम के लिए 30 मैच खेले हैं, लेकिन मार्च 2018 के बाद से अपनी टीम के लिए नहीं खेले हैं। अपने उग्र स्वभाव के लिए प्रसिद्ध इस सेंट्रल मिडफील्डर ने अपना अधिकांश करियर इटली में बिताया, विशेष रूप से रोमा और इंटर मिलान के लिए खेलते हुए।

शमी एक लीजेंड, चोट के बाद वापसी करना कभी आसान नहीं होता : गिल

■ शमी ने 14 महीने बाद चोट से उबरकर वापसी की और आते ही पांच विकेट झटककर इतिहास रच दिया

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी के अपने पहले मुकाबले में बांग्लादेश को छह विकेट से हराकर शानदार शुरुआत की। इस जीत के बाद उप-कप्तान शुभमन गिल ने मोहम्मद शमी की तारीफ करते हुए कहा कि चोट के बाद वापसी करना आसान नहीं होता, लेकिन शमी ने शानदार गेंदबाजी की और वह सच में एक दिग्गज खिलाड़ी हैं। शमी ने 14 महीने बाद चोट से उबरकर वापसी की और आते ही पांच विकेट झटककर इतिहास रच दिया। वह वनडे क्रिकेट में सबसे तेज 200 विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज बन गए और आईसीसी के 50 ओवरों के टूर्नामेंट में भारत के सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज भी बन गए। गिल ने बीसीसीआई टीवी पर एक वीडियो पोस्ट में कहा कि जब भी शमी आईसीसी टूर्नामेंट में गेंदबाजी करने आते हैं, तो पांच विकेट से कम नहीं लेते।

कभी 4, कभी 5, फिर 4, फिर 5... कई बार तो हमें पता भी नहीं चलता कि कब उन्होंने पांच विकेट पूरे कर लिए। उन्होंने यह भी कहा कि मेहदी हसन हमारे खिलाफ अच्छा खेलते हैं। जब हम बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज खेल रहे थे, तब भी उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया था। लेकिन जिस लाइन और लेंथ पर शमी ने गेंदबाजी की, उससे नए बल्लेबाज पर लगातार दबाव बना रहा। उन्होंने लगातार सही लाइन पर गेंद डाली और स्विंग कराई, जिससे बल्लेबाज को रन बनाने में मुश्किल हुई। चोट के बाद वापसी करना आसान नहीं होता, लेकिन शमी ने जिस तरह वापसी की है, वह उन्हें एक दिग्गज खिलाड़ी बनाता है। 229 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए शुभमन गिल ने 129 गेंदों में नाबाद 101 रन बनाए, जिसमें नौ चौके और दो छक्के शामिल थे। भारत ने 21 गेंद बाकी रहते जीत हासिल की। गिल ने कहा कि यह आईसीसी टूर्नामेंट में मेरा पहला शतक है। वर्ल्ड कप में मैं दो-तीन बार चूक गया था, एक बार तो 90 पर आउट हो गया था।

चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 : शुभमन गिल की शतकीय पारी, छह विकेट से जीती टीम इंडिया

दुबई। दुबई अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में टीम इंडिया ने बांग्लादेश को छह विकेट से हराकर शानदार शुरुआत की। इस जीत में स्टार बल्लेबाज शुभमन गिल का सबसे बड़ा योगदान रहा। उन्होंने 129 गेंद में नाबाद 101 रन की धैर्यपूर्ण पारी खेलकर टीम को जीत दिला दी। बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। लेकिन, यह फैसला उस वक्त गलत साबित होने लगा जब टीम इंडिया के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी की आग उगलती गेंदों के आगे बांग्लादेशी बल्लेबाजों ने हथियार डाल दिए। शमी ने 53 रन देकर पांच विकेट झटके और बांग्लादेश 49.4 ओवर में महज 228 रन ही बना पाई। लक्ष्य का पीछा करने उतरी टीम इंडिया की ओर से गिल ने वनडे इंटरनेशनल में अपना आठवां शतक जड़ा। उन्होंने अपनी पारी में नौ चौके और दो गगनचुंबी छक्के भी जड़े। भारत ने 46.3 ओवर में 231/4 के स्कोर के साथ मैच जीत लिया। कप्तान रोहित शर्मा के साथ गिल ने पहले विकेट के लिए 69 रनों की साझेदारी की।

शमी जब भी आईसीसी टूर्नामेंट में खेलते हैं तो अलग गेंदबाज बन जाते हैं : पीयूष चावला

दुबई। भारत के पूर्व स्पिनर पीयूष चावला ने मोहम्मद शमी की आईसीसी टूर्नामेंटों में प्रभावशाली वापसी की सराहना की। उनके प्रदर्शन के दम पर मेन इन ब्लू टीम की बांग्लादेश पर चैंपियंस ट्रॉफी गेम में शानदार जीत हुई। चावला ने कहा कि जब भी शमी आईसीसी टूर्नामेंट में खेलते हैं, तो वह एक अलग गेंदबाज बन जाते हैं। शमी ने चैंपियंस ट्रॉफी के पहले मैच में बांग्लादेश पर भारतीय टीम की शानदार जीत में अहम भूमिका निभाई थी और पांच विकेट हासिल किए थे। शमी ने बेहतर प्रदर्शन किया और 5-5× के आंकड़े के साथ भारत को गुरुवार को दुबई में बांग्लादेश के खिलाफ छह विकेट से शानदार जीत दिलाई। दुबई में पांच विकेट चटकाने के साथ ही शमी आईसीसी वनडे मुकाबलों में भारत के सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए हैं।

विराट खराब फॉर्म से बाहर आने के लिए कुछ ज्यादा ही प्रयास कर रहे हैं : कुंबले

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। भारत के पूर्व कप्तान और मुख्य कोच अनिल कुंबले को लगता है कि विराट कोहली अपनी खराब फॉर्म से बाहर आने के लिए 'बहुत ज्यादा प्रयास' कर रहे हैं। कोहली का खराब फॉर्म चैंपियंस ट्रॉफी में टीम इंडिया के पहले मुकाबले में जारी रहा जब उन्होंने बांग्लादेश के खिलाफ 38 गेंदों पर 22 रनों की पारी खेली।

■ विराट ने 2023 विश्व कप के बाद खेली गई छह वनडे पारियों में सिर्फ 137 रन बनाए

विराट कोहली अपनी शुरुआत को बड़ी पारी में बदलने में नाकाम रहे और लेग स्पिनर रिशाद हुसैन का शिकार हो गए। हालांकि, सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल के नाबाद 101 और केएल राहुल के 41 रनों की बदौलत भारत ने छह विकेट से जीत दर्ज की। कोहली की खराब फॉर्म भारतीय टीम के लिए चिंता का विषय रही है क्योंकि पूर्व कप्तान ने 2023 विश्व कप के बाद खेली गई छह वनडे पारियों में सिर्फ 137 रन बनाए हैं, जिसमें एक अर्द्धशतक शामिल है। पर्थ में शतक को छोड़कर, ऑस्ट्रेलिया में भारत के पांच मैचों के टेस्ट दौरे के दौरान भी उनका संघर्ष जारी रहा। कुंबले ने ईएसपीएन क्रिक इन्फो मैच डे पर कहा कि खासकर सफेद गेंद वाले क्रिकेट में खराब दौर से गुजरने के बाद उन्होंने लंबे समय तक उस तरह का प्रदर्शन नहीं किया है। मुझे लगता है कि वह कुछ ज्यादा ही कोशिश कर रहे हैं।

कुंबले ने आगे कहा कि आपके पास ऐसे खिलाड़ी हैं, जो पहले भी ऐसा कर चुके हैं और हर कोई आपकी तरफ देखता है और कहता है कि यह वह व्यक्ति है, जो खेल को अपने पक्ष में ले जाएगा और वह टीम में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है। कुंबले ने कहा कि जब आप पर इस तरह का दबाव होता है और आपसे इस तरह की अपेक्षा की जाती है, तो आप अचानक से इन सभी चीजों को अनावश्यक महत्व देना शुरू कर देते हैं और फिर अच्छा प्रदर्शन करने की पूरी कोशिश करते हैं। जब आप ऐसा करते हैं, तो आप वास्तव में तनाव मुक्त नहीं होते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि वह कुछ 'यादा ही कोशिश कर रहे हैं।

आप देख सकते हैं कि वह अपनी पारी किस तरह से खेल रहे हैं। उसे बस इसके बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। रोहित की तरह विराट को भी किसी और चीज के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। कुंबले ने कहा कि कोहली के पिछले सभी छह आउट स्पिन के कारण हुए हैं, जिनमें से पांच लेग स्पिनरों के कारण हुए हैं। उनका मानना है कि यह कोहली द्वारा स्ट्राइक रोटेट करने पर ध्यान देने के बजाय रन बनाने के लिए बहुत ज्यादा प्रयास करने का नतीजा है। कुंबले ने कहा कि स्पिन के खिलाफ शुरुआत करने के लिए, ऐसी सतहों पर आपको बहुत ज्यादा आत्मविश्वास की जरूरत होती है।

भारत-पाक चैम्पियंस ट्रॉफी भिड़ंत पर सिद्धू ने कहा : 'यह महासंग्राम होगा'

यह सबसे बड़ी लड़ाई है। इससे बड़ी कोई बात नहीं है। मुझे लगता है कि यह तनाव है जो सभी को एक साथ रखता है : नवजोत सिंह सिद्धू

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। भारत के पूर्व बल्लेबाज नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि रविवार को दुबई में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाली चैंपियंस ट्रॉफी की भिड़ंत एक 'महामुकाबला' होगी। अनुभवी कमेंटेटर ने कहा कि जो टीम दबाव में बेहतर प्रदर्शन करेगी, उसके पास ब्लॉकबस्टर मुकाबला जीतने का मौका होगा।

सिद्धू ने जियोहॉटस्टार के ग्रेटेस्ट राइवलरी रिट्र्न्स के एक विशेष एपिसोड में कहा कि यह सबसे बड़ी लड़ाई है। इससे बड़ी कोई बात नहीं है। मुझे लगता है कि यह तनाव है जो सभी को एक साथ रखता है। जब 150 करोड़ लोग आपसे जीत की उम्मीद करते हैं, तो वे कभी हार स्वीकार नहीं करेंगे। प्रतिशोध की संस्कृति है। यह खेल हाथों के बीच से ज्यादा कानों के बीच खेला जाता है - यह एक मनोवैज्ञानिक लड़ाई है। चारों ओर बहुत सारी नर्वस एनर्जी तैर रही है, लेकिन जो पक्ष इसे सकारात्मक ऊर्जा में बदल देता है, वही जीतता है। भारत के पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने भी इस ब्लॉकबस्टर मैच पर अपने विचार साझा किए और 2003 में पाकिस्तान के खिलाफ खेलने के अपने पहले अनुभव को याद किया। उन्होंने कहा कि यह मेरे द्वारा खेले गए सबसे बेहतरीन वनडे मैचों में से एक है। मेरे दोस्त शाहिद अफरीदी ने उस मैच में बहुत सारे 'दयालु शब्दों' के साथ मेरा स्वागत किया। तब मुझे वास्तव में समझ में आया कि भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता का क्या मतलब है। इसे टीवी पर देखना एक बात थी, लेकिन इसमें खेलना पूरी तरह से अलग था। मुझे भारी दबाव याद है, लेकिन उस मैच में अच्छा प्रदर्शन करने से मुझे भविष्य में एक बेहतर खिलाड़ी बनने का आत्मविश्वास मिला। पूर्व पाकिस्तानी कप्तान शाहिद अफरीदी ने इस घटना के बारे में बताया और बताया कि उस मैच में क्या हुआ था। उन्होंने कहा कि युवराज उस समय युवा थे, बस टीम में अपनी जगह तलाश रहे थे।

वेंकटेश्वरा लायंस ने जीत के साथ फाइनल में प्रवेश किया

लखनऊ, 21 फरवरी (एजेंसियां)। वेंकटेश्वरा लायंस ने 10 गेंदों के शेष रहते एलिमिनेटर मुकाबले में जीत के साथ फाइनल में प्रवेश कर लिया। अब धर्मेंद्र यादव की अगुआई वाली टीम शनिवार को लखनऊ के केडी सिंह बाबू स्टेडियम में होने वाले खिताबी मुकाबले में मथुरा वॉरियर्स से भिड़ेगी। यह मैच शाम छह बजे से खेला जाएगा। शुक्रवार को खेले गए एलिमिनेटर मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी सुपर स्ट्राइकर्स ने 10 ओवर में नौ विकेट गंवाकर 74 रन बनाए। जवाब में वेंकटेश्वरा लायंस ने 8.2 ओवर में चार विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर लिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेंकटेश्वरा लायंस की शुरुआत धीमी हुई थी। शानू अलीगढ़ और प्रदीप यादव के बीच पहले विकेट के लिए 16 रनों की साझेदारी हुई, जिसे बलराम पांडे ने तोड़ा। उन्होंने प्रदीप को उमर खान के हाथों कैच कराया। वह छह रन बनाकर आउट हुए। वहीं, शानू 10 रन बना सके। इस मैच में कुमार गौरव ने 28, गगन ने सात, वसीक राजा ने 15* और धर्मेंद्र कुमार यादव ने सात* रन बनाए।

सार संक्षेप

मुंबई को 80 रन से हराकर विदर्भ रणजी ट्रॉफी के फाइनल में

नागपुर। हर्ष दुबे (पांच विकेट), यश ठाकुर और पार्थ रेखड़े (दो-दो विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत विदर्भ ने रणजी ट्राफी के दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले के पांचवें दिन शुक्रवार को मुम्बई को 325 रन पर समेटकर 80 रनों की जीत के साथ टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बना ली हैं। मुम्बई ने कल के तीन विकेट पर 83 रन से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में यश ठाकुर ने शिवम दुबे (12) को आउट कर विदर्भ को पांचवीं सफलता दिलाई। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये सूर्यकुमार यादव ने आकाश आनंद के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। हर्ष दुबे ने सूर्यकुमार यादव (23) को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। हर्ष का अगला शिकार आकाश आनंद (39) रहे। इसके बाद शम्स मुलानी और शार्दुल ठाकुर मुम्बई की धूमिल होती उम्मीद को फिर से जगा दिया। शम्स मुलानी (46) के रनआउट होने पर मुम्बई को बड़ा झटका लगा। इसके बाद यश ठाकुर ने शार्दुल ठाकुर (66) को बोल्डकर पवेलियन भेज दिया।

एंड्रीवा दुबई टेनिस चैम्पियनशिप के सेमीफाइनल में

दुबई। रूस की टेनिस खिलाड़ी मीरा एंड्रीवा ने बड़ा उलटफेर करते हुए विश्व की दूसरे नंबर की पोलेंड खिलाड़ी इगा स्वियाटेक को हराकर दुबई टेनिस चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में अपनी जगह पक्की कर ली है। गुरुवार को खेले गये मुकाबले में 17 वर्षीय एंड्रीवा ने इगा को क्वार्टर फाइनल में 6-3, 6-3 से हराया। इस जीत के साथ ही रूस की एंड्रीवा टूर्नामेंट के अंतिम चार में पहुंचने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी बन गई हैं। एंड्रीवा दूसरे सेट में 3-1 से पिछड़ रही थीं, लेकिन इसके बाद उन्होंने लगातार पांच गेम जीतकर पांच बार की ग्रैंड स्लैम विजेता स्वियाटेक को एक घंटे 36 मिनट तक चले मुकाबले में हरा दिया। सेमीफाइनल में एंड्रीवा का मुकाबला रूस में जन्मी कज़ाकिस्तान की पेशेवर टेनिस खिलाड़ी एलेना रयबाकिना से होगा।

केरल रणजी के फाइनल में

अहमदाबाद। आदित्य सरवटे और जलज सक्सेना (चार-चार विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत केरल और गुजरात के बीच खेला गया पहला सेमीफाइनल मुकाबला शुक्रवार को ड्रा रहा और केरल ने पहली पारी में मिली दो रनों की मामूली बढ़त के आधार पर रणजी ट्रॉफी के फाइनल में जगह पक्की कर ली है। गुजरात ने कल के सात विकेट पर 429 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में सरवटे ने जयमीत पटेल (78) को मोहम्मद अजहरुद्दीन के हाथों स्टंप करवाकर केरल को 436 के स्कोर पर आठवीं सफलता दिलाई। इसके बाद सरवटे ने सिद्धार्थ देसाई (30) को पगबाधा आउट कर पवेलियन भेज दिया। अरजान नागवासवाला (10) भी सरवटे का शिकार बने। केरल के गेंदबाजों ने गुजरात की पूरी टीम 174.4 ओवर में 455 के स्कोर पर समेट कर दो रनों की बढ़त ले ली।

राष्ट्रीय पैरा एथलेटिक चैम्पियनशिप में हरियाणा बना चैम्पियन

चंडीगढ़, 21 फरवरी (एजेंसियां)। खेल के क्षेत्र में देशभर में सिरमौर बने हरियाणा के पैरा एथलीटों ने भी चेन्नई में आयोजित 23वीं राष्ट्रीय पैरा एथलेटिक चैंपियनशिप में अपना जलवा दिखाते हुए 'चैंपियनशिप ट्रॉफी' अपने नाम कर ली। राज्य के पैरा एथलीटों द्वारा चैंपियन ट्रॉफी जीतने पर 'पैरा स्पोर्ट्स एसोसिएशन ऑफ़ हरियाणा' की अध्यक्ष एवं हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री कुमारी आरती सिंह राव ने खिलाड़ियों को बधाई देते हुए कहा है कि हौसलों के आगे कोई भी शारीरिक बाधा आड़े नहीं आती है, यह हमारे खिलाडियों के जोश और जज़्बे ने साबित कर दिखाया है। सुश्री राव ने कहा कि प्रदेश के खिलाड़ी तो मेहनती हैं ही, प्रदेश सरकार भी खिलाड़ियों को उनके खेल में बेहतरीन प्रदर्शन के लिए हर संभव सहायता प्रदान कर रही है। राज्य सरकार की खेल नीति की बदौलत प्रदेश के खिलाड़ी सभी खेलों में अपनी धाक जमा रहे हैं। पैरा स्पोर्ट्स एसोसिएशन ऑफ़ हरियाणा के महासचिव ज्योति छाबड़ा ने बताया की इस प्रतियोगिता में हरियाणा के 172 खिलाड़ियों की टीम ने हिस्सा लिया था जिनमें से 113 खिलाड़ियों ने मैडल प्राप्त कर प्रदेश को चैंपियनशिप ट्रॉफी दिलवाने में भागीदारी की। इनमें पुरुष खिलाड़ियों ने 66 मैडल और महिला खिलड़ियों ने 37 मैडल जीते हैं। हरियाणा की टीम ने कुल 53 स्वर्ण पदक, 31 रजत पदक और 29 काँस्य पदक प्राप्त किए हैं द्य सुश्री छाबड़ा ने बताया कि पैरालिंपिक कमेटी ऑफ़ इंडिया के तत्वधान में तमिलनाडु पैरालिंपिक स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा चेन्नई तमिलनाडु में 23 वीं राष्ट्रीय पैरा एथलेटिक चैंपियनशिप का आयोजन करवाया जिसमें 25 राज्यों के 1350 दिव्यांग खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

भारत का 49 सदस्यीय दल स्पेशल ओलम्पिक वर्ल्ड विंटर गेम्स में शिरकत करेगा

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। इटली के ट्यूरिन में आठ मार्च से शुरु होने वाले स्पेशल ओलंपिक वर्ल्ड विंटर गेम्स 2025 में भारत का 49 सदस्यीय दल शिरकत करेगा। इटली के ट्यूरिन में आठ से 15 मार्च होने वाली इस प्रतियोगिता में भारत के 30 एथलीट और 19 लोगों का सपोर्ट स्टाफ शामिल हैं। भारतीय खिलाड़ी छह खेल स्पर्धाओं-अल्पाइन स्कीइंग, क्रॉस कंट्री स्कीइंग, फ्लोरबॉल, शॉर्ट-ट्रैक स्पीड स्केटिंग, स्नोबोर्डिंग और स्नोशूइंग में प्रतिस्पर्धा करेंगे। स्पेशल ओलंपिक वर्ल्ड विंटर गेम्स के 12वें संस्करण में आठ खेल स्पर्धाएं शामिल हैं और इनमें 102 देशों के 1,500 से अधिक एथलीट 621 अपने कोचों की देखरेख में अपना जौहर दिखाएंगे ।

बीएसएफ ने `बॉर्डरमैन मैराथन 2025' के चौथे संस्करण का किया आयोजन

■ भव्य आयोजन की गरिमा को बढ़ाने के लिए भारतीय पुलिस सेवा बीएसएफ के महानिदेशक दलजीत सिंह चौधरी मुख्य अतिथि होंगे

अमृतसर 21 फरवरी (एजेंसियां)। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) रविवार (23 फरवरी) को अमृतसर में 'बॉर्डरमेन मैराथन 2025' के चौथे संस्करण का आयोजन करने जा रही है। 'हैंड इन हैंड विद वॉर्डर पॉपुलेशन' थीम के आधार पर यह मैराथन न केवल एक खेल आयोजन है, बल्कि सीमावर्ती युवाओं को सशक्त बनाने और स्वस्थ भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। बीएसएफ ने यहां जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि इस भव्य आयोजन की गरिमा को बढ़ाने के लिए भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) बीएसएफ के महानिदेशक दलजीत सिंह चौधरी मुख्य अतिथि होंगे। वर्ष 2022 से आरंभ हुई यह वार्षिक मैराथन, जो एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में आयोजित की जाती है, हर वर्ष अपनी भव्यता और लोकप्रियता में वृद्धि कर रही है। इस वर्ष, यह आयोजन और भी विशाल होने जा रहा है, जिसमें 5200 से अधिक धावक भाग ले रहे हैं, जिनमें भारत के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय पेशेवर एथलीट भी शामिल हैं। पंजाब के छह सीमावर्ती जिलों के युवाओं की बढ़ती भागीदारी इस मैराथन की सफलता और महत्व को और भी मजबूत बनाती है। इस मैराथन में फुल मैराथन (42.195 किमी), हाफ मैराथन (21.097 किमी) और 10 किमी दौड़ जैसी प्रमुख श्रेणियां शामिल हैं, जो अनुभवी एथलीटों और शौकिया धावकों, दोनों के लिए एक बेहतरीन अवसर प्रदान करती हैं। इस वर्ष विशेष रूप से महिलाओं को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए, बीएसएफ ने सभी श्रेणियों में महिलाओं के लिए निःशुल्क पंजीकरण की घोषणा की है, जिससे उनकी भागीदारी को और अधिक बढ़ावा मिलेगा। एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त यह मैराथन गोल्डन गेट, अमृतसर से जेसीपी अटारी तक के खूबसूरत और ऐतिहासिक मार्ग पर आयोजित की जाएगी।

टीम इंडिया चैम्पियंस ट्रॉफी की प्रबल दावेदार, एक तरफा रहे हैं पिछले 10-15 सालों में भारत-पाक मैच : गांगुली

■ भारत के खिलाफ एक और हार उसकी विदाई तय कर सकती है

कोलकाता, 21 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय क्रिकेट टीम ने चैंपियंस ट्रॉफी में अपने अभियान की शुरुआत शानदार की है। पूर्व कप्तान सौरव गांगुली ने कोलकाता में एक इवेंट के दौरान टीम के प्रदर्शन, टीम संयोजन, पाकिस्तान के खिलाफ आने वाले बहुप्रतीक्षित मुकाबले और चैंपियंस ट्रॉफी के संभावित दावेदारों पर बात की। भारत ने दुबई में बांग्लादेश के खिलाफ मौजूदा प्रतियोगिता के पहले मुकाबले में छह विकेट से जीत दर्ज की। हालांकि यह मुकाबला आसान नहीं रहा और बल्लेबाजों को रन बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ा, लेकिन भारतीय टीम की बल्लेबाजी गहराई ने अंत में लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया। इससे पहले भारत के गेंदबाजों ने शानदार काम किया था, जिसमें मोहम्मद शमी ने वापसी के बाद आगे बढ़कर अगुवाई करते हुए पांच विकेट हासिल किए थे। भारतीय टीम को अब 23 फरवरी को दुबई में ही पाकिस्तान के खिलाफ अपना अगला मुकाबला खेलना है। पाकिस्तान अपना पहला मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ हार चुका है। भारत के खिलाफ एक और हार उसकी विदाई तय कर सकती है। इस मैच में भारत टीम के गेंदबाजी संयोजन पर बात करते हुए गांगुली ने कहा कि भारतीय टीम के लिए इस गेंदबाजी संयोजन ने बढ़िया काम किया है। इसलिए टीम कुलदीप यादव, रवींद्र जडेजा और अक्षर पटेल जैसे तीन स्पिनर और तीन तेज गेंदबाजों के साथ जाएगी। जिस तरह से हर्षित राणा ने गेंदबाजी की है, वह काफी अ'छा है। शमी टॉप बॉलर हैं और हार्दिक पांड्या भी बढ़िया कर रहे हैं। पाकिस्तान की टीम स्पिनरों को अच्छा नहीं खेलती है और मुझे लगता है कि दुबई की पिच पर टर्न मौजूद रहेगा। इसलिए भारत के लिए यह संयोजन फायदे का सौदा साबित होगा।

ममता व प्रेक्षा की जोड़ी ने जीता महिला युगल आईडीएएस खिताब

लखनऊ, 21 फरवरी (एजेंसियां)। पीसीडीए (ओ) पुणे की ममता जी. और सीडीए आरटीसी एनएडीएफएम, पुणे की प्रेक्षा जैन की जोड़ी ने 11वां अखिल भारतीय डीएडी बैडमिंटन टूर्नामेंट में महिला युगल आईडीएएस खिताब जीत लिया है। सूर्या खेल परिसर, करियप्पा रोड, कैंट, लखनऊ में आयोजित टूर्नामेंट के महिला युगल आईडीएएस फाइनल में ममता जी. व प्रेक्षा जैन की जोड़ी ने अभिनीत ढिल्लन व एस.संगीता को सीधे गेम में 21-11, 21-14 से हराया। वहीं पुरुष युगल खेल कोटा में पीसीडीए आर्मी लखनऊ के अजय कुमार व शैलेंद्र पावा और महिला युगल ओपन में पीसीडीए आर्मी लखनऊ की मधु ज्ञानचंदानी व पूनम यादव ने फाइनल में जगह पक्की की। पुरुष युगल आईडीएएएस सेमीफाइनल में पीसीडीए आर्मी-पुणे के विक्रम ए.राजापुरे व सीडीए आरटीसी एनएडीएफएम, पुणे के आनंद अग्रवाल ने सीडीए सिकंदराबाद के डा.श्रीनिवास रेड्डी व टी.रामा मूर्ति को 21-13, 21-12 से हराया। पुरुष एकल आईडीएएस सेमीफाइनल में, पीसीडीए -आर्मी-पुणे के विक्रम ए.राजापुरे ने सीडीए आरटीसी एनएडीएफएम, पुणे के दक्ष जैन को 21-17, 21-17 से और सीडीए चेन्नई के डा.धनशेखर रथिनाम ने सीडीए सिकंदराबाद के टी.रामा मूर्ति को 21-19, 22-20 से परास्त कर फाइनल में प्रवेश किया।

सार समाचार

प्रतिभाशाली छात्राओं के खातों में आई लैपटॉप की राशि

बकस्वाहा, देशबन्धु। शासकीय पीएमश्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में लैपटॉप वितरण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण टेलीविजन के माध्यम से छात्रा छात्राओं को दिखाया गया। भोपाल से मुख्यमंत्री द्वारा 12वी बोर्ड परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाली मेधावी छात्राओं को लैपटॉप की राशि प्रदान की गई। विद्यालय के प्राचार्य अरविंद तिवारी ने बताया कन्या हायर सेकेंडरी स्कूल की 18 छात्राओं को लैपटॉप की राशि मिली है। इनमें खुशी तिवारी, चंदना आदिवासी, कुमकुम तिवारी, प्रज्ञा ठाकुर, चहाना यादव, अदिती परिहार, प्रियंका पाल, सोनिया अहिरवारल, पूनम पटेल, संध्या पटेल, उमा लोधी, मुस्कान ठाकुर, जयंती पटेल, आस्था दीक्षित, रामकुमारी विश्वकर्मा, अंजनी लोधी, रोशनी लोधी, संगीता लोधी शामिल हैं।

8 मार्च को लोक अदालत का लाभ जरूर लें : न्यायाधीश

छतरपुर, देशबन्धु। 8 मार्च को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। जिसमें राजीनामा योग्य सिविल एवं क्रिमिनल प्रकरण विद्युत विभाग, नगर पालिका, बैंक, वित्तीय बैंक, ऋण संबंधी एवं दूरसंचार विभाग के प्रीलिटिगेशन एवं न्यायालय में लंबित प्रकरणों का निराकरण किया जाएगा।

प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश रविंद्र सिंह ने बताया कि लोक अदालत के लाभ से पक्षकारों के मध्य आपसी सद्भाव बढ़ता है व कटुता समाप्त होती है। समय, धन व श्रम की बचत होती है। लोक अदालतों में निराकृत मामलों में लगा न्याय शुल्क वापस हो जाता है। लोक अदालत द्वारा पारित आदेश अवार्ड की नि:शुल्क सत्यम्प्रतिलिपि पक्षकारों को तुरंत प्रदान की जाती है। उन्होंने बताया लोक अदालत का आदेश अवार्ड अन्तिम होता है व इसके विरुद्ध कोई अपील नहीं होती है और पक्षकारों के मध्य विवाद हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण छतरपुर ने बताया कि वर्ष 2025 में 8 मार्च, 10 मई, 13 सितंबर और 13 दिसंबर को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा, लोग इनका लाभ जरूर लें।

जनपदों में हो रही सुरक्षा जवान और सुरक्षा सुपरवाइजर की भर्ती

छतरपुर, देशबन्धु। जिला पंचायत के सहयोग से एसआईएस सिक्योरिटी अनूपपुर द्वारा शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार प्रदान करने के लिए सुरक्षा जवान एवं सुरक्षा सुपरवाइजर भर्ती कैंप का एक दिवसीय आयोजन जिले के जनपद पंचायतों में किया जा रहा है।

बताया गया है कि जनपद पंचायत लवकुशनगर में 24 फरवरी को, नौगांव में 25 को, राजनगर में 27 को, छतरपुर में 28 को, बड़ामलहरा में 1 मार्च को, गौरिहार में 3 मार्च को एवं 4 मार्च को बिजावर जनपद कार्यालय में प्रात: 11 बजे से शाम 4:30 बजे तक कैम्प आयोजित किया जाएगा। इच्छुक बेरोजगार युवक सुरक्षा जवान के पद पर जिनकी योग्यता- 10वी पास सहित 3 फोटो, इच्छुक आवेदक अपनी अंकसूची, आधार कार्ड की फोटो कॉपी, दो फोटो, एवं चयनित उम्मीदवार का रजिस्ट्रेशन फार्म शुल्क 350 रुपये के साथ आवेदन कर सकते हैं। भर्ती अधिकारी के मो. 9205055417 से अधिक जानकारी ली जा सकती है।

देवपुर और चितावर मंडल की संयुक्त बैठक में विधायक ने कहा

समग्र विकास के लिए भावी योजनाएं तैयार करें : शर्मा

सिरोंज, देशबन्धु। सिरोंज लटेरी विधानसभा के प्रत्येक ग्रामीण क्षेत्र के विकास का नजरिया स्पष्ट होना चाहिए, इसके लिए सभी पंचायतों के सरपंच पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ताओं के सहयोग से अपनी पंचायतों में शामिल सभी गांवों तथा मजरे टोलो का 5 साल में किए जाने वाले विकास का खाका तैयार कर मुझे उपलब्ध कराएं, ताकि गांवों के नागरिकों की मूलभूत समस्याओं का समाधान बिना किसी भेदभाव के समय पर हो सके।

यह बात भाजपा विधायक उमाकांत शर्मा ने शुक्रवार को ग्रामीण मंडलों द्वारा आयोजित संगठनात्मक बैठक के दौरान कही। वह चितावर एवं देवपुर मंडल की संयुक्त बैठक में कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संगठन पर्व में हमने संगठन की सदस्यता का अभियान बूथ स्तर पर आयोजित किया। वरिष्ठ नेतृत्व में मार्गदर्शन में मंडल अध्यक्षों का चयन हो चुका हैं। अब हमको सभी जाति बिरादरी की सहभागिता से भाजपा संगठन को मजबूती प्रदान करने वाली मंडल कार्यसमितियों का नया निर्माण करना है। उन्होंने बैठक में शामिल ग्रामीण क्षेत्रों के भाजपा जनप्रतिनिधियों से कहा कि आपके ढाई साल का कार्यकाल निकल गया है आने वाले समय में विकास को गति देने की आवश्यकता है।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने ग्रामीण क्षेत्रों में गोपालन तथा गौरक्षा के लिए सरकार द्वारा अगले वर्ष से दूध खरीदने की योजना बनाई है। हमने भी एक हजार गायों के पालन के लिए जनसहयोग से ग्राम जलालपुर में विशाल गौशाला का निर्माण किया है। लटेरी में गौअभ्यारण बनाने की योजना प्रस्तावित है। इसके पहले विधायक शर्मा ने वरिष्ठ भाजपा नेताओं के साथ महापुरुषों के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के बैठक का शुभारंभ किया। बैठक का संचालन जितेंद्र बघेल ने किया। इस अवसर जिला उपाध्यक्ष महेंद्र सिंह दांगी, कैलाश शर्मा, मंडल अध्यक्ष झार सिंह दांगी,चरण सिंह राजपूत,पूर्व जनपद अध्यक्ष संजीव माथुर,हमीर सिंह यादव सहित मंडलों के पदाधिकारी एवं कार्यसमिति के सदस्य मौजूद थे।

तेज आवाज में देर रात तक बज रहे 3 डीजे पुलिस ने जब्त किए

गंजबासौदा, देशबन्धु। शहर में बोर्ड परीक्षाओं के मद्देनजर रखते हुए कलेक्टर के निर्देशों के बावजूद रात 10 बजकर 30 बजे के बाद पुलिस के द्वारा भ्रमण किया जा रहा था तभी तेज आवाज में डीजे बजाने पर पुलिस ने तीन डीजे का संचालन करने वालों पर कोलाहल अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया और डीजे समेत अन्य सामग्री जब्त की। माध्यमिक शिक्षा मंडल की बोर्ड परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए कलेक्टर रोशन कुमार सिंह ने संपूर्ण विदिशा जिले में रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक म्यूजिक सिस्टम, डीजे, बैंड बाजा आदि पर प्रतिबंध लगाया था। इसके तहत सभी थाना क्षेत्रों में डीजे संचालकों को कलेक्टर के निर्देशों और कोलाहल अधिनियम के प्रावधानों से अवगत कराया गया था। इसके बाद भी सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा निर्धारित ध्वनि आवाज से अधिक आवाज में बजाते पाये जाने से तीन डीजे वाहन क्रमांक एमपी 40 जेड डी 0175 एवं डीजे वाहन क्रमांक एमपी 04 जीए 0553 एवं डीजे वाहन नीले रंग का बगैर रजिस्ट्रेशन के वाहन पाया। इन सभी डीजे को जब्त कर थाने में खड़ा करवा दिया है। इन वाहनों चालक आरोपित संजीव अहिरवार, अखिलेश अहिरवार एवं जीतेन्द्र कुशवाह के विरूद्ध बीएनएस, 7/15 कोलाहल आधिनियम के तहत मामला पंजीवद्ध कर विवेचना में लिया गया।

ज्ञात हो कि डीजे का संचालन करने वाले डीजे संचालक रात्रि में तेज आवाज के साथ डीजे चला रहे है। डीजे की आवाज इतनी तेज होती है कि पास से निकलने वाले लोगों की धड?ने बढ़ जाती है। रात्रि के समय में अत्यधिक तेज आवाज में डीजे बजाया जाता है। जिससे आसपास के रहवासियों और परीक्षा की तैयारी कर रहे बच्चों को असुविधा हुई। पुलिस जांच में पाया गया कि डीजे बजाने के लिए कोई अनुमति नहीं ली गई थी।

इस कार्रवाई में थाना निरीक्षक योगेन्द्र सिंह परमार, सउनि शिवरतन माझी, प्रधान आरक्षक आशीष यादव, राकेश सेन, भूपेन्द्र चौबे, हरवेन्द्र सिंह सेंगर, आरक्षक राकेश रावत, सतीष तिवारी, सुमित अवस्थी की विशेष भूमिका रही।

सेडमैप का 20 दिवसीय रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण शुरू

सिरोंज, देशबन्धु। शासकीय लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ और उद्यमिता विकास केंद्र (सेडमैप) भोपाल के संयुक्त सहयोग से 'व्यक्तित्व विकास, संप्रेषण कला एवं कंप्यूटर स्किल' पर आज से 20 दिवसीय रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता दिनेश गावड़े ने प्रशिक्षण की उपयोगिता और कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। डॉ. रूबी ताम्रकार, प्रोफेसर कल्पेश व संतोष तिवारी ने विद्यार्थियों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम की सफलता की

कामना की। जन भागीदारी समिति के अध्यक्ष शिवकुमार भार्गव ने प्रशिक्षण में अधिक से अधिक संख्या में विद्यार्थियों के भाग लेने की अपील करते हुए विद्यार्थियों को शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रोफेसर कल्पेश चौधरी व डॉक्टर साधना कुमारी झा ने किया। तकनीकी सहयोग प्रोफेसर वीरेंद्र सेन ने दिया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ सी एस मौर्य, प्रोफेसर वीरेंद्र सेन , उन्नति फाउंडेशन के चेंज मेकर संतोष तिवारी कार्यक्रम एवं स्वामी विवेकानंद करियर मार्गदर्शन योजना प्रभारी डॉ. साधना कुमारी झा का स्वागत कर की गई। डॉक्टर पूजा मिश्रा, डॉक्टर विभा श्रीवास्तव, डॉक्टर किरण बंशीवाल, डॉक्टर आनंद यादव के साथ विद्यार्थी शामिल हुए।

ट्रक मे लगी अचानक आग लाखों का नुकसान

आष्ठा, देशबन्धु। कन्नौद रोड़ स्थित कृषि उपज मंडी के सामने श्रीराम तोलकाटे के पास अचानक खड़े ट्रक में आग लग गई। जिससे कुछ समय के लिए अफरा-तफरी का आलम रहा। खबर मिलते ही फायरब्रिगेड पहुंची और आग पर काबू पाया। बताया जाता है कि ट्रक क्रमांक एमपी 09 एचजी 4817 में अचानक आग लग गई, जिससे लाखों रुपयों का नुकसान हो गया। यह तो गनीमत रही कि कोई जनहानि नहीं हुई और समय रहते फायरब्रिगेड ने आग पर काबू पा लिया। नहीं तो बड़ा हादसा हो सकता था। ट्रक के टायर और इंजन जलकर खाक हो चुका है। इस घटना में करीबन 5 लाख रुपए का नुकसान होने का अनुमान है।

हत्या का प्रयास करने वाले सहित 5 आरोपी गिरफ्तार

छतरपुर, देशबन्धु। 2 दिन पूर्व थाना सिविल लाइन क्षेत्र में मुक्तिधाम तिगड्डे के पास सागर रोड छतरपुर में हुए विवाद के बाद फरियादी मिथिलेश द्विवेदी की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी दिनकर गोस्वामी के विरुद्ध हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया था। शुक्रवार को मुख्य आरोपी दिनकर पुत्र रत्नेश गोस्वामी निवासी लोकनाथपुरम कॉलोनी छतरपुर को गिरफ्तार करके उसके पास से हथियार भी बरामद किया है। आरोपी ने पूछताछ में अपने साथियों के नाम तथा हथियार का स्रोत भी पुलिस को बताया। जिसके आधार पर पुलिस ने शिवम उर्फ टिक्की गोस्वामी पिता शंकरलाल निवासी नारायणपुरा रोड, दुर्गेश द्विवेदी पिता चंद्रभान निवासी ग्राम टोला रावत थाना मझगवां जिला हमीरपुर उत्तर प्रदेश हाल छतरपुर, विजय श्रीवास पिता आसाराम श्रीवास निवासी संकट मोचन पहाड़िया छतरपुर और शहीद मंसूरी तथा राजू मंसूरी निवासी गोपाल टोरिया छतरपुर को भी गिरफ्तार किया है।

कैंसर अस्पताल की आधारशिला रखेंगे प्रधानमंत्री

- उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल, जगदीश देवड़ा ने लिया तैयारियों का जायजा

छतरपुर, देशबन्धु। शुक्रवार को डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल, जगदीश देवड़ा और पंचायत मंत्री प्रहलाद पटेल जिले के ग्राम गढा स्थित बागेश्वर धाम पहुंचे। उन्होंने यहां 23 को कैंसर अस्पताल की आधारशिला रखने आ रहे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व 26 को कन्या विवाह में शामिल होने आ रहीं राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू के कार्यक्रम की तैयारियां का जायजा लिया है।

डिप्टी सीएम व मंत्री ने कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर बागेश्वर महाराज धीरेंद्र शास्त्री, कलेक्टर पार्थ जैसवाल और एसपी अगम जैन के साथ विस्तृत चर्चा की। कार्यक्रम स्थल पर मंच की व्यवस्थाओं का भी निरीक्षण किया। शुक्रवार को ही यहां पहुंचे सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि एक संत ने गरीब और बेसहारा बीमार लोगों के कल्याण का बीड़ा उठाया है, जिसकी चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है।

समाज के वंचित, पिछड़े और बेसहारा लोगों की मदद के लिए सबको आगे आना चाहिए। 144 वर्ष बाद आए महाकुंभ की प्रतिक्रिया बागेश्वर धाम में दिखाई दे रही है। यह सब बालाजी की कृपा से संभव हो रहा है। देश के प्रधानमंत्री की उपस्थिति में एक संत की परिकल्पना साकार हो रही है। शुक्रवार को ही यहां राज्यसभा सांसद सुम्मेर सिंह सोलंकी भी पहुचे थे।

वकीलों ने किया अधिवक्ता संशोधन बिल का विरोध

छतरपुर, देशबन्धु। शुक्रवार को अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष विनोद दीक्षित के नेतृत्व में अधिवक्ताओं ने अधिवक्ता संशोधन बिल 2025 का विरोध करके एक मार्च निकाला, फिर राष्ट्रपति के नाम कलेक्टर को 7 सूत्रीय ज्ञापन देकर केंद्र सरकार से इस विधेयक को वापस लेने की मांग की गई है।

ज्ञापन में कोर्पोरेट सेक्टर के वकीलों को कोर्ट में पैरवी की अनुमति देने और बार काउंसिल में सरकारी सदस्यों की नियुक्ति का विरोध किया गया है। अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष विनोद दीक्षित ने कहा कि नए बिल में वकीलों के खिलाफ उपभोक्ता फोरम में शिकायत का प्रावधान अनुचित है। साथ ही वकीलों को न्यायिक व्यवस्था के विरोध में आवाज उठाने से रोका जा रहा है। बिल में वकीलों के स्वास्थ्य बीमा और पेंशन का कोई प्रावधान नहीं है। एडवोकेट प्रोटेक्शन एक्ट भी इसमें शामिल नहीं किया गया है। वकीलों के अनुसार, कोर्ट में काम करते समय उन पर कठोर दंड का प्रावधान न्याय व्यवस्था के लिए उचित नहीं है।

शासकीय अनुदान की उम्मीदों के साथ गिरा 26 वें बुंदेली उत्सव का पर्दा

छतरपुर, देशबन्धु। बुंदेली विकास संस्थान द्वारा बसारी के राव बहादुर सिंह स्टेडियम में चल रहे 26वें बुंदेली उत्सव में गुरुवार की रात बुंदेली फाग और राई नृत्य की विशेष प्रस्तुति व शासकीय अनुदान की उम्मीदों के साथ उत्सव का पर्दा गिर गया।

समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार धर्मेन्द्र सिंह लोधी और विशिष्ट अतिथि सागर जिपं अध्यक्ष हीरा सिंह राजपूत थे। आयोजन समिति की ओर से स्वागत भाषण सिद्धार्थ शंकर बुंदेला दिया। संस्थान के संरक्षक शंकर प्रताप सिंह बुंदेला ने पिछले लगभग 15 वर्षों से यह आयोजन बिना शासकीय अनुदान के निर्बाध गति से चलने की बात करते हुए सभी के प्रति आभार जताया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बुंदेली गायक भगत राजा एंड ग्रुप

ललितपुर तथा सागर की नृत्यांगनाओं ने राई नृत्य की प्रस्तुति दी। बुंदेली हास्य कलाकार हिमालय यादव उर्फ हरिया भैया ने अपने साथियों के साथ हास्य नाटिका दिखउआ से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया।

बाक्स

इन विभूतियों का किया गया सम्मान

बुंदेली उत्सव के मंच से बुंदेली लोक कला और पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली विभूतियों को मुख्य अतिथि धर्मेंद्र सिंह लोधी ने सम्मानित किया। पत्रकारिता के माध्यम से बुंदेलखंड की आवाज बुलंद कर रहे दैनिक बुंदेली मंच समाचार पत्र के संपादक कल्याण सिंह चौहान और पैनी नजर डिजिटल न्यूज चैनल के डायरेक्टर जितेन्द्र रिछारिया को पं हरिराम मिश्र सम्मान से नवाजा गया। बुंदेली लोककला के क्षेत्र में देवदत्त द्विवेदी को राव बहादुर सिंह बुंदेला स्मृति सम्मान और रामबहादुर सिंह को डॉ हेमल स्मृति सम्मान प्रदान किया गया। बुंदेलखंड की युवा कलाकार अंजली कुशवाहा छतरपुर को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

संस्थान की वार्षिक स्मारिका बुंदेली बसंत के संपादक प्रो बहादुर सिंह परमार, उद्घोषक डॉ विष्णु अरजरिया, शिवेन्द्र शुक्ला, नीरज खरे और जगदीश गंगेले सहित सभी सहयोगियों को भी स्मृति चिन्ह देकर उनका अभिनंदन किया गया।

स्व. कोमलचंद्र जैन स्मृति टूर्नामेंट का समापन

घुवारा, देशबन्धु। नगर के अमरवां रोड पर संचालित जीवदया गौ सेवा संस्थान के संचालक रवि जैन द्वारा अपने पिता स्वर्गीय कोमलचंद्र जैन की पुण्य स्मृति में दो दिवसीय बैड मैंटेन टूर्नामेंट का आयोजन कराया जो गुरूवार को समापन हो गया। बैडमैंटन टूर्नामेंट के अंतिम दिन मुख्य अतिथि के रूप में बड़ा मलहरा तहसीलदार आलोक जैन घुवारा उपजाना प्रभारी मोहर सिंह सिकरवार, एस के जैन (पूर्व प्राचार्य), विनोद जैन शिक्षक और प्रमोद जी(गट्टू) बड़ामलहरा, रिंकू जड़ेजा, राजेश जैन मूंगवारी, पदम जैन शिक्षक, आलोक दाऊ, हेमचंद्र जैन बड़ामलहरा, गब्बर निगम, नरेंद्र बहादुर खरे, नवीन सेठ, रमाकांत कुसमया, पप्पू जैन पवैया व संजय असाटी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। निर्मल जैन (पार्षद) ने कार्यक्रम में पधारे अतिथियों का तिलक माला शाल श्रीफल से सम्मान किया। इसके पश्चात मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन किया गया और गौशाला का उद्देश्य सबके सामने रखा गया और अवलोकन किया गया। अवलोकन करने के बाद सभी अतिथियों को हर्ष की प्राप्ति हुई। उसके पश्चात अतिथियों द्वारा फाइनल में पहुंचीं बड़ामलहरा और शाहगढ़ की टीम ने खेल प्रारंभ किया जिसमें शाहगढ़ के गौरव और मोनू ने विजय प्राप्त की। आयोजक परिवार एवं अतिथियों ने विजेता को पुरस्कार एवं 3100 का पुरस्कार दिया गयाऔर उपविजेता टीम को पुरस्कार एवं ?2100 का पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन अजयकांत शास्त्री द्वारा किया गया और विकास पापेट और राजू सैन शिक्षक ने कमेंट्री की रैफरी के रूप में प्रशांत हैं एवं धर्मेंद्र खरे मौजूद रहे। कार्यक्रम को सकुशलता पूर्वक संपन्न करने मै मनोज शास्त्री, मनोज भगवा, डा अरुण जैन, सुनील मबई, नरेंद्र मबई, नीलेश शास्त्री, अजय शास्त्री, अजयकांत शास्त्री, साबिर खान, अनीश शास्त्री, पुष्पेंद्र जैन डालू, अंकित मस्ताना, भरत राजा, गुलाई खान की भागीदारी रही।

गौसंचालक रवि जैन ने तिलक माल्यार्पण करके धन्यवाद दिया, गौशाला के कर्मचारी गणपत कुशवाहा का सम्मान तहसीलदार महोदय एवं प्रभारी जी द्वारा किया गया।

विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में किया गया मातृभाषा दिवस का आयोजन

मातृभाषा का अच्छा ज्ञान रोजगार का जरिया बन सकता है : डॉ. रमाशंकर

छतरपुर, देशबन्धु। *महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के हिंदी अध्ययनशाला एवं शोध केंद्र में मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें मातृभाषा के महत्व और उसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया।*

कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के पूजन से किया गया। मुख्य वक्ता दयाल सिंह महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ रमाशंकर कुशवाहा ने मातृभाषा की अच्छी जानकारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मातृभाषा का ज्ञान वर्तमान में शोध, सांस्कृतिक, सामाजिक और मानविकी ज्ञान तथा रोजगार से जोड़ सकता है। चाहे वह तकनीक के क्षेत्र में हो या शोध अथवा बाजार के क्षेत्र में हो। उन्होंने कहा हमारे पास जो है हमें उस पर फ़क्र करना चाहिए, लेकिन अफसोस कि हम उसके पीछे भाग रहे हैं, जो हमारे पास नहीं है। प्रो बहादुर सिंह परमार ने कहा कि हमें अपनी मातृभाषा बोलना नहीं छोड़ना चाहिए, जिससे वह जीवित रह सकें। आवश्यकता है कि हम भाषाई स्तर पर धनवान हों। अपनी मातृभाषा के शब्दों को जानने का प्रयास सतत जारी रखा जाए। डॉ गायत्री वाजपेई ने कहा मातृभाषा दिवस हमें अपनी गलतियों के प्रति सजग करके झझकोर कर ये संदेश देता है कि हमें अपनी संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्राध्यापक नंदकिशोर पटेल ने किया। अंत में अतिथि विद्वान दिव्यांश खरे ने आभार व्यक्त किया।

जरूरत है कि अपनी मातृभाषा को बचाएं

अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कला संकायाध्यक्ष प्रो पुष्पा दुबे ने छात्रों को मातृभाषा दिवस की महत्ता, पहचान एवं उपयोगिता से परिचित करवाया। उन्होंने कहा पहले हमने हिंदी को अंग्रेजी से बचाया और अब जरूरत है कि हम अपनी मातृभाषा को भी बचाएं। मातृभाषा हमारे भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, मातृभाषा से जुड़ने में समृद्धि है। यह दिवस हमारे मातृभाषा के प्रति जागरण का परिणाम है। शोधार्थी शुभम राठौर और आदित प्रताप सिंह ने भी मातृभाषा के प्रति विचार व्यक्त किए। दयाल सिंह महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय से आई शोधार्थी रितु सिंह, सरला प्रजापति, रूपल दुबे एवं छात्र रामप्रकाश अहिरवार ने मातृभाषा से संबंधित कविता पाठ किया। इस मौके पर कई अतिथि विद्वान स्नातक व स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं सहित शोधार्थी उपस्थित रहे।

नर्मदा नियरे

सार-समाचार

मंदिर परिसर में हुड़दंग से लोग परेशान, कलेक्टर से की शिकायत

बैतूल, देशबन्धु। शहर के गर्ग कॉलोनी रामनगर क्षेत्र में स्थित साईं मंदिर प्रांगण में असामाजिक तत्वों का जमावड़ा वार्डवासियों के लिए परेशानी का कारण बन गया है। हर रात नशे में धुत लोग मंदिर के बाहर हुड़दंग मचाते हैं, और ऊंची आवाज में गाने बजाकर माहौल खराब कर रहे हैं। इस कारण आसपास के लोग, खासकर महिलाएं और बच्चे, काफी परेशान हैं।

बच्चों की परीक्षा की तैयारी भी प्रभावित हो रही है। शुक्रवार को वार्ड की महिलाओं और पुरुषों ने जिला कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा और असामाजिक तत्वों पर सख्त कार्रवाई की मांग की। वार्ड की बुजुर्ग महिलाओं ने बताया कि रात में मंदिर परिसर के पास माहौल बेहद खराब हो जाता है, जिससे महिलाएं असुरक्षित महसूस करती हैं और बच्चे पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। कई बार स्थानीय लोगों ने इन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। वार्डवासियों का कहना है कि यदि प्रशासन जल्द कार्रवाई नहीं करता तो वे जल सत्याग्रह करेंगे। उन्होंने जिला कलेक्टर से अपील की है कि साईं मंदिर के आसपास पुलिस की गश्त बढ़ाई जाए और दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो ताकि वार्ड में फिर से शांति बहाल हो सके।

विशाल संत महाकुंभ आज

बैतूल, देशबन्धु। अटल सभा ऑडिटोरियम जेएच कॉलेज में 22 फरवरी को सुबह 11 बजे संत रविदास वेलफेयर सोसायटी ऑफ इंडिया, जिला बैतूल द्वारा संत शिरोमणि गुरु रविदास के महाकुंभ का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में केन्द्रीय संसदीय बोर्ड सदस्य डॉ. सत्यनारायण जटिया, भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय के केन्द्रीय राज्य मंत्री डीडी उइके, राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार गौतम टेटवाल, राज्य वन मंत्री दिलीप अहिरवार, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष लालसिंह आर्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। साथ ही विधायक हेमंत खंडेलवाल, योगेश पंडाग्रे, गंगा बाई उइके, चन्द्रशेखर देशमुख, महेन्द्र सिंह चौहान, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष बबला शुक्ला, नगरपालिका अध्यक्ष पार्वतीबाई बारस्कर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

कैंसर जागरूकता अभियान आज, निकलेगी विशाल रैली

बैतूल, देशबन्धु। शिवम सेवा समिति के राकेश रक्कु शर्मा ने बताया कि समिति धार्मिक आयोजन के साथ मानवता के हित में कार्य करती रही है। इसी के अंतर्गत शनिवार कैंसर जागरूकता अभियान, प्लास्टिक उपयोग मुक्त जिला अभियान रैली चलाया जाएगा जिसमें समिति एवं शहर के नागरिकों द्वारा गुलाब का फूल देकर प्लास्टिक के गिलास, चम्मच, कटोरी के विक्रेताओं से इनका उपयोग नहीं करने का अनुरोध किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि 2018 में समिति द्वारा बैतूल में कागज के चाय के कप का अभियान चलाया गया था जो आज तक सफलतापूर्वक चल रहे हैं। समिति ने सभी से उक्त कार्यक्रमों में उपस्थित होने का आग्रह किया।

महाप्रबंधक अनूप सक्सेना का पेंशनर्स हित रक्षक संगठन ने किया सम्मान

बैतूल, देशबन्धु। पेंशनर्स हितों की रक्षा के लिए सक्रिय संगठन पेंशनर्स हित रक्षक संगठन के जिला अध्यक्ष रेवाराम वराठे के नेतृत्व में संगठन की सौजन्य भेंट महाप्रबंधक (संचा/संधा-वृत) बैतूल अनूप सक्सेना से हुई। इस अवसर पर महाप्रबंधक का स्वागत किया गया और संगठन के निर्वाचित पदाधिकारियों का परिचय करवाया गया। इस अवसर पर संरक्षक के. आर. घोडकी, प्रदेश प्रतिनिधि एवं विधि सलाहकार ए. के. गुप्ता, सचिव एवं प्रवक्ता व्ही. एन. बारस्कर, कोषाध्यक्ष यू. डी. लिखितकर, उपाध्यक्ष श्यामराव माकोडे, मुन्नालाल टिकारे, बाबुराव बारस्कर, संगठन मंत्री गणपतराव वाघमारे, मुन्नालाल मालवीय, मधुकर वराठे, रमेश पान्से, लक्ष्मीशंकर यादव, श्यामु सातनकर सहित अन्य सक्रिय सदस्य उपस्थित रहे। अध्यक्ष ने सभी सक्रिय सदस्यों का परिचय कराया।सौजन्य भेंट में संगठन ने पेंशनर्स की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया और उनके शीघ्र समाधान की मांग की। इस पर महाप्रबंधक अनूप सक्सेना ने आश्वस्त किया कि पेंशनर्स की समस्याओं का त्वरित निराकरण किया जाएगा। इस अवसर पर उपस्थित पदाधिकारियों ने महाप्रबंधक का आभार व्यक्त किया।

संजय बने विधायक प्रतिनिधि

सारनी, देशबन्धु। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और नगरपालिका सारनी के पूर्व नेता प्रतिपक्ष संजय अग्रवाल को सतपुड़ा ताप विद्युत गृह

एमपीजीसीएल सारनी में विधायक प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है। इस नियुक्ति पर शहरवासियों और भाजपा कार्यकर्ताओं में हर्ष का माहौल है। दीपक हूरमाड़े, सोहन कसारे, लालू, योगेश समेत कई लोगों ने संजय अग्रवाल को बधाई देते हुए विधायक का आभार व्यक्त किया।

ताप्ती मेगा रिचार्ज प्रोजेक्ट का विरोध तेज, हरदा भीलट में महापंचायत संपन्न

14 लाख एकड़ जमीन डूब क्षेत्र में, किसानों और आदिवासियों द्वारा बड़े आंदोलन की तैयारी

बैतूल, देशबन्धु। विश्व की सबसे बड़ी ताप्ती मेगा रिचार्ज परियोजना का विरोध लगातार तेज हो रहा है। इस परियोजना से मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में भारी विस्थापन होगा, जिसे लेकर हरदा भीलट (जिला अमरावती, महाराष्ट्र) में महापंचायत आयोजित की गई। इस महापंचायत में बैतूल, खंडवा और अमरावती जिलों के हजारों प्रभावित किसान, आदिवासी और सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुए। पंचायत में मौजूद लोगों ने परियोजना को अवैध करार देते हुए इसे तुरंत निरस्त करने की मांग की। सभी ने एकमत से कहा कि ताप्ती मेगा रिचार्ज प्रोजेक्ट से हजारों परिवार बेघर हो जाएंगे, उनकी जमीन डूब क्षेत्र में आ जाएगी और प्राकृतिक संसाधनों पर उनका अधिकार खत्म हो जाएगा।

पूर्व विधायक राजकुमार पटेल ने कहा कि साल 2015 में जब बांध परियोजना को लेकर हलचल शुरू हुई, तब 15 से 20 गांवों के लोगों ने पंचायत चुनाव का बहिष्कार किया। आदिवासी समुदाय का विरोध इतना प्रभावी था कि महाराष्ट्र सरकार को बैकफुट पर जाना पड़ा। उन्होंने बताया कि 2014 में जल संसाधन विभाग की टीम जब 15 ट्रक और 20 ट्रैक्टर लेकर जमीन का सर्वेक्षण करने पहुंची थी, तो स्थानीय

लोगों ने विरोध करते हुए मशीनों को तोड़ दिया और अधिकारियों को भागने पर मजबूर कर दिया था। बैतूल कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे ने कहा कि इस परियोजना का सीधा फायदा राजस्थान और गुजरात को होगा, जबकि मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र को इसका नुकसान उठाना पड़ेगा। लाखों एकड़ उपजाऊ जमीन डूब जाएगी, जिससे हजारों परिवारों की रोजी-रोटी प्रभावित होगी। पूर्व विधायक प्रत्याशी राहुल चौहान ने कहा कि सरकार एक तरफ आदिवासियों की परंपरा और संस्कृति को बचाने की बात करती है, लेकिन दूसरी ओर उन्हें उनकी ही जमीन से बेदखल कर टाइगर रिजर्व, फैक्ट्री और बड़े-बड़े कारखानों के नाम पर विस्थापित किया जा रहा है।

जयस प्रदेश संयोजक जामवन्त सिंह कुमरे ने कहा कि महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की सरकारें इस परियोजना को लेकर तेजी से काम कर रही हैं, लेकिन आदिवासी समुदाय इसे किसी भी हालत में बर्दाश्त नहीं करेगा। परियोजना के कारण लगभग 14 लाख एकड़ भूमि डूब क्षेत्र में आ जाएगी, जिससे हजारों किसान और आदिवासी प्रभावित होंगे। उन्होंने मांग की कि संविधान के तहत 5वीं अनुसूची और पेसा कानून का पालन किया जाए और आदिवासी भूमि को संरक्षित किया जाए। स्वशासन ग्रामसभा बुद्धिजीवी हेमंत सरियाम ने कहा कि इस परियोजना को रोकने के लिए संविधान के लचीले और कठोर प्रावधानों के तहत कानूनी लड़ाई लड़ी जाएगी। अगर सरकार नहीं मानी तो बड़ा जन आंदोलन किया जाएगा। बैठक में रामा ककोडिया, नीतू ककोडिया सहित 25 गांवों के प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता और आदिवासी प्रतिनिधि शामिल हुए।

गौरतलब है कि 1980 में यह परियोजना प्रस्तावित की गई थी, लेकिन स्थानीय विरोध के चलते इसे लागू नहीं किया जा सका। अब एक बार फिर महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की सरकारें इस परियोजना को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रही हैं, जिससे प्रभावित ग्रामीण और आदिवासी समुदाय में भारी आक्रोश है। यह परियोजना महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश में ताप्ती नदी पर बनाई जा रही है, जिसके तहत विश्व का सबसे बड़ा जल पुनर्भरण बांध बनाया जाएगा। इससे बड़े पैमाने पर जल संग्रह किया जाएगा, बल्कि राजस्थान और गुजरात तक जल आपूर्ति करने की योजना है। लेकिन इस परियोजना से मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के आदिवासी इलाकों में हजारों गांव जलमग्न हो जाएंगे, जिससे विस्थापन का संकट खड़ा होगा। महापंचायत में यह निर्णय लिया गया कि इस परियोजना को किसी भी हाल में नहीं बनने दिया जाएगा। आने वाले दिनों में बड़े स्तर पर विरोध प्रदर्शन किए जाएंगे और सरकार पर दबाव बनाया जाएगा कि इस परियोजना को तुरंत रद्द किया जाए।

कृषि भूमि पर अवैध रूप से संचालित स्कूल के खिलाफ कार्रवाई की मांग

शाहपुर, देशबन्धु। कृषि भूमि पर अवैध रूप से निजी स्कूल का संचालन किए जाने के मामले में प्रशासन से उचित कार्रवाई की मांग की गई है। इस संबंध में भारतीय जनता युवा मोर्चा के जिला उपाध्यक्ष तथा पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष सरपंच संघ दिनेश यादव ने अनुविभागीय अधिकारी शाहपुर को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उल्लेख किया गया है कि टांगनामाल निवासी सुनील यादव पिता रामदास यादव ग्राम टांगनामाल में एक निजी स्कूल का संचालन कर रहे हैं, जिसका डाइस कोड 23351006505 है। यह स्कूल कृषि भूमि पर संचालित किया जा रहा है, जो राजस्व रिकॉर्ड में सुनील यादव के नाम दर्ज है।

ज्ञापन में बताया गया कि इस भूमि का खसरा नंबर 117/1 है, जो कृषि भूमि के रूप में दर्ज है, लेकिन इसे व्यावसायिक रूप से उपयोग में लाया जा रहा है। इससे शासन को राजस्व की क्षति हो रही है, क्योंकि भूमि का उपयोग उसकी निर्धारित श्रेणी के अनुरूप नहीं किया जा रहा। दिनेश यादव ने मांग की है कि निजी स्कूल संचालक पर उचित कार्रवाई की जाए और अब तक हुई राजस्व क्षति की भरपाई कराई जाए। आवेदक ने यह भी कहा कि स्कूल बिना किसी वैधानिक अनुमति के संचालित हो रहा है, जो पूरी तरह से अवैध है। इसके बावजूद अब तक इस पर किसी भी प्रकार की कार्रवाई नहीं की गई है। इस स्थिति में स्कूल की मान्यता समाप्त करने और संचालक के विरुद्ध कड़ी प्रशासनिक कार्रवाई करने की आवश्यकता है। दिनेश यादव ने ज्ञापन के माध्यम से प्रशासन से यह मांग की है कि जल्द से जल्द इस मामले की जांच कर दोषी पर उचित कदम उठाया जाए, ताकि भविष्य में किसी भी प्रकार की राजस्व हानि न हो और नियमों का पालन सुनिश्चित किया जा सके।

गरीबी रेखा का राशन कार्ड बनवाकर सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने का आरोप

आवेदक दिनेश यादव ने स्कूल संचालक के खिलाफ गरीबी रेखा का राशन कार्ड बनवाकर सरकारी योजनाओं का अनुचित लाभ उठाने का भी आरोप लगाते हुए कलेक्टर से शिकायत की और जांच की मांग की है। दिनेश यादव के अनुसार, सुनील यादव पिता रामदास यादव ने अधिकारियों की मिलीभगत से फर्जी जानकारी देकर गरीबी रेखा का राशन कार्ड (नंबर 21361) बनवा लिया, जोकि तहसीलदार ने आदेश क्रमांक 238 दिनांक 15 मई 2023 को जारी किया था। जबकि वास्तविकता यह है कि सुनील यादव वर्षों से एस.के. वाय. पब्लिक स्कूल नामक निजी विद्यालय का संचालन कर रहा है। यह स्कूल खुद की कृषि भूमि पर संचालित हो रहा है। इतना ही नहीं, सुनील यादव के नाम पर दो चार पहिया वाहन, दोपहिया वाहन और बैंकों में लाखों रुपये का लेनदेन हो रहा है। इसके अलावा, वह भोपाल में भी चल-अचल संपत्ति के मालिक है और वहां निजी कोचिंग क्लास भी चला रहे है। शिकायत में मांग की गई है कि सुनील यादव के गरीबी रेखा राशन कार्ड को तुरंत निरस्त किया जाए और धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया जाए। साथ ही, उन अधिकारियों की भी जांच हो, जिन्होंने इस नियम विरुद्ध दस्तावेज को जारी किया है।

सेमीफाइनल में मेहता एजेंसी की तूफानी जीत

बैतूल, देशबन्धु। स्व. रामाधार मालवीय की स्मृति में समीर खान फैंस क्लब द्वारा आयोजित टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट के दसवें दिन शुक्रवार को पहला क्वार्टर फाइनल मुकाबला मोनेश 11 दमोह और भैय्यू शिवा 11 पाथाखेड़ा के बीच खेला गया। टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने वाली भैय्यू शिवा 11 ने मोनेश 11 को 133 रन पर 8 विकेट तक सीमित कर दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी भैय्यू शिवा 11 ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मात्र 8 ओवर में ही 2 विकेट गंवाकर जीत दर्ज कर ली। इस मैच के मैन ऑफ द मैच ताविश रहे।

दूसरा क्वार्टर फाइनल मुकाबला मेहता एजेंसी और केसी छिंदवाड़ा के बीच खेला गया, जिसमें मेहता एजेंसी ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी और केसी छिंदवाड़ा को 105 रन पर रोक दिया। लक्ष्य का पीछा करने उतरी मेहता एजेंसी ने 7.1 ओवर में आसानी से जीत हासिल की। इस मैच में संतोष सिंह ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया। पहला सेमीफाइनल मुकाबला भैय्यू शिवा 11 पाथाखेड़ा और मेहता एजेंसी के बीच खेला गया। मेहता एजेंसी ने टॉस

जीतकर पहले बल्लेबाजी की और 120 रन बनाए। जवाब में भैय्यू शिवा 11 की टीम लक्ष्य का पीछा करने में नाकाम रही और सिर्फ 71 रन पर सिमट गई। भले ही टीम में कई जाने-माने बाहरी खिलाड़ी शामिल थे, लेकिन मेहता एजेंसी के गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन किया। संतोष सिंह ने घातक गेंदबाजी करते हुए 4 विकेट झटके और अपनी टीम को जीत दिलाई। उन्हें इस मैच का मैन ऑफ द मैच घोषित किया गया। टूर्नामेंट समिति के सुनील मालवीय और नफीस मिर्जा ने जानकारी दी कि मुख्य अतिथि के रूप में पत्रकार नवनीत गर्ग, कांग्रेस जिला अध्यक्ष हेमंत वागद्रे, जेडी वर्मा, लल्ली वर्मा, समीर खान, दानिश खान, संजय मिश्रा मौजूद रहे। मैच के स्कोरर की भूमिका दुर्गादास और कार्तिक साहू ने निभाई। अब टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं।

सामाजिक क्रिकेट स्पर्धा का समापन

शाहपुर, देशबन्धु। शाहपुर ग्राम पंचायत कुंडी के ग्राम बांका खोडरी में विगत 5 दिनों से चल रही सामाजिक क्रिकेट स्पर्धा में समाज की 8 टीमों ने भाग लिया। टूर्नामेंट का समापन सेमी फाइनल एवं फाइनल कर किया। सेमीफाइनल में चार टीमों ने भाग लिया, जिसमें मायावनी जांगड़ा, छुरी, भवाड़ी, मेवानी। जिसमें से 2 टीम छुरी, भवाड़ी ने फाइनल मे जगह बनाई। दोनों के बीच मुकाबला हुआ, जिसमें विजेता टीम छुरी, उपविजेता भवाडी रही। प्रथम विजेता टीम को 7000 से पुरस्कार एवं उपविजेता टीम को 4000 से

प्रस्तुत किया गया। पुरस्कार वितरण में सरपंच वीरेंद्र सिंह, वीके देवराज, महेश वर्मा, नानक वर्मा, अमित वर्मा, नवल वर्मा, अरविंद राठौर एवं गांव के ग्रामीण उपस्थित रहे। छुरी का कप्तान ने बताया कि सामाजिक टूर्नामेंट में उनका यह 9 टूर्नामेंट है, जिसमें वहां प्रथम विजेता रही। वहीं सामाजिक टूर्नामेंट के अध्यक्ष नवीन वर्मा ने बताया हर वर्ष सामाजिक टूर्नामेंट कराया जाता है, जिसमें सामाजिक क्रिकेट टीमबढ़ चढ़ हिस्सा लेती है।

सरकारी स्कूलों में शिक्षिकाओं का जन्मदिन मनाने का ट्रेंड, शिक्षा के मूल उद्देश्य पर उठे सवाल

सारणी, देशबन्धु। शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, ताकि वे एक उज्जवल भविष्य की ओर अग्रसर हो सकें। लेकिन हाल ही में कुछ सरकारी स्कूलों में शिक्षिकाओं द्वारा जन्मदिन मनाने के वीडियो सामने आए हैं, जो इस उद्देश्य पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं।

शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सारणी में शिक्षिका प्रेमलता पंडोले ने अपना जन्मदिन स्कूल में मनाया, जबकि प्री-बोर्ड परीक्षाएं चल रही थीं और कक्षाएं संचालित हो रही थीं। शिक्षिका श्रीमती प्रेमलता से अपना पक्ष रखने के लिए संपर्क करने पर उनके पुत्र द्वारा लाल मटली जवाब देते हुए फोन काट दिया गया। इसी प्रकार, मछली कांटा क्षेत्र के वार्ड क्रमांक 10 के माध्यमिक शाला में शिक्षिका का जन्मदिन भी स्टाफ और छात्रों की उपस्थिति में मनाया गया। यहां तक कि माइक पर गाना भी गया। बच्चों की परीक्षाएं नहीं थीं, कक्षाएं तो चल रही थीं। सरकारी स्कूलों में शिक्षकों को हजारों रुपये वेतन दिया जाता है, ताकि वे विद्यार्थियों को शिक्षित करें और उन्हें एक सशक्त भविष्य के लिए तैयार करें। लेकिन जब पढ़ाई के बजाय व्यक्तिगत कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, तो यह विद्यार्थियों के अध्ययन में बाधा डालता है और शिक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाता है। शिक्षा विभाग और स्कूल प्रबंधन को भी इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है, ताकि शिक्षा का मूल उद्देश्य कहीं खो न जाए। यदि इस तरह की घटनाएं जारी रहीं, तो इसका दुष्परिणाम न केवल बच्चों के भविष्य पर पड़ेगा, बल्कि शिक्षा व्यवस्था की गरिमा पर भी आंच आएगी।

इनका कहना है

स्कूल रूटिंग को डिस्टरबेंस करते हुए एक शिक्षिका द्वारा जन्मदिन मनाकना गलत बात है। इसमें बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही है।

– **पीसीबोस,** बीआरसी

नाबालिक बालिका से छेड़छाड़ एवं मारपीट करने वाले आरोपी गिरफ्तार

चिचोली, देशबन्धु। थाना बीजादेही पुलिस ने नाबालिग बालिका से छेड़छाड़ एवं मारपीट करने वाले आरोपी को त्वरित कार्रवाई करते हुए गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

17 वर्षीय पीड़िता ने 18 फरवरी को थाना बीजादेही में रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह अपने गांव में आयोजित एक सगाई समारोह से सहेलियों के साथ लौट रही थी, तभी आरोपी राकेश काजले ने उसका पीछा कर जबरन पकड़ लिया और छेड़छाड़ करने लगा। आरोपी उसे जबरदस्ती तालाब की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा था। जब पीड़िता ने विरोध किया तो आरोपी ने उसके साथ मारपीट की, जिससे पीड़िता के चेहरे पर चोट आई हे । घटना की रिपोर्ट दर्ज होने पर थाना बीजादेही पुलिस ने तत्काल छेड़छाड़, मारपीट एवं पॉक्सो एक्ट के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर जांच प्रारंभ की। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक श्री निश्चल न. झारिया द्वारा आरोपी की शीघ्र गिरफ्तारी के निर्देश दिए गए। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री पी. एस. बालरे एवं एसडीओपी श्री अभय जैन के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी बीजादेही के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई। पुलिस टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी राजेश काजले पिता गंजन सिंह काजले, उम्र 24 वर्ष, निवासी ग्राम पीपलबर्रा, थाना बीजादेही, जिला बैतूल को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी का मेडिकल परीक्षण कराकर उसे माननीय न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे न्यायिक हिरासत में जिला जेल भेज दिया गया है।

अम्बादेवी मंदिर समिति के खिलाफ मजदूर ने की थाने में शिकायत

मजदूरी के 37 हजार रुपये बकाया रखने का आरोप

बैतूल, देशबन्धु। जिले के प्रसिद्ध शक्तिपीठ मां अम्बादेवी मंदिर धारूल में हुए भवन निर्माण कार्य में मजदूरी कर चुके एक मजदूर ने समिति के खिलाफ थाने में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। ग्राम पंचायत सावंगी निवासी हनवंतराव लिखितकर ने आठनेर थाने में शिकायत देते हुए बताया कि वह एक छोटे किसान हैं और राजमिस्त्री का कार्य कर अपनी आजीविका चलाते हैं।

हनवंतराव के अनुसार, मां अम्बादेवी मंदिर समिति द्वारा मंदिर भवन के लेंटर के लिए सेंटरिंग लगाने का कार्य दिया गया था। संदीप सोनी सहित अन्य लोगों ने उनसे संपर्क कर कहा कि समिति अध्यक्ष भोजराज गायकवाड़, गोपाल देशमुख और हरी रिखाते ने उन्हें भेजा है। उन्हें बताया गया कि सेंटरिंग का कार्य करने पर प्रति दिन 400 रुपये मजदूरी दी जाएगी। 1 जनवरी 2023 को हनवंतराव ने मां अम्बादेवी गुफा मंदिर पर लगभग 2500 वर्गफुट जगह पर सेंटरिंग लगाई और करीब दो महीने तक कार्य किया। इस दौरान उन्हें केवल 5 हजार रुपये सेंटरिंग ले जाने के भाड़े के रूप में भोजराज गायकवाड ने अपने घर पर दिए थे। जब उन्होंने अपनी मजदूरी और सेंटरिंग का कुल बकाया 37 हजार 500 रुपये मांगे, तो समिति के किसी भी सदस्य ने इस पर विचार नहीं किया।

शिकायतकर्ता का आरोप है कि जब उन्होंने समिति अध्यक्ष भोजराज गायकवाड से राशि मांगी, तो उन्हें यह कहकर टाल दिया गया कि अब उनके पास कुछ नहीं बचा। वहीं, समिति से जुड़े पप्पू मुलिक ने कहा कि वर्तमान में मंदिर की व्यवस्था केलबीरा निवासी धनराज गावंडे देख रहे हैं, इसलिए उन्हीं से

बात करें। जब हनवंतराव ने धनराज गावंडे से संपर्क किया, तो उन्होंने कह दिया कि उन्होंने उन्हें सेंटरिंग लगाते हुए नहीं देखा, इसलिए वह पैसे नहीं देंगे। इसी तरह, समिति के सचिव मुकिंदराव सोनारे ने भी मजदूरी देने से इनकार कर दिया और कहा कि जो करना है कर लो, पैसे नहीं दिए जाएंगे। हनवंतराव ने बताया कि उन्होंने वन विभाग के अधिकारियों की मौजूदगी में सेंटरिंग का कार्य किया था। गरीब मजदूर ने पुलिस से अनुरोध किया है कि उसकी मेहनत की कमाई उसे दिलवाई जाए।

चिचोली में मनाया गया विश्वकर्मा जन्मोत्सव, वरिष्ठ नागरिकों और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का हुआ सम्मान

बढ़ई समाज की एकता और संस्कृति प्रशंसनीय: वर्षा

बैतूल, देशबन्धु। चिचोली विकासखंड में भगवान विश्वकर्मा की जयंती महोत्सव बड़े ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। जिले भर से हजारों की संख्या में समाजबंधु, महिलाएं और गणमान्य नागरिक इस आयोजन में शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान विश्वकर्मा जी के पूजन, अभिषेक और महाआरती से हुई, जिसके बाद श्रद्धालुओं ने बढ़ई समाज की गौरवशाली परंपरा का उत्सव मनाया। समारोह में वरिष्ठ नागरिकों और समाज के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया।

आमला समिति के संरक्षक नाथूराम विश्वकर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि बैतूल जिले में बढ़ई समाज के 16 हजार परिवार निवास करते हैं, जो हर गांव और विकासखंड में बसे हुए हैं। उन्होंने समाज की एकजुटता पर जोर देते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज को मजबूती प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम में चिचोली नगरपंचायत की अध्यक्ष श्रीमती वर्षा रितेश मालवीय ने अपने संबोधन में कहा कि बढ़ई समाज की एकता और

संस्कृति प्रशंसनीय है और समाज की समृद्धि के लिए सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने भगवान विश्वकर्मा के मंदिर निर्माण में हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया। भाजपा के पूर्व जिलाध्यक्ष अनिल सिंह कुशवाह ने कहा कि बढ़ई समाज सेवा, समर्पण और सामाजिक कार्यों को पूरी निष्ठा के साथ संपन्न करता है। उन्होंने समाज की एकता और संगठन शक्ति की सराहना करते हुए कहा कि हर बड़े आयोजन में बढ़ई समाज की मजबूत भागीदारी देखने को मिलती है। नागरिक आपूर्ति निगम के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र जैसवाल ने भी बढ़ई समाज की प्रशंसा करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरणास्रोत बताया। चिचोली नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष संतोष मालवीय ने कहा कि समाज की हर संभव सहायता की जाएगी और दूसरे समाजों को भी बढ़ई समाज से एकता की प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने गुरु नहीं बनाया है, वे भगवान विश्वकर्मा को अपना गुरु मान सकते हैं। धर्मेंद्र पटेल ने भी समाज के योगदान और एकजुटता की सराहना की। शंकराचार्य द्वारा नियुक्त गौ सांसद युवराज मालवी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गौ सेवा ही सच्ची समाज सेवा है और इसे समाज के हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझकर निभाना चाहिए।

कार्यक्रम में चिचोली नगर पंचायत की उपाध्यक्ष संजय आंवलेकर, पार्षद ज्योति जीवन पानकर, समाज के अध्यक्ष एवं पार्षद रोहित आर्य, विश्वकर्मा बढ़ई समाज समिति जिला बैतूल के अध्यक्ष गणेश प्रसाद मालवी, सारणी समिति के अध्यक्ष राजकुमार मालवी, महिला मंडल की जिलाध्यक्ष अर्चना बल्लू मालवी, श्रीमती पुष्पा विश्वकर्मा राष्ट्रीय सचिव, अशोक मालवी सारणी, समाज समिति जिला प्रमुख बलवीर मालवी, चिचोली समिति के अध्यक्ष रमेश चंद्र मालवी सहित कई प्रमुख समाजसेवी रहे। आयोजन को सफल बनाने में अजय मालवी, मोंटू विजय मालवी, प्रदीप मालवी, कैलाश मालवी, कमलेश मालवी (गढ़ा), दुर्गेश मालवी, राजेश मालवी (बोरगांव), कमलेश मालवी (रातमती), पवन मालवी, तरुण मालवी, गोलू मालवी, अंशु मालवी, नीलेश मालवी, दिलीप मालवी, संतोष मालवी और नितेश मालवी का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम के अंत में अजय मालवी ने मंच से सभी गणमान्य अतिथियों, जनप्रतिनिधियों और सामाजिक बंधुओं का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन विजय मालवी ने किया।

बटकीडोह में जलकलश यात्रा से हुआ गायत्री महायज्ञ का शुभारंभ

बैतूल, देशबन्धु। अखिल विश्व गायत्री परिवार, शांतिकुंज हरिद्वार के मार्गदर्शन में तहसील घोड़ाडोंगरी के बटकीडोह (चोपना) में 9 कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया जा रहा है। गायत्री परिवार के प्रवक्ता रविशंकर पारखे ने बताया कि यह महायज्ञ 23 फरवरी तक बटकीडोह के काली मंदिर चौराहा परिसर में आयोजित किया जाएगा।

महायज्ञ का शुभारंभ आज जलकलश यात्रा से हुआ। देवी मंदिर से प्रारंभ हुई इस यात्रा का नगरवासियों ने स्वागत किया। इसमें सैकड़ों श्रद्धालु परिजनों ने भाग लिया। यात्रा का विधिवत पूजन टोली नायक धनराज धोटे ने किया और जलकलश यात्रा के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर गायत्री परिवार के वरिष्ठ सदस्य राजेंद्र मालवीय का जन्मदिन भी मनाया गया। कार्यक्रम में जिला समन्वयक डॉ. कैलाश वर्मा ने बताया कि इस क्षेत्र में पहली बार गायत्री महायज्ञ का आयोजन हो रहा है। उन्होंने कहा कि इस महायज्ञ के माध्यम से गायत्री परिवार, यज्ञ का महत्व और युग निर्माण योजना की जानकारी दी जाएगी। उन्होंने सभी परिजनों से अधिक से अधिक संख्या में शामिल होकर पुण्य लाभ अर्जित करने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन जिला सह-समन्वयक रविशंकर पारखे ने किया।

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

टाटा स्टील	1.88 प्रतिशत
एलटी	1.10 प्रतिशत
एचसीएल टेक	0.75 प्रतिशत
एशियन पेंट	0.35 प्रतिशत
एचडीएफसी बैंक	0.31 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

महिंद्रा एंड महिंद्रा	6.07 प्रतिशत
अडानी पोर्ट्स	2.57 प्रतिशत
टाटा मोटर्स	2.46 प्रतिशत
सन फार्मा	1.60 प्रतिशत
पावरग्रिड	1.52 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	86,803
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	1,03,500
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	86.96	87.00
पौंड स्टर्लिंग	106.21	106.45
यूरो	88.45	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दड़ा	3100-3200
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	4280-4380
चीनी एम	4280-4380
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	4250-4350

दाल-दलहन

चना	6100-6200
दाल चना	7100-7200
मसूर काली	7300-7400
उड़द दाल	8900-9000
मूंग दाल	9300-9300
अरहर दाल	7650-7750

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

नई दिल्ली। अंतराष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपए प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपए प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपए प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपए प्रति लीटर पर रहा।

महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों की नीलामी करना सरकार का लक्ष्य : दुबे

■ अगले दशक में लिथियम की मांग में दस गुना वृद्धि होने की उम्मीद

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। केंद्रीय खान एवं कोयला राज्य मंत्री सतीश चंद्र दुबे ने शुक्रवार को कहा कि सरकार ने स्वच्छ ऊर्जा तथा विद्युत वाहन बैटरी जैसे उद्योगों के लिए जरूरी खास प्रकार के खनिज उत्पादों की आपूर्ति बढ़ाने के उद्देश्य से 2031 तक महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों की नीलामी को अधिकतम करने की योजना बनाई है।

श्री दुबे ने कहा कि सरकार हरित ऊर्जा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों के लिए आवश्यक खनिजों के लिए घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने के रणनीतिक प्रयासों का विस्तार करना चाहती है। उन्होंने यहां उद्योग मंडल फिक्की द्वारा महत्वपूर्ण खनिजों के खनिजों की स्थिति के बारे में आयोजित सम्मेलन में महत्वपूर्ण खनिजों के लिए आयात निर्भरता को कम करने के लिए सरकार के रणनीतिक दृष्टिकोण को रेखांकित किया। इस अवसर पर फिक्की-डेलॉइट रिपोर्ट माइन टेलिंग्स एंड ओवरबर्डन जारी की गई। डेलॉइट के पार्टनर राजीब मैत्रा ने कहा कि अगले दशक में अकेले लिथियम की मांग में नौ से दस गुना वृद्धि होने की उम्मीद है।

सरकार हरित ऊर्जा और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों के लिए आवश्यक खनिजों के लिए घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने के प्रयासों का विस्तार करना चाहती है : सतीश चंद्र दुबे, खान एवं कोयला राज्य मंत्री

सरकार ने जनवरी के अंत में 16,300 करोड़ रुपए के राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन को मंजूरी दी, जिसमें सात वर्षों में कुल मिला कर 34,300 करोड़ रुपए के कुल परिव्यय की परिकल्पना की गई है। खान एवं कोयला राज्य मंत्री ने कहा कि सरकार ने पहले ही घरेलू स्तर पर 24 महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों की नीलामी कर दी है, और हमारा लक्ष्य 2031 तक अधिक से अधिक महत्वपूर्ण खनिज ब्लॉकों की नीलामी करना है। उन्होंने कहा कि यह पहल भारत की खनिज सुरक्षा को बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों के प्रति संवेदनशीलता को कम करने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है।

उन्होंने खनिज अन्वेषण और निष्कर्षण गतिविधियों में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने का आग्रह किया। भारत महत्वपूर्ण खनिजों, विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहनों, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण और नवीकरणीय ऊर्जा प्रणालियों के लिए आवश्यक सामग्रियों की आपूर्ति की वैश्विक श्रृंखलाओं के बारे में बढ़ती चिंताओं के बीच इस क्षेत्र में भारत की रणनीतिक पहल तेज कर दी है।

फिक्की की महानिदेशक ज्योति विज ने कहा कि राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन का शुभारंभ समय पर हुआ है और यह महत्वपूर्ण खनिजों पर बजट में वृद्धि के साथ मेल खाता है। उन्होंने कहा कि इससे आयात पर निर्भरता कम करने और स्थिर आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने, महत्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों के उत्पादन तथा खनिज समग्री के पुनर्चक्रण और वैश्विक आधार पर सम्पत्तियों के अधिग्रहण को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

ईएसआईसी में 17 लाख से अधिक नए कर्मचारियों ने दिसम्बर में कराया पंजीकरण

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। एंप्लॉई स्टेट इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (ईएसआईसी) से दिसंबर में 17.01 लाख नए कर्मचारी जुड़े हैं। इसके साथ ही 20,360 नई संस्थाओं ने पंजीकरण कराया है। यह जानकारी शुक्रवार को सरकार द्वारा दी गई। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय ने कहा कि दिसंबर के दौरान जोड़े गए कुल 17.01 लाख कर्मचारियों में से 8.22 लाख कर्मचारी, जो कुल पंजीकरण का लगभग 48.35 प्रतिशत है, 25 वर्ष तक की आयु वर्ग के हैं।

देश में बड़ी संख्या में पैदा हो रहे नए रोजगार के अवसर

यह आंकड़ा दिखाता है कि देश में बड़ी संख्या में नए रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। पेरोल डेटा का लिंग-आधार पर विश्लेषण दिखाता है कि दिसंबर में ईएसआईसी स्कीम में 3.46 लाख महिला कर्मचारियों का पंजीकरण हुआ है। इसके अलावा 73 ट्रांसजेंडर कर्मचारियों भी इस स्कीम से जुड़े हैं।

इस हफ्ते की शुरुआत में सांख्यिकी मंत्रालय द्वारा श्रम बल भागीदारी दर (एलएफपीआर) का डेटा जारी किया गया था। इसमें बताया गया था कि शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष और उससे अधिक के आयु वर्ग के लोगों में एलएफपीआर अक्टूबर-

दिसंबर 2024 में बढ़कर 50.4 प्रतिशत हो गया है, जो कि पिछले साल समान अवधि में 49.9 प्रतिशत पर था।

शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष या उससे अधिक के पुरुषों के लिए एलएफपीआर अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 75.4 प्रतिशत हो गया है, जो कि पिछले साल समान तिमाही में 74.1 प्रतिशत था। शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष या उससे अधिक के महिलाओं के लिए एलएफपीआर अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 25.2 प्रतिशत हो गया है,

रोजगार का एक और सूचकांक माना जाने वाला श्रमिक जनसंख्या अनुपात (डब्ल्यूपीआर) शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष या उससे अधिक के लोगों के लिए अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 47.2 प्रतिशत हो गया है, जो कि पिछले साल समान अवधि में 46.6 प्रतिशत था। शहरी क्षेत्रों में 15 वर्ष या उससे अधिक के पुरुषों के लिए डब्ल्यूपीआर अक्टूबर-दिसंबर 2024 में बढ़कर 70.9 प्रतिशत हो गया है।

आरबीआई ने एविओम की सलाहकार समिति को बरकरार रखा

मुंबई, 21 फरवरी (एजेंसियां)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने एविओम इंडिया हाउसिंग फाइनेंस प्राइवेट लिमिटेड की तीन सदस्यीय सलाहकार समिति को बनाए रखने का फैसला किया है। आरबीआई ने शुक्रवार को बताया कि यह निर्णय 20 फरवरी 2025 को राष्ट्रीय कंपनी कानून न्यायाधिकरण (एनसीएलटी), नई दिल्ली पीठ द्वारा दिवालियापन समाधान प्रक्रिया के लिए याचिका स्वीकार किए जाने के बाद लिया गया।

उल्लेखनीय है कि आरबीआई ने 30 जनवरी, 2025 को एविओम के प्रशासक राम कुमार को उनके कर्तव्यों के निर्वहन में सहायता के लिए इस तीन सदस्यीय समिति का गठन किया था। इस समिति के सदस्यों में भारतीय स्टेट बैंक के पूर्व मुख्य महाप्रबंधक परितोष त्रिपाठी, पूर्व बैंक ऑफ बड़ौदा के मुख्य महाप्रबंधक रजनीश शर्मा और पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के पूर्व प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) संजय गुप्ता शामिल हैं।

आरबीआई ने निर्णय लिया है कि यह समिति दिवालियापन और शोधन अक्षमता (वित्तीय सेवा प्रदाताओं की दिवालियापन और परिसमापन कार्यवाही और न्यायनिर्णयन प्राधिकरण को आवेदन) नियम, 2019 के नियम 5(सी) के तहत सलाहकार समिति के रूप में कार्य करती रहेगी। यह समिति कॉर्पोरेट दिवालियापन समाधान प्रक्रिया के दौरान एवीआईओएम के प्रशासन में प्रशासक को आवश्यक परामर्श देगी।

भारत ने ब्रिटेन के साथ सहयोग बढ़ाया

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। दूरसंचार सचिव नीरज मित्तल ने ब्रिटेन के विज्ञान, नवप्रवर्तन और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसआईटी) साथ बातचीत और अगली पीढ़ी के दूरसंचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में सहयोग के अवसरों का पता लगाने के लिए ब्रिटेन का दौरा किया। इससे इन अहम क्षेत्रों में भारत-ब्रिटेन संबंधों में और मजबूती आएगी।

दूरसंचार सचिव ने ब्रिटेन के वैज्ञानिक सलाहकार क्रिस जॉनसन और डीएसआईटी के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सलाहकार श्री डेव स्मिथ से मुलाकात की। बैठक में उभरती प्रौद्योगिकियों और 5जी, 6जी तथा डिजिटल ढांचे की सुरक्षा में उनके इस्तेमाल पर बातचीत हुई।

दूरसंचार विभाग ने आज यहां जारी बयान में यह जानकारी देते हुए

■ दूरसंचार सचिव ने की ब्रिटेन के वैज्ञानिक सलाहकार व डीएसआईटी के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सलाहकार से मुलाकात

कहा कि डॉ. मित्तल ने स्कॉटलैंड सरकार डिजिटल निदेशालय के निदेशक श्री ज्योफ हगिन्स के साथ भी मुलाकात की और दूरसंचार, दूरसंचार सुरक्षा तथा उभरती दूरसंचार प्रौद्योगिकियों द्वारा डिजिटल परिवर्तन में सहयोगात्मक प्रयासों पर विचार-विमर्श किया। उन्होंने ब्रिटेन के छह संघीय दूरसंचार केंद्रों (एफटीएच) में से एक का दौरा किया, जिसकी क्लाउड और वितरित कंप्यूटिंग में विशेषज्ञता है और केंद्र में 6जी वितरित क्लाउड, 6जी के लिए एआई, ग्रीन 6जी और उन्नत सेंसिंग तकनीकों पर अत्याधुनिक अनुसंधान होता है। इसके अलावा, दूरसंचार सचिव ने डिजिटल ट्विन्स में संभावित सहयोग, दूरसंचार सुरक्षा के लिए एआई, इथिकल एआई और एआई नवप्रवर्तन और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने पर चर्चा के लिए एलन ट्यूरिंग इंस्टीट्यूट की मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुश्री जीन इनेस से भी मुलाकात की। दूरसंचार सचिव ने स्ट्रैथक्लाइड विश्वविद्यालय में स्कॉटलैंड के 5जी केंद्र और ग्लासगो विश्वविद्यालय के जेम्स वाट स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग में 6जी अनुसंधान केंद्र का दौरा किया।

सार संक्षेप

विदेशी मुद्रा भंडार गिरकर 635.7 अरब डॉलर पर

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति में भारी गिरावट से 14 फरवरी को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार तीन सप्ताह बाद 2.54 अरब डॉलर लुढ़ककर 635.7 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार लगातार तीसरे सप्ताह चढ़ता हुआ 7.7 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 638.3 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 14 फरवरी को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 4.52 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 539.6 अरब डॉलर पर आ गई। वहीं, इस अवधि में स्वर्ण भंडार 1.94 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 74.2 अरब डॉलर हो गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 1.9 करोड़ डॉलर बढ़कर 17.9 अरब डॉलर हो गया। इस अवधि में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आरक्षित निधि 1.4 करोड़ डॉलर की तेजी के साथ 4.1 अरब डॉलर पर पहुंच गया।

निवेशकों के लिए डिपॉजिटरी ने किया सहयोग

मुंबई। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एन एस डी एल) और सेंट्रल डिपॉजिटरी सर्विसेज (इंडिया) लिमिटेड (सीएसडी एल) ने अपने अपने निवेशक ऐप में एकीकृत करने की घोषणा की है। इन दोनों ने आज यह घोषणा करते हुए कहा कि ये सुविधाएँ मार्केट इंफ्रास्ट्रक्चर इंस्टीट्यूशंस में महत्वपूर्ण वित्तीय डेटा तक निवेशकों की पहुंच को लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है। सेबी की पहल पर, इस ऐप को सेबी की अध्यक्ष माधबी पुरी बुच ने आधिकारिक तौर पर लॉन्च किया। एन एस डी एल और सी एस डी एल दोनों में डीमैट सिक्योरिटीज़ का एक समेकित दृश्य, जिससे कई प्लेटफ़ॉर्म पर लॉग इन करने की ज़रूरत खत्म हो जाती है। लेनदेन सह होल्डिंग स्टेटमेंट एक ही स्थान पर, पोर्टफोलियो प्रबंधन को सुव्यवस्थित करना और सुविधा को बढ़ाना। विभिन्न एक्सचेंजों और क्लियरिंग कॉरपोरेशन में ओपन पोज़िशन और मार्जिन विवरण की निगरानी करना।

महंगे बाजारों में शुरू हुआ भारतीय फलों का निर्यात

नई दिल्ली। मोदी सरकार के सपोर्ट के कारण भारत के फलों को पहली बार पश्चिम के अधिक फायदा देने वाले बाजार मिले हैं, जिससे किसानों की आय बढ़ाने में मदद मिली है। कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ मंत्रालय अधिकारी ने कहा कि महंगे फलों से लेकर पारंपरिक खाद्य पदार्थों तक की यह पहली खेप इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे आत्मनिर्भर भारत के लिए मोदी सरकार का दृष्टिकोण भारतीय किसानों के लिए नए अवसर पैदा कर रहा है। उन्होंने बताया कि कृषि निर्यात के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि भारत ने समुद्र के रास्ते ऑस्ट्रेलिया में प्रीमियम सांगोला और भगवा अनार की पहली खेप सफलतापूर्वक भेजी है।

20 समूह की कंपनियों के लुढ़कने से टूटा बाजार

■ सेंसेक्स 0.56 प्रतिशत का गोता लगाकर 75,311.06 अंक पर

■ निफ्टी 0.51 प्रतिशत कमजोर रहकर 22,795.90 अंक पर बंद

मुंबई, 21 फरवरी (एजेंसियां)। अमेरिका की संभावित जवाबी टैरिफ और विदेशी निवेशकों की लगातार जारी बिकवाली को लेकर बढ़ती चिंताओं के कारण आज शेयर बाजार में चौथे दिन भी गिरावट का सिलसिला जारी रहा।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 424.90 अंक अर्थात 0.56 प्रतिशत का गोता लगाकर 75,311.06 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 117.25 अंक यानी 0.51 प्रतिशत कमजोर रहकर 22,795.90 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 1.18 प्रतिशत लुढ़ककर 40,374.02 अंक और स्मॉलकैप 0.43 प्रतिशत उतरकर 45,856.00 अंक पर आ गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4060 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2246 में बिकवाली जबकि 1701 में लिवाली हुई वहीं 113 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी 37 कंपनियों में गिरावट जबकि 13 में तेजी रही।

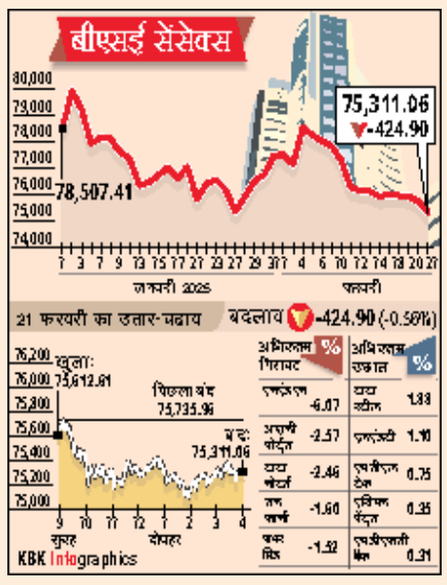

बीएसई में धातु की 1.23 प्रतिशत की तेजी को छोड़कर अन्य 20 समूहों में गिरावट का रुख रहा। इससे ऑटो 2.60, कमोडिटीज 0.01, सीडी 1.49, ऊर्जा

0.86, एफएमसीजी 0.51, वित्तीय सेवाएं 0.45, हेल्थकेयर 1.60, इंडस्ट्रियल्स 0.11, आईटी 0.71, दूरसंचार 1.19, यूटिलिटीज 0.21, बैंकिंग 0.82, कैपिटल गुड्स 0.06, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.87, तेल एवं गैस 1.42, पावर 0.31, रियल्टी 1.33, टेक 0.54, सर्विसेज 0.70 और फोकस्ड आईटी समूह के शेयर 0.84 प्रतिशत लुढ़क गया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मिलाजुला रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.04, जापान का निक्केई 0.26, हांगकांग का हैंगसेंग 3.99 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.85 प्रतिशत चढ़ गया जबकि जर्मनी के डैक्स में 0.06 प्रतिशत की गिरावट रही।

वहीं, बिकवाली होने से यह लगातार गिरता हुआ दोपहर बाद 75,112.41 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। अंत में पिछले दिवस के 75,735.96 अंक के मुकाबले 0.56 प्रतिशत की गिरावट लेकर 75,311.06 अंक पर बंद हुआ।

इस दौरान सेंसेक्स की जिन कंपनियों ने नुकसान उठाया उनमें महिंद्रा एंड महिंद्रा 6.07, अडानी पोर्ट्स 2.57, टाटा मोटर्स 2.46, सन फार्मा 1.60, पावरग्रिड 1.52, जोमैटो 1.48, आईसीआईसीआई बैंक 1.46, एसबीआई 1.11, अल्ट्रासिम्को 1.02, कोटक बैंक 0.99, मारुति 0.94, एक्सिस बैंक 0.83, टेक महिंद्रा 0.58, इंफोसिस 0.46, रिलायंस 0.43, इंडसइंड बैंक 0.43, भारती एयरटेल 0.41, टाइटन 0.39, हिंदुस्तान यूनिलीवर 0.32, आईटीसी 0.30 और बजाज फाइनेंस 0.10 प्रतिशत शामिल है।

वहीं, टाटा स्टील 1.88, एलटी 1.10, एचसीएल टेक 0.75, एशियन पेंट 0.35, एचडीएफसी बैंक 0.31, एनटीपीसी 0.25, टीसीएस 0.21, नेस्ले इंडिया 0.14 और बजाज फिनसर्व के शेयर 0.03 प्रतिशत लाभ में रहे।

दो वर्षों में लगभग एक हजार आईपीओ आने के अनुमान

मुंबई, 21 फरवरी (एजेंसियां)। आर्थिक गतिविधियों में तेजी, बढ़ती खपत और पूंजीबाजार से कंपनियों के अधिकाधिक पूंजी जुटाने की चाहत से अगले दो वर्षों में लगभग एक हजार प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ)आने का अनुमान है। सार्वजनिक पेशकशों की यह आमद भारत के पूंजी बाजारों में मजबूत वृद्धि को दर्शाती है और रोमांचक निवेश अवसर प्रदान करती है।

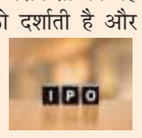

निवेशय इन्वेस्टमेंट एडवाइजर्स (एक स्मॉलकेस मैनेजर) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय बाजारों में अगले दो वर्षों में विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 1,000 आईपीओ आएंगे। इसी तरह से एसोसिएशन ऑफ इन्वेस्टमेंट बैंकर्स ऑफ इंडिया (एआईबीआई) ने अगले दो वित्त वर्षों में 1,000 आईपीओ का अनुमान लगाया है। आईपीओ मूल्यांकन लिस्टिंग के बाद के प्रदर्शन को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कंपनियां तेजी के दौर में अधिक मूल्यांकन प्राप्त करती हैं, जिससे अक्सर मूल्य निर्धारण में देरी होती है। मंदी के दौर में आईपीओ की कीमत रूढ़िवादी तरीके से तय की जाती है, जिससे प्रवेश के बेहतर अवसर बनते हैं। प्रमुख आईपीओ में रिलायंस जियो, एलजी, एथर एनर्जी, जेप्टो, जेएसडब्ल्यू सीमेंट, एनएसडीएल और बोट शामिल हैं। विश्लेषकों का कहना है कि अरबपति मुकेश अंबानी की दूरसंचार क्षेत्र की दिग्गज कंपनी रिलायंस जियो का बहुप्रतीक्षित आईपीओ आने वाला है। कंपनी का मूल्याकंन 8 लाख करोड़ रुपए होने की उम्मीद है। इसके अतिरिक्त एलजी इलेक्ट्रॉनिक्स इंडिया पूंजी बाजार से 15,000 करोड़ कंपनी एथर एनर्जी आईपीओ से 4,500 करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य बना रही है। क्विक कॉमर्स स्टार्टअप जेप्टो भी पूंजीबाजार से एक अरब डॉलर से अधिक की पूंजी जुटाने की तैयारी में है।

खाद्य तेलों में टिकाव, मसूर दाल महंगी व अन्य जिंसों के भाव स्थिर

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर मांग सुस्त रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा जबकि मसूर दाल महंगी हो गई वहीं अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में मार्च का पाम ऑयल वायदा 33 रिंगिट उतरकर 4849 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। वहीं, मार्च का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.23 सेंट की गिरावट के साथ 47.03 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। **गुड़-चीनी :** मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन के बाजार में मसूर दाल में 50 रुपये प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर अन्य दालों में टिकाव रहा। चना, दाल चना, मसूर दाल, और अरहर दाल के भाव पिछले दिवस के स्तर पर पड़े रहे। **अनाज :** अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे।

सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे : **दाल-दलहन :** चना 6000-6100, दाल चना 7000-7100, मसूर काली 7350-7450, मूंग दाल 9400-9500, उड़द दाल 9000-9100, अरहर दाल 7750-7850 रुपए प्रति क्विंटल रहे।

भारत का पांचवां सबसे बड़ा निवेशक जापान : गोयल

नई दिल्ली, 21 फरवरी (एजेंसियां)। जापान, भारत का एक मुख्य साझेदार है और जापान की ओर से 2000 से लेकर 2024 के बीच 43 अरब डॉलर से अधिक का निवेश किया गया है, जो इसे भारत का पांचवां सबसे बड़ा विदेशी निवेशक बनाता है। यह बयान केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को दिया। गोयल ने आगे कहा कि भारत-जापान की साझेदारी भाईचारे, लोकतंत्र, संस्कृति और आर्थिक सहयोग पर आधारित है, जो सुशी और मसालों के अनूठे मिश्रण को दर्शाती है, जो विशिष्ट होते हुए भी एक-दूसरे के पूरक हैं।

भारत-जापान इकोनॉमी एंड इन्वेस्टमेंट फोरम को संबोधित करते हुए, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जापान के 'सात भाग्यशाली देवताओं' की उत्पत्ति भारतीय परंपरा में हुई है, जो दोनों देशों के बीच गहरे सांस्कृतिक संबंधों को दर्शाता है। केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि 2011 में हुए कॉम्प्रिहेंसिव इकोनॉमिक पार्टनरशिप एग्रीमेंट (सीईपीए) ने दोनों के द्विपक्षीय व्यापार को आगे बढ़ाने में

■ 43 अरब डॉलर से ज्यादा का किया निवेश

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। करीब 1,400 से अधिक जापानी कंपनियां भारत में ऑपरेट कर रही हैं और आठ राज्यों में 11 इंडस्ट्रीयल टाउनशिप जापानी एंटरप्राइजेज की मेजबानी कर रही हैं। उन्होंने आगे बताया कि मुंबई-अहमदाबाद हाई-स्पीड रेल और दिल्ली, अहमदाबाद, बेंगलुरु और चेन्नई के मेट्रो सिस्टम में जापान पार्टनर है जो भारत के विकास में जापान की अहम भूमिका को दिखाता है। भारत और जापान दोनों मिलकर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी ब्रांड्स बना रहे हैं।

सस्ते स्टील आयात पर एंटी-डंपिंग ड्यूटी लगा सकती है सरकार : टाटा स्टील

मुंबई। टाटा स्टील के सीईओ और मैनेजिंग डायरेक्टर (एमडी) टीवी नरेंद्रन ने कहा कि सरकार स्टील इंडस्ट्री के एंटी-डंपिंग ड्यूटी लगाने के अनुरोध पर बहुत गंभीरता से विचार कर रही है, क्योंकि सस्ते चीनी आयात भारतीय बाजार में बाढ़ की तरह आ रहे हैं और अमेरिका में शुल्कों में संभावित वृद्धि के कारण स्थिति और भी गंभीर हो गई है।

नरेंद्रन ने कहा, उन्हें विश्वास है कि इंडस्ट्री से विस्तृत स्पष्टीकरण लेने के बाद सरकार जल्द ही इस मुद्दे को लेकर अपडेट जारी करेगी। भारतीय स्टील एसोसिएशन (आईएसए) ने डंपिंग को लेकर पहले ही डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ ट्रेड रेमेडी (डीजीटीआर) के पास एक आवेदन दिया हुआ है, जो कि अंडर रिव्यू है।

पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि. के लिए गिरिराज चाचा द्वारा मेसर्स डी.बी. कार्प लिमिटेड फौजदार गैरेज पवारखेड़ा इटारसी रोड नर्मदापुरम से मुद्रित एवं 45, वार्ड नं. 6, कसेरा मुहल्ला नर्मदापुरम म.प्र. से प्रकाशित, संपादक: **पलाश सुरजन,** फोन 422297। ई-मेल deshbandhuhbd1@gmail.com समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।